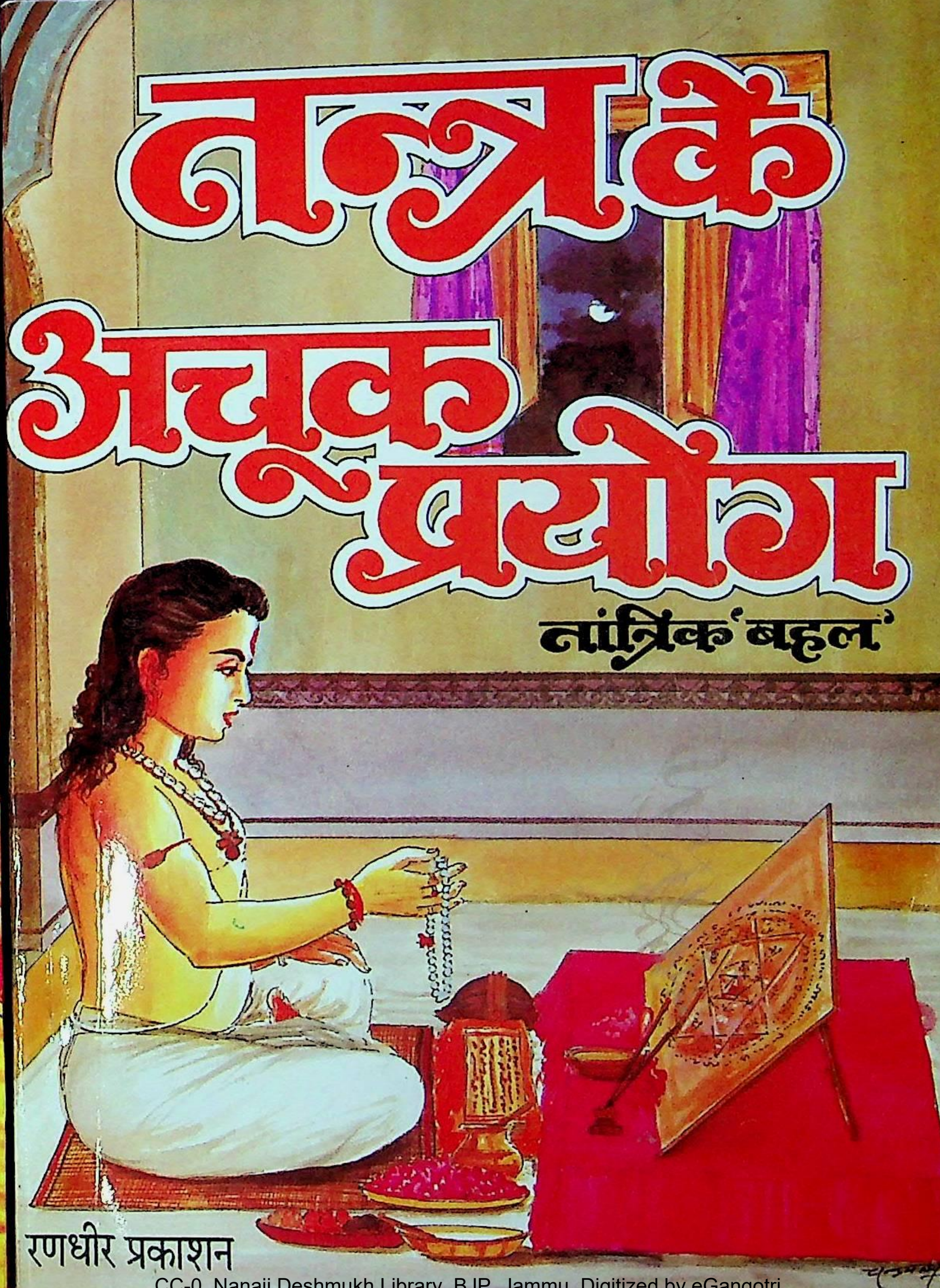
तन्त्र के अचूक प्रयोग

तांत्रिक 'बहल'



रणधीर प्रकाशन

तंत्र के अचूक प्रयोग

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र द्वारा इच्छित फल की प्राप्ति के अचूक प्रयोग प्रस्तुत हैं। सफलता पाठकों, साधकों की अटूट श्रद्धा, विश्वास और एकाग्रता पर निर्भर है। बतलाये गए नियमों का कठोरता के साथ पालन भी अत्यन्त आवश्यक है। इसके अभाव में निश्चित सफलता का कोई भी आश्वासन हमारा नहीं है।

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र एक मनोवैज्ञानिक, पराविज्ञान की विद्या है। प्रभाव इसी कारण होता है। यह फल प्राप्ति साधक की शुद्ध व्यक्तिगत, कार्यगत, मनःदशा पर निर्भर है।

आजमाए हुए प्रयोग हैं। सैकड़ों साधक लाभ उठा चुके हैं और आज भी उठा रहे हैं। आप भी अगर चाहें तो इसके भागीदार बन सकते हैं।

आपके जाने पहचाने 'तांत्रिक बहल' की एक और उत्कृष्ट पुस्तक, जो आप सबके लिए है।

रणधीर प्रकाशन का उत्कृष्ट प्रकाशन

॥ श्री गुरुवे नमः ॥

तन्त्र के अचूक प्रयोग

(जीवन के सभी विषयों पर सुगम प्रयोगों, साधनाओं और टोटकों सहित)

लेखक

तान्त्रिक बहल

मूल्य : 85-00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

जम्मू विक्रेता : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

संस्करण : तृतीय, सन्-2003

मुद्रक : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

TANTRA KE ACHUK PRAYOG

Written By : Tantrik Bahal
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

अनुक्रमणिका

मुझे कुछ कहना है १७

मन्त्र का विवेचन और प्रयोग २३

१. मंत्रों का जन्म २३

२. मन्त्रों में बीज एवं नाद की उपयोगिता २४

३. मन्त्रों के भेद २५

४. मन्त्रों में अन्तर २५

५. गुरु की अनिवार्यता २६

६. अन्तश्चेतना का महत्व २७

७. जाप में माला व आसन २९

रोग निवारण प्रयोग ३२

१. सर्वांग पीड़ा हरण मन्त्र ३३

२. रोग नाशक मन्त्र ३३

३. सर्व रोग नाशक टोटका ३३

४. खोई हुई वस्तु या प्राणी की प्राप्ति ३४

५. फोड़े-फुन्सी निवारणार्थ प्रयोग ३५

६. अनिष्ट निवारण ३५

७. मन्द बुद्धि बालक ३६

८. परीक्षा में सफलता हेतु ३६

९. कार्य से भय ३७

१०. लक्ष्मी प्राप्ति ३७

११. ऋण ३८
१२. धन वृद्धि ३९
१३. धन लाभ ३९
१४. बिक्री वृद्धि ३९
१५. नवनिर्मित मकान ४०
१६. अचानक धन प्राप्ति ४१
१७. विघ्न निवारण ४२
१८. ग्राहकों की संख्या ४२
१९. सर्व कार्य सिद्धि ४३
२०. नजर व टोक ४४
२१. लक्ष्मी हेतु प्रयोग ४४
२२. व्यापार में वृद्धि ४५
२३. अचल सम्पत्ति ४५
२४. बचत हेतु ४६
२५. बरकत हेतु ४६
२६. पैतृक सम्पत्ति हेतु ४७
२७. लाटरी द्वारा धन प्राप्ति ४७
२८. सफलता प्राप्ति हेतु ४८
२९. गमन हेतु ४८
३०. सिद्ध भाग्योदय प्रयोग ४८
३१. तांत्रिक प्रयोगों से मुक्ति ४९
३२. मुकदमा हेतु ४९
३३. धन प्राप्ति प्रयोग ५०
३४. रोग मुक्ति के लिए ५०
३५. कार्य सफलता ५१

३६. सम्पत्ति हेतु ५१
३७. प्रतिद्वन्द्वी ५१
३८. रोग निवारण ५२
३९. ज्वर नाशक ५२
४०. नजर ५३
४१. मोटापा ५४
४२. भूख ५४
४३. आलस्य ५५
४४. अतिसार ५५
४५. पेट दर्द ५६
४६. आंत ५६
४७. खांसी ५६
४८. सिर दर्द ५६
४९. पथरी ५७
५०. संग्रहणी ५७
५१. नींद न आना ५७
५२. फील पाँव ५७
५३. दाँत पीड़ा ५८
५४. बवासीर ५८
५५. मिरगी ५९
५६. पागलपन-उन्माद ५९
५७. ब्लड प्रेशर ५९
५८. नेत्र दोष ६०
५९. लम्बे घने बाल ६०
६०. गंजापन ६०

६१. थकावट दूर करें ६
६२. फोड़े-फुन्सी ६
६३. मासिक धर्म ६
६४. पसली, कमर दर्द ६
६५. चक्कर, दौरे ६
६६. हकलाना ६
६७. मस्सा ६
७०. मुंहासे ६
७१. सफेद दाग ६
७२. कर्ण पीड़ा ६
७३. नेत्र पीड़ा ६५
७४. हिस्टीरिया ६५
७५. दस्त ६६
७६. व्यापार में सफलता ६६
७७. साझेदारी के लिए ६७
७८. स्थायी कर्मचारी ६७
७९. आलस्य ६८
८०. सफलता ६८
८१. असफलता ६९
८२. कार्य कुशलता की कमी ६९
८३. बेरोजगारी ७०
८४. कमजोरी-बीमारी ७०
८५. आलस्य ७१
८६. सर्वजन वशीकरण ७१

वशीकरण प्रयोग ७३
१. वशीकरण प्रयोग ७६
२. टोटके ७६
३. पुनः सम्बन्ध सुधारने हेतु ७८
४. आकर्षण हेतु ७९
५. क्रय विक्रय में लाभ हेतु ८०
६. सिद्धि दाता यन्त्र ८१
७. वशीकरण ८१
८. पीर का कलमा ८२
९. वशीकरण मन्त्र ८२
१०. कार्य सिद्धि हेतु ८२
११. ग्राहक वृद्धि हेतु ८३
१२. नया मकान बनने पर ८३
१३. धन लाभ ८४
१४. लक्ष्मी प्राप्ति ८४
१५. व्यापार ८५
१६. घाव भरने का मन्त्र ८५
१७. वशीकरण यन्त्र ८५
१८. गर्भ धारण हेतु ८६
१९. गर्भपात ८७
२०. पुत्र प्राप्ति ८७
२१. कष्ट रहित प्रसव ८८
२२. प्रसव पीड़ा से मुक्ति ९०
२३. शीघ्र सन्तान प्राप्ति ९०
२४. स्वस्थ सन्तान ९१

२५. अधिक वमन ९
२६. दुग्धपान ९
२७. बीमार रहने पर ९
२८. अधिक रोने पर ९
२९. पेट के कीड़े ९
३०. भूत बाधा ९
३१. देह रक्षा ९
३२. भूत-प्रेत दिखाई देने पर ९
३३. स्वप्न में भूत १०
३४. प्रेत बाधा से बचाने का टोटका १०
३५. घर में प्रेत १०
३६. आत्मा के सताने पर १०
३७. प्रेत मुक्ति १०
३८. भूत-प्रेत टोटके १०
३९. प्रेत बाधा के तीन लक्षण १०
४०. पीर का हाजरत १०
४१. गोमती चक्र १०
४२. भूत-प्रेत पीड़ा शान्ति मन्त्र १०
४३. बैर कराने का मन्त्र १०
४४. स्त्री वशीकरण मन्त्र १०
४५. कलह कराने का मन्त्र १०
४६. आकर्षक प्रयोग ११
४७. मित्र आकर्षण मन्त्र ११
४८. सभा आकर्षण मन्त्र ११
४९. पुरुष आकर्षण ११

५०. इक्कीस का यन्त्र १११
५१. वशीकरण सुपारी ११२
५२. स्त्री वशीकरण ११२
५३. पति वशीकरण ११२
५४. स्तम्भन मन्त्र ११३
५५. अग्नि स्तम्भन मन्त्र ११३
५६. रक्षा यन्त्र ११४
५७. अग्नि बुझाने का मन्त्र ११४
५८. आधा शीशी का मन्त्र ११४
५९. मुक्ति ११५
६०. कलह योग ११५
६१. पति वशीकरण ११६
६२. मनवांछित फल ११७
६३. शत्रु नाश हेतु ११७
६४. तांत्रिक प्रयोग हेतु ११७
६५. धन प्राप्त करना ११७
६६. कुत्ते का विष झाड़ने का मन्त्र ११८
६७. पन्द्रह का मन्त्र ११८
६८. वशीकरण १२०
६९. वशीकरण १२१
७०. सर्व वशीकरण १२२
७१. प्रेमिका वशीकरण १२३
७२. वशीकरण तन्त्र १२४
७३. बदहजमी १२५
७४. पसली दर्द १२५

७५. दाद, खाज, खुजली १२
७६. सिर दर्द १२
७७. रोग मुक्ति १२
७८. कंपकपी १२
७९. रात का ज्वर १२
८०. वायु विकार १२
८१. आधा सिर दर्द १२
८२. हृदय विकार १२
८३. मधुमेह १३
८४. प्रसव कष्ट छूटने का यन्त्र १३
८५. सर्व विष नाशक यन्त्र १३
८६. ज्वर नाशक यन्त्र १३
८७. सर्प नाशक यन्त्र १३
८८. आधा शीशी का यन्त्र १३
८९. स्त्री कष्ट निवारण १३
९०. पराक्रमी १३
९१. स्त्री वशीकरण १३
९२. सर्वकष्ट निवारण इसलामी यन्त्र १३
९३. कलमों के प्रकार १३
कुछ प्रमुख मन्त्र १३
१. वशीकरण १३
२. दुश्मन विनाशक यंत्र १३
३. बैरी मारण मंत्र १३
४. सर्व कार्य सिद्धि १३
५. मोहन मंत्र १३

६. नारी मोहन यंत्र १३७
७. वशीकरण हेतु १३७
८. उच्चाटन प्रयोग—१, ... १३८
९. उच्चाटन प्रयोग—२ .... १३८
१०. बवासीर निवारण का मंत्र १३९
११. प्रेत बाधा १३९
१२. भूत बाधा से रक्षा हेतु १४०
१३. भूत दिखाई देने पर १४०
१४. प्रेत १४१
१५. हनुमान सिद्धि १४२
१६. दु:ख यंत्र १४३
१७. अभिलाषा पूर्ण यंत्र १४३
१८. वापसी मंत्र १४३
१९. सिद्धि प्राप्ति यंत्र १४४
२०. आपदा दूर यंत्र १४४
२१. वस्तु वापस होने का यंत्र १४५
२२. सम्मान होने का यंत्र १४५
२३. मोहिनी यंत्र १४५
२४. भाग्यशाली यंत्र १४६
२५. रोने वाले बच्चे के गले में बाँधने का यंत्र १४६
२६. वाचा सिद्ध करने का यंत्र १४६
२७. व्यापार में लाभ होने का यंत्र १४७
२८. बुद्धि वृद्धि यंत्र १४७
२९. देवी देवता प्रसन्न करने का यंत्र १४८
३०. आकर्षण यंत्र १४८

३१. कालिका का मंत्र १
३२. भैरव का मंत्र १
३३. स्तम्भन यंत्र १
३४. राज मोहन यंत्र १
३५. मृत्युञ्जय यंत्र १
३६. पिशाच यंत्र १
३७. उच्छिष्ट पिशाचकं यंत्र.. १
३८. दमन यंत्र १
३९. अर्शरोग नाशक.. १
४०. वायु गोला नाशक.. १
४१. शिशुओं के भूत नाशक यंत्र.. १
४२. स्वप्न में भूत दर्शन.. १
४३. घर छोड़े व्यक्ति को वापसे आने हेतु १
४४. बुरी नजर का यन्त्र १
४५. व्यापार वृद्धि यन्त्र.. १
४६. पिरामिड यन्त्र.. १
४७. संकट नाशक यन्त्र १
४८. तिजारी ज्वर नाशक.. १
४९. स्मरण शक्ति हेतु.. १
५०. त्वरित मनोकामना पूर्ति यन्त्र १
५१. सड़क दुर्घटना निवारण यन्त्र १
५२. सर्वांगीण उन्नति हेतु यन्त्र १
श्री दुर्गा सप्तशती के कुछ सिद्ध सम्पुट मंत्र १
१. सामूहिक कल्याण के लिए १
२. विश्व कल्याणार्थ व भय विनाशार्थ १

३. विश्व रक्षार्थ १६१
४. विश्व अभ्युदयार्थ १६२
५. विश्वव्यापी विपत्ति विनाशनार्थ १६२
६. विश्व के पाप-ताप निवारणार्थ १६२
७. विपत्तिनाश हेतु १६२
८. विपत्तिनाश व शुभ प्राप्ति जन्य १६२
शियों के मांत्रिक प्रयोग १६४
१. पुत्र प्राप्ति मन्त्र व तन्त्र १६५
२. पुत्र रक्षक यन्त्र १६६
३. मुख स्तम्भन यन्त्र (१) १६७
४. मुख स्तम्भन यन्त्र (२) १६७
५. दुर्भाग्यवर्जक यन्त्र १६७
६. भूत प्रेत नाशक यन्त्र १६८
७. मोहिनी यन्त्र १६९
८. शीतला का यन्त्र १६९
९. कान दर्द का यन्त्र १६९
१०. घरेलू झगड़े नाशक यन्त्र १७०
ाकाशचारी परियों के कारनामें १७१
न्त्र मन्त्र की दुर्लभ अचूक साधनायें १७५
१. माँ काली साधना १७६
२. अनंग रती साधना १७८
३. छाया पुरुष साधना १८०
त में १८२

तांत्रिक बहल की अन्य जनोपयोगी कृतियाँ

- सुगम तांत्रिक क्रियाएँ
- आचार्य चाणक्य विरचित तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र
- रत्न और रुद्राक्ष
- सुखी जीवन के लिए टोटके और मन्त्र
- शरीर लक्षण विज्ञान
- लाटरी ज्योतिष
- राशिफल और लाटरी
- पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ
- वनस्पति तन्त्र
- चमत्कारी मन्त्र साधना
- वेदों में तन्त्र
- सौन्दर्य लहरी (यन्त्र एवं अनुवाद सहित)
- हस्तरेखाएँ देखना कैसे सीखें
- हस्तरेखाओं के गूढ़ रहस्य
- सामुद्रिक ज्ञान और पंचांगुली साधना
- मन्त्र साधना कैसे करें
- तन्त्र साधना कैसे करें
- यन्त्र साधना कैसे करें
- पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें
- गोरख तन्त्र
- मुस्लिम तन्त्र
- नाग और नागमणि
- तन्त्र मन्त्र द्वारा रोग निवारण
- हिप्नाटिज्म से रोगोपचार और त्राटक साधना
- गायत्री साधना (गायत्री पर एक सम्पूर्ण ग्रन्थ)

मुझे कुछ कहना है

भला ऐसा कौन व्यक्ति है, जो अपने जीवन में कार्य कुशलता अथवा भरपूर सफलता नहीं चाहता है? यह सत्य है कि विश्व का प्रत्येक मनुष्य सिर्फ सफलता, कुशलता, उन्नति प्राप्त करने के लिए दिन-रात भाग-दौड़ कर रहा है। अपने कार्य में कुशलता अथवा सफलता प्राप्त करने के लिए आज मानव क्या नहीं करता? कैसे-कैसे पापड़ नहीं बेलता है। मनुष्य के इन प्रयत्नों में सात्विकता होनी चाहिए। उसे अपने प्रयत्नों में ईमानदारी रखनी चाहिए।

एक बार एक राजा ने एक तांत्रिक से एक दिन महल में आने का निवेदन किया। इस पर तांत्रिक ने कहा, तुम्हारे महल में बड़ी बदबू आती है। मैं वहाँ न आ सकूँगा। यह सुनकर राजा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। कुछ समय बीतने पर तांत्रिक राजा के साथ घूमते-घूमते एक ऐसी बस्ती में पहुँच गया जहाँ लोग कच्चा चमड़ा पका-सुखा रहे थे। नन्हे-मुन्ने बच्चे हँस खेल रहे थे। महिलाएँ वहीं भोजन पका रही थीं। थोड़ी देर बाद राजा ने कहा, महाराज! मेरे महल से तो आपको बदबू आती हुई लगती है, पर यहाँ तो वास्तव में ही बड़ी बदबू है, फिर भी आप यहाँ बड़ी प्रसन्न मुद्रा में खड़े हैं। पता नहीं ये लोग इस बदबू में कैसे जी लेते हैं?

राजन, इससे ज्यादा बदबू तो तुम्हारे महल में आती है। विषय-भोगों में लिप्त रहते-रहते महल में जैसे आप अभ्यस्त हो गए हैं,

वैसे ही बस्ती में रहने वाले चमड़े की बदबू के अभ्यस्त हो गए हैं। सांसारिक विषय इस बदबू से भी ज्यादा घिनौने हुआ करते हैं, इस कारण मैं तुम्हारे महल में नहीं आता। तांत्रिक ने उत्तर दिया। यहाँ मेरे कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि हमें सद् प्रयत्नों से अपनी कुशलता और संपत्ति बढ़ानी चाहिए।

आज के युग में व्यापारी व्यापार में, प्रेमी प्यार में, साहसी अपने अभिमान में, नौकरी करने वाला उन्नति में, विद्यार्थी परीक्षा में कहने का उद्देश्य यह है कि सब के सब दिन-रात अपने उद्देश्य में सफलता, कार्यों में कुशलता प्राप्त करने के लिए लगे हैं। सारे ही अत्यन्त परिश्रम करते हैं, खून-पसीना बहाते हैं, प्रत्येक पल प्रयत्नशील रहते हैं। इतना सब कुछ करने के बाद भी प्रायः सफलता उनके हाथ नहीं लगती, असफल होने पर हृदय को एक गहरा आघात लगता है। अनेक लोग तो असफलता के कारण जीवन से अत्यन्त निराश हो जाया करते हैं और आत्महत्या जैसे वीभत्स कार्य कर बैठते हैं। यह एकदम गलत है।

एक बार राम वन में घूमते हुए पम्पा सरोवर के किनारे आए और अपने हथियार तीर-धनुष को सरोवर की धरती पर में गाड़ कर जल पीने के लिए सरोवर में उतरे। जल पीकर ऊपर आकर देखा तो धनुष के नीचे एक मेंढक बिंधकर घायल पड़ा है। भगवान ने उसकी करुणा अवस्था देखकर दुःखी स्वर में कहा, तुमने आवाज क्यों नहीं की? अगर तुम चिल्लाते तो मैं जान जाता कि यहाँ तुम हो। तब तुम्हारी यह दशा कदापि न होती। मेंढक बोला, भगवान्! मैं जब भी संकट में पड़ जाता हूँ तब हे राम, रक्षा करो कहकर पुकारता हूँ। अब जब राम ही घात कर रहे हैं तब और किसे पुकारूँ? प्रभु आप ही

लाएँ ? यह कहकर अत्यन्त कराहने लगा।

यह जीवन प्रभु की देन है, इसे घायल करना सर्वथा अनुचित पाप है। नौकरी में, प्रेम में, व्यापार में, परीक्षा में, तकनीकी कार्यों भरपूर कुशलता और सफलता न पाने के कारण अनेक लोग ाश हो जाते हैं। जीवन में कार्य सफलता, उद्यम में कुशलता येक मनुष्य को प्रसन्न रखती है। वह व्यक्ति स्वयं को बड़ा ही ग्यवान समझता है तथा शांतिपूर्ण गरिमामय जीवन व्यतीत करता ।

कार्य में सफलता किसी भी कार्य को बनाने के लिए तांत्रिक योगों का संग्रह है, जिनका एकीकरण सफलता अथवा असफलता, शलता या अकुशलता का सूचक होता है। इस प्रकार यह शुद्ध वनात्मक स्तर पर किए गए अनेक प्रयोग हैं।

एक बार सन्त कबीर ने गुरु नानक की परीक्षा लेने के लिए पने शिष्य के द्वारा एक रुपया भिजवाया। साथ ही यह संदेश भी जा कि हे महाराज! एक रुपया से एक ऐसी औषधि बना कर खाइए जिससे संसार के रोगी स्वस्थ हो जाएँ। गुरु नानक देव सोच डूब गए। इस एक रुपए से संसार के रोगियों की चिकित्सा! इतने गी तो तभी जुटाऊँ जब औषधि की खोज कर लूँ। सन्त कबीर भी ोई मामूली तो है नहीं। अवश्य ही इसमें कोई गहरा सत्य छिपा है। ोई गूढ़ रहस्य है। गुरु जी ने बहुत विचार किया एक-एक वस्तु पर पना ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने प्रकृति के पन्ने एक-एक करके लटने शुरू कर दिए। गुरु जी ने उस एक रुपए में कुछ पैसों की ड़ी बूटियाँ खरीदीं। कुछ पैसे का चंदन खरीदा, कुछ पैसे का ुग्गल खरीदा, कुछ का देशी कपूर खरीदा। कुछ अन्न-जौ, मखाना

आदि। कुछ पैसों का शुद्ध घी और ताजा गुड़ भी खरीदा। सामग्री को मिलाकर पुड़ा बंधवाया और सन्त कबीर के पास भिज दिया। यह आरोग्यदाता 'हवन सामग्री' बन गई थी। गुरु जी कबीर के नाम यह सन्देश भी भिजवाया। धन्य हैं हमारे ऋषि जिन्होंने 'हवन-यज्ञ' जैसा विज्ञान इस संसार को दिया।

यह बात दूसरी है, आज के लोग इसका प्रयोग नहीं करते आज का विज्ञान भी हवन सामग्री के इस गुण को जानता है। सत्य मानता है। यह ठीक है जब आप स्वस्थ रहेंगे तब आप क विशेष उत्साह और लगन से करेंगे, उत्साह के उपरान्त आप सर्वप्र आप कार्य करने के "गुर" सीखेंगे और उस कार्य प्रणाली अपनाएँगे, जिस पर चलकर अन्य लोग सफलता, उन्नति और दक्ष प्राप्त कर चुके हैं। इस दिशा में किए गए समस्त प्रयास आप भावनाओं या लाभ के कारण होते हैं। अपना मस्तिष्क लगाएँ आप यह सोचेंगे किस प्रकार अथवा इस प्रकार करना चाहिए भरपूर सफलता प्राप्त हो सके। इस सत्य से कोई इनकार नहीं क सकता है कि सूझ-बूझ, दक्षता और प्रयास ही किसी भी क्षेत्र सफलता की गारण्टी हैं।

सूझ-बूझ का सीधा सम्बन्ध बुद्धि से है, मस्तिष्क से अगर आपकी बुद्धि आपका मस्तिष्क सूझ-बूझ वाला है, तो कार्य में अवश्य सफलता है, जो आपको अपने आप मिलेगी अन्य कार्य सफलता या कार्य कुशलता की निश्चित गारण्टी देने वा सूझ-बूझ की उत्पत्ति बुद्धि से है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र के प्रयोग अथ छोटे-छोटे टोकटे आपकी बुद्धि पर सीधा प्रभाव डालते हैं।

यह वास्तव में आपकी बुद्धि प्रखर करने के लिए आप

त-बूझ को अधिक उपयोगी और प्रभावशाली तथा सफल बनाने लिए मानसिक भोजन का कार्य करते हैं। आप अपने कार्यों में श्य सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यह एक मानी हुई बात है। ी तथ्य और सत्य के आधार पर यह तन्त्र के अचूक प्रयोग प्रस्तुत इसका अपना निश्चित मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। इनके द्वारा फलता का मार्ग प्रशस्त होता है। सभी प्रकार की सफलताओं की प्ति के लिए यह संकलन ''तन्त्र के अचूक प्रयोग'' प्रस्तुत है।

तन्त्र-मन्त्र विज्ञान के इतने विशद् भण्डार की सम्पूर्णतया नकारी होना किसी भी मनुष्य की बुद्धि के लिए कठिन है। मुझ से साधारण साधक के लिए तो वह और भी कठिन है, पर सार्वजनिक योग के लिए जितना कुछ ज्ञान मैं उपस्थित कर सकता था प्रस्तुत र दिया है। आशा है कि तन्त्र-मन्त्र विज्ञान का वास्तविक अर्थ नने के उत्सुक जिज्ञासुओं के लिए यह पुस्तक काफी सीमा तक योगी सिद्ध होगी। अगर ऐसा होता है तो मैं अपना प्रयत्न सफल मूँगा।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि मेरी यह तक तन्त्र जगत में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी। पुस्तक का ल्य प्रकाशन से नहीं लोकप्रियता से होता है। कोई बौद्ध भिक्षु एक स्तिका छपवाना चाहता था। उसने जनता से इसके लिए चन्दा कत्रित किया है। उसी समय भूकम्प आया और भीषण विनाश कर या। परोपकार को ही धर्म समझने वाले उस भिक्षु ने सारा संग्रहीत न जनता की सेवा में लगा दिया। परिणामतः पुस्तक न छप सकी। छ दिनों के बाद भिक्षु ने थोड़ा-थोड़ा करके धन संग्रह किया। रण की व्यवस्था की। इस संस्करण में लिखा था—'श्रम और

परोपकार का द्वितीय संस्करण।' इसी प्रकार मेरी यह पुस्तक
प्रेमी और जिज्ञासुओं में लोकप्रिय होगी। यह मेरा दृढ़ निश्चय
अन्त में मैं पुनः श्री रणधीर सिंह जी का आभारी हूँ, जो न केवल
प्रकाशक वरन् मार्ग दर्शक भी हैं।

किसी भी प्रकार की जिज्ञासा अथवा असुविधा होने पर
पत्र द्वारा सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। यह न केवल आ
अधिकार वरन मेरा नैतिक दायित्व भी है।

धन्यवाद!

तांत्रिक ब
(तन्त्र सबके लिए मिश
डी-४, राधापुरी, कृष्ण न
(यमुना पार) दिल्ली—११००

मन्त्र का विवेचन और प्रयोग

तन्त्र जगत में मन्त्र का अर्थ असीमित है। वैदिक ऋचाओं के छन्द भी मन्त्र कहे जाते हैं तथा देवी देवताओं की स्तुतियों व यज्ञ के निमित्त निश्चित किए गए लयबद्ध शब्द समूहों को भी 'मन्त्र' कहा जाता है। तन्त्र शास्त्र के अनुसार मन्त्र उसे कहते हैं—जो पद समूह जिस देवता की शक्ति को प्रकट करता है, वह उसका मन्त्र कहा जाता है।

दूसरे अर्थों में हम मन्त्र का विवेचन इस प्रकार भी कर सकते हैं, वर्ण समूह द्वारा उच्चारित ध्वनि को मन्त्र कहते हैं। जो अपना विशिष्ट प्रभाव दिखाते हैं उन्हें मन्त्र कहते हैं। तन्त्र जगत में कुछ तांत्रिकों द्वारा मन्त्र की परिभाषाएँ निम्न प्रकार भी की गई हैं— धर्म कर्म और मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रेरणा देने वाली शक्ति को मन्त्र कहते हैं। देवता की कृपा को मन्त्र कहते। दिव्य शक्तियों की कृपा को प्राप्त करने में सहयोगी शक्ति को मन्त्र कहते हैं। गुप्त शक्ति को जागृत कर अपने अनुकूल बनाने वाली विद्या को मन्त्र कहते हैं। इसके अतिरिक्त इसको विकसित करने वाली विद्या को भी मन्त्र कहते हैं।

मंत्रों का जन्म

अभी तक मन्त्रों का उद्भवकाल अज्ञात है। इसका प्रचलन

कब से हुआ तथा इसको शुरू करने वाला कौन था? आज भी अज्ञात है। हाँ, इतना अवश्य है मन्त्रों की उत्पत्ति वेदों की रचना से बहुत पहले की है। अतः निश्चित है कि इससे पूर्व मन्त्रों का विकास हो चुका था। उससे पूर्व का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। वेदों के बाद ग्रंथों में भी मन्त्र अपने विकसित रूप में हैं।

मन्त्र विद्या का ज्ञान विश्व की सभी जातियों में किसी न किसी रूप में विद्यमान था और है तथा रहेगा। कलियुग के प्रारंभ में यह विद्या अपने चरम विकास पर थी। इसका अस्तित्व आज भी उतना ही सशक्त है जितना की पौराणिक काल में था। अन्तर केवल इतना है कि अब यह विद्या अंगुली पर गिनने लायक तांत्रिकों, मांत्रिकों के पास है। मन्त्रों में जो स्वर, व्यंजन, नाद व बिन्दु का प्रयोग किया जाता है वे सब देवताओं के भिन्न-भिन्न रूपों व गुणों को प्रकट करते हैं जैसे कि मनुष्य एक है। सबकी आकृति एक है। फिर भी उनमें से किसी विशेष मनुष्य को बुलाने के लिए कुछ न कुछ सांकेतिक शब्दों की आवश्यकता होती है अथवा विशिष्ट नाम देने की आवश्यकता पड़ती है।

मन्त्रों में बीज एवं नाद की उपयोगिता

जिस प्रकार किसी के लिए नाम रख दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार मन्त्रों में स्थित भिन्न-भिन्न देवताओं का भिन्न-भिन्न संकेत होता है। उसे 'बीज' कहते हैं। ॐ परमेश्वर की शक्ति का प्रतीक है। इस ॐ शब्द से सृष्टि, स्थिति और संहार तीन कार्यों का बोध होता है। इसलिए प्रायः मन्त्रों के प्रारम्भ में ॐ का प्रयोग किया जाता है। बीजाक्षरों में जो अनुस्वार अथवा अनुनासिक संकेत लगाए

जाते हैं उन्हें 'नाद' कहते हैं। नाद के द्वारा अप्रकट शक्ति को प्रकट किया जाता है।

मन्त्रों के भेद

मन्त्र तीन प्रकार के होते हैं—पुल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग।

मन्त्रों के आधार पर लिंग भेद किया गया है। जिन मन्त्रों के अन्त में 'हूँ' और 'फट्' लगते हैं वे पुल्लिग मन्त्र कहलाते हैं। जिन मन्त्रों के अन्त में 'स्वाहा' लगता है, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं। जिन मन्त्रों में 'नम: ' लगता है, वे नपुसंक लिंग होते हैं।

मन्त्र असीमित शक्ति वाला होता है असंख्य साधक एक साथ साधना करते हैं और उसका फल प्राप्त करते हैं। मन्त्र में विस्फोट व प्रभावकारी शक्ति होने के कारण यह शक्ति सम्पन्न असाधारण, सामर्थ्यवान तथा वेगवान होता है। मन्त्र साधक तथा इष्ट को मिलाने का कार्य करता है। वास्तव में मन्त्र साधक और इष्ट के बीच का सेतु है।

मन्त्रों में अन्तर

मन्त्र और स्तोत्र में अन्तर है। मन्त्र कभी परिवर्तित नहीं किए जाते हैं न किए जा सकते हैं जबकि स्तोत्र के भावों को पर्यायवाची शब्दों की सहायता से व्यक्त किया जाता है। एक देवता के अनेकों स्तोत्र हो सकते हैं, परन्तु मन्त्र एक होता है। मन्त्राक्षरों में नाद व बिन्दु दैवी शक्ति को प्रकट करने के लिए ही प्रयोग होता है। जिन मन्त्रों को हम उच्चारित करते हैं, उनसे ध्वनि पैदा होती है और ध्वनि का मन्त्र के साथ प्रभाव होता है। ध्वनि के भीतर एक प्रकार

की शक्ति छिपी रहती है जिससे प्रलय व सृजन कार्य होता है। इसीलिए ध्वनि को ब्रह्माण्ड का संक्षिप्त रूप भी कहा जाता है।

ध्वनि का प्रभाव हम सभी प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। तनिक देखें अगर किसी शिशु को आप डाँटते हैं, तो वह दुःखी होता है अगर उसी शिशु के साथ कोई प्रेम से बोलता है तो वह गद्‌गद् हो जाता है। आखिर यह सब किसका प्रभाव है? ध्वनि का ही तो चमत्कार है। भाषा का महत्व इसके बाद आता है।

अतः मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि ध्वनि में चमत्कार है। मन्त्रों का उच्चारण करने से उस ध्वनि के प्रभाव से जो मन्त्र जिस इष्टदेव से सम्बन्धित होता है, उसकी शक्ति को जाग्रत कर आत्मसात् कर लेता है और मन्त्र साधक स्वयं देवता तुल्य होकर जन कल्याण करने लगता है। मन्त्र साधक को सशक्त बनाता है और साधक जो कुछ भी चाहता है वह उसे अवश्य ही प्राप्त कर लेता है।

तन्त्र विज्ञान में मन्त्र की सिद्धि करने के लिए मुख्यतया तीन बातों की आवश्यकता होती है। तांत्रिक अनुष्ठान के लिए जो भी समय निश्चित हो, उसे 'काल' कहते हैं। मन्त्र की साधना के लिए मन्त्र के अनुकूल पूजन सामग्री को 'द्रव्य' कहते हैं। साधना के मन्त्र का उच्चारण ही 'शब्द' है।

तन्त्र शास्त्र में प्रत्येक मन्त्र के चार मुख्य भाग होते हैं।

प्रणव ॐ, बीज अर्थात देवता का नाम, मन्त्र, पल्लव मन्त्र के अन्त में लगा हुआ शब्द जिसका उच्चारण कर होम किया जाता है।

गुरु की अनिवार्यता

मन्त्र सिद्ध के लिए साधक को गुरु की आवश्यकता होती है,

इसलिए साधक गुरु की खोज करता है। गुरु भी शिष्य की सुपात्रता जान लेने के उपरान्त ही अपना शिष्य स्वीकार करता है। जब गुरु शिष्य बनाता है, तभी वह शिष्य को दीक्षित करता है। दीक्षा देता है। यह दीक्षा गुरु कब देगा यह नहीं कहा जा सकता। यह गुरु की इच्छा पर निर्भर करता है। दीक्षा देना केवल गुरु का अधिकार है।

गुरु से दीक्षित होने के उपरान्त साधक का साधना मार्ग सुगम हो जाता है, क्योंकि दीक्षा एक प्रकार से तेजपुंज होता है। इसलिए गुरु को हमारे तन्त्र में शक्तिदाता कहा गया है। गुरु की आवश्यकता निर्विवाद है। ऐसे-ऐसे महान गुरुओं का गरिमापूर्ण इतिहास है, जो वास्तव में ही साधक के लिए ईश्वर से भी बढ़कर सिद्ध हुए हैं तभी तो कहा गया है कि—"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय। बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियो बताय।"

कबीरदास ने पुनः गुरु की महिमा बतलाते हुए कहा है कि—

कबीरा हरि के रूठते गुरु के सरने जाय।
कह कबीर गुरु रूठते हरि नहीं होय सहाय॥

और

तीन लोग नवखंड में, गुरु से बड़ा न कोय।
करता करै न करि सकै, गुरु करै सो होय॥

अन्तश्चेतना का महत्व

साधक को अपनी अन्तश्चेतना को जाग्रत किए बिना साधना में सफलता नहीं मिलती। इसलिए साधक को अपनी अन्तश्चेतना को जाग्रत करना अत्यावश्यक है। अतः साधक को अष्टांग नियम को अपने जीवन की धारा में समागम करना चाहिए। मन्त्र साधना के

क्षेत्र में साधक को सिद्धि का अधिकारी बनाता है। शुरू में अष्टांग नियमों का पालन करना कठिन अवश्य लगता है परन्तु बाद में वह सुगम हो जाता है।

अष्टांग योग आठ प्रकार के बतलाए गए हैं—यम नियम, संयम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

यम भी छह प्रकार के बतलाए गए हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह तथा अपरिग्रह।

यम के पुनः बारह भेद फिर बतलाए हैं—अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, आस्तिकता, अभय, असंग, ब्रह्मचर्य, मौन, क्षमा-शीलता, स्थिरता व लज्जा।

साधक के लिए साधना के समय पालनीय कुछ आवश्यक निर्देश भी हमारे तांत्रिकों द्वारा दिए गए हैं। जिनका पालन साधना को पूर्ण बनाने में सहायक होता है। अतः साधक को निम्न बातों का अच्छी प्रकार ध्यान रखना चाहिए।

साधना स्थल—साधना की सफलता में साधना स्थल का भी महत्व है। जो सफलता में सहायक होते हैं, साधना के लिए सामान्य रूप से तीर्थ स्थान, गुफा, पर्वत शिखर, नदी, तट, वन उपवन, विल्व वृक्ष, पीपल वृक्ष व गौशाला, गुरु निवास, देव मन्दिर तथा सुरम्य उपवन आदि भी सिद्धिदायक स्थल बतलाए गए हैं।

मन्त्र साधक को सदैव सात्विक आहार करना चाहिए। आहार तीन प्रकार से दूषित होते हैं जिन्हें त्याग देना चाहिए।

जिस घर में लहसुन, प्याज आदि पदार्थों का सेवन होता है और परिवार के व्यक्ति सात्विक प्रवृत्ति तथा सदाचारी न हों, तथा परिवार में अशान्त वातावरण हो तब भी बाधा होती है।

आश्रय दोष—अपवित्र स्थान पर रखा भोजन, आश्रय दोष के कारण त्याग देना चाहिए।

निमित्त विधि—साधक को पूर्ण सात्विक भोजन भी अगर ग्रहण करने से पूर्व मन ललचा गया हो, तो उसे त्याग देना चाहिए।

साधक को पीतल के वर्तन में भोजन ग्रहण करना चाहिए। साधना काल में दूषित भोजन को स्पर्श नहीं करना चाहिए।

काल—मन्त्र साधना के लिए निम्न समय उत्तम होते हैं।

मन्त्र साधना हेतु कार्तिक, आश्विन , वैशाख, माघ, मार्गशीर्ष, फाल्गुन और श्रावण मास उत्तम होता है।

तिथि—मन्त्र जाप हेतु पूर्णिमा, पंचमी, द्वितीया, सप्तमी, दशमी और त्रयोदशी तिथि उत्तम है।

पक्ष—शुक्ल पक्ष में शुभ चन्द्र व शुभवार के अनुसार मन्त्र जाप उत्तम होता है।

दिन—रविवार, शुक्रवार, बुधवार और वृहस्पतिवार मन्त्र जाप सिद्धि कारक होता है।

नक्षत्र—पुनर्वसु, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, रेवती, अनुराधा और रोहिणी नक्षत्र सिद्धि हेतु उत्तम होते हैं।

जाप में माला व आसन

आसन—मन्त्र जाप में कुशासन, मृगचर्म, बाघम्बर और ऊन का बना आसन उत्तम होता है।

माला—रुद्राक्ष, तुलसी, स्फटिक, मूँगा, लाल चंदन व कमल गट्टे, हकीक की मालाओं में से कोई एक माला होनी चाहिए। वैसे रुद्राक्ष की माला पर जप करने से सभी प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती हैं।

साधना काल में साधक को तेल, उबटन, सौन्दर्य, प्रसाधन अपवित्रता, क्रोध, लोभ, मोह, संशय, नग्न, अशुद्ध वस्त्र, अनास्था, चित्त की खिन्नता, सिर पर वस्त्र, स्त्री से संभोग, सुगन्धित वस्त्र, तड़क-भड़क वाले वस्त्र तथा चपड़े के जूते का त्याग करना चाहिए, मात्र एक ही वस्त्र धारण करना चाहिए।

साधना काल में स्नान, त्रिकाल संध्या, भोग के बाद भोजन, पादुका, मृत्यु अशौच व प्रसव अशौच में गंगाजल का पान कर व साधना कक्ष को धोकर अपनी साधना को चलाए जाना चाहिए। अपने आसन पर किसी को बैठने न देना चाहिए। भूमि पर कुशासन या कम्बल डालकर शयन करना चाहिए। गुरु का संग व सेवा करनी चाहिए। तन्त्र शब्द व्यापक अर्थ वाला है। इसका मूलाधार मन्त्र है। अत: जो तत्व और मन्त्र के विशद् अर्थ का विस्तार और त्राण करता है, उसे तन्त्र कहते हैं। इसका अपना विस्तृत साहित्य है। तन्त्र में तन् और त्र दो शब्द सम्मिलित हैं। तन् का शाब्दिक अर्थ विस्तार से है तथा त्र का अर्थ त्राण अर्थात रक्षा से है। तन्त्र विज्ञान सीमा से मुक्त है। इसकी कोई सीमा नहीं है। मन्त्र और यन्त्र के द्वारा कार्य करने की विधि को तन्त्र कहते हैं। तन्त्र के प्रयोग विधि बतलाने वाले ज्ञान को तन्त्र कहा जाता है। तन्त्र एवं तांत्रिक का नाम सुनते ही सामान्य व्यक्ति कुछ भयभीत सा हो जाता है। तन्त्र विज्ञान प्राय: गुप्त रखने वाला विज्ञान बनकर रह गया है। हालांकि अब तन्त्र विज्ञान का गुप्त सहित्य प्रकट हो गया है।

तन्त्र विज्ञान के कई एक मतों पर आधारित विभिन्न मतावलम्बियों ने ग्रन्थ रचना की है। शैव तन्त्र, बौद्ध तन्त्र, शाक्त तन्त्र, वनस्पति तन्त्र, वैष्णव तन्त्र, गणपत्य तन्त्र, मुस्लिम तन्त्र, गोरख

तन्त्र, जैन तन्त्र आदि।

वैसे तन्त्र की मुख्यतया दो विचार धाराएँ हैं—

वाम मार्ग—इससे शव-साधना, विद्वेषण, मारण, उच्चाटन आदि इस तरह के टोने टोटकों का प्रयोग होता है। जो उचित प्रतीत नहीं होता है। इस मार्ग में स्त्री साधिका अनिवार्य है।

दक्षिण मार्ग—इसमें आराधना पक्ष होने के कारण सभी प्रकार से कल्याणकारक व निश्चित रूप से फल देने वाला होता है।

प्रारम्भ में हमारे तांत्रिकों ने तन्त्र विज्ञान की रचना लोकहितार्थ, समस्याओं, कष्टों एवं आपदाओं के निवारण के लिए किया था परन्तु इसकी सफलता से प्रभावित होकर प्रतिशोध की भावना से चंद लोगों ने तन्त्र विज्ञान का स्वरूप ही बदल देने, वीभत्स कर देने तथा उसका मार्ग ही बदल देने का प्रयत्न किया जिसके परिणामस्वरूप मारण, उच्चाटन, वशीकरण, मोहन आदि तन्त्रों का निर्माण किया। तन्त्र विद्या का प्रयोग दस प्रकार से होता है—१. शान्ति, २. स्तम्भन, ३. सम्मोहन, ४. उच्चाटन, ५. वशीकरण, ६. आकर्षण, ७. जृभण, ८. विद्वेषण, ९. मारण और १०. पौष्टिक।

रोग निवारण प्रयोग

बहुत से संसारिक व्यक्तियों को कभी-कभी ऐसी व्याधियाँ लग जाती हैं जो कि छूटने का नाम नहीं लेतीं। ऐसी दशा के लिए ताँत्रिकों ने रोग मुक्ति के लिए प्रयोग बतलाए हैं। प्रयोग लाभकारी सिद्ध हुए हैं।

ताँबे के बर्तन में गंगाजल लेकर इष्ट का स्मरण कर निम्न मन्त्र को ११०८ बार पढ़कर जल को अभिमन्त्रित करें। इस जल को पिलाने से ३१ दिन में रोग शान्त हो जाता है। मन्त्र निम्न है—

ओं सं सां सिं सीं सुं सुं सें सैं
सों सौं सं सः अमृत वर्चसे स्वाहा।

दूसरा प्रयोग इस प्रकार है—निम्न मन्त्र को सिद्ध करने के बाद २१ बार बढ़कर इससे विभूति को अभिमन्त्रित कर लेते हैं। फिर उसे रोगी को लगाने से रोग से मुक्ति होती है।

ओं नमो आदेश गुरु का। बालरखे बालनी।
कपाल रखे जोगिनी। मुखं रखे कुम्भकर्ण।
पीठ रखे विभीषण। नख रखे नरसिंह।
कलेजा रखे काली भवानी।
कंवर रखे कंवर का देख।
पिण्ड रखे गुरु गोरखनाथ।
पीणा प्राणासत रखे गुरु के पास।

गुरु की शक्ति मेरी भक्ति।
चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

सर्वांग पीड़ा हरण मन्त्र

अगर किसी का शरीर दर्द के कारण चूर-चूर हो रहा है। उस समय इस मन्त्र से ३१ बार पढ़कर मोर पंख से झाड़ने पर शरीर की पीड़ा दूर होती है।

ओं नमो कोतकी ज्वालामुखी काली।
दोबर रंग पीड़ा दूर सात समुद्र पार।
कर आदेश कामरू देश कामाक्षा माई।
हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।
सत्य नाथ आदेश गुरु को।

रोग नाशक मन्त्र

ओं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं काली कंकाली
महाकाली खप्पर वाली 'अमुकस्य आमुम'
व्याधि नाशय नाशय शमनय स्वाहा।

यह मन्त्र सवा लाख जाप करने से सिद्ध हो जाता है। जिस व्याधि में कोई औषधि काम न कर रही हो तो मन्त्र सिद्ध के बाद रोगी को सात दिन तक ११०८ बार मन्त्र पढ़कर गंगाजल से झाड़ना चाहिए। इससे रोग शान्त होता है।

सर्व रोग नाशक टोटका

मंगलवार अथवा शनिवार के दिन कुम्हार के घर से कुछ दिए

चाक पर उल्टा घुमा कर ले आएँ। उनमें शुद्ध घी की बत्ती जलानी चाहिए। फिर रोगी को उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठाकर उस पर से सभी दीपकों को एक-एक करके उतारना चाहिए। तत्पश्चात एक पात्र में कच्चा दूध चावल और शक्कर लेकर रोगी से स्पर्श करा इन सबको चौराहे पर 'ओं ह्रीं स्वाहा' का उच्चारण कर रख कर घर वापिस आ जाना चाहिए। इससे सभी प्रकार की बीमारियाँ दूर होती हैं।

खोई हुई वस्तु या प्राणी की प्राप्ति

अगर किसी की कोई वस्तु या व्यक्ति खो जाता है और वह नहीं मिलता तो निम्न उपाय करें—

यहाँ पर मुझे एक बात याद आ रही है। गंगा-तट पर एक तांत्रिक बैठा था चारों ओर भीड़ थी। सभी तांत्रिक को अपना-अपना कष्ट सुना रहे थे और वह उनके प्रत्येक कष्ट के उपाय स्वरूप उन्हें विभूति की चुटकी देता जा रहा था। आश्चर्य की बात थी कि अनेक रोगी तत्काल स्वास्थ्य लाभ पा चुके थे। एक ढोंगी ने भी वैसा ही स्वांग रचा, किन्तु उसकी राख ने रोगों पर कोई प्रभाव न दिखलाया। ढोंगी तांत्रिक के पास आया और बोला, मैं भी लोगों को राख दे रहा हूँ, पर वह निष्फल जा रही है, क्या तुम्हारी विभूति में कोई शक्ति है? मेरे बच्चे! तांत्रिक ने उसे कोमल स्वर में पुकारा, इसमें कोई शक्ति नहीं।

फिर?

यह तो इस हाथ की करामात है। तांत्रिक ने अपना हाथ आकाश की ओर उठा दिया और चला गया। आप भी साधना द्वारा

पहले करामात प्राप्त करें, तब प्रयोग करें।

इस मन्त्र को इक्कीस हजार बार जप करने की आवश्यकता होती है। प्रायः दस हजार जाप पूरा होते-होते खोई वस्तु प्राप्त हो जाती है तथा इसी मन्त्र को लकड़ी के पटरे पर श्मशान के कोयले से लिखकर पटरे को उलट कर रख देना चाहिए। ऐसा करने से कोई हुई वस्तु प्राप्त हो जाएगी। मन्त्र इस प्रकार है—

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा वाहुसहस्त्रवान।
तेन स्मरण मात्रेण मतं नष्टं च लभ्यते॥

इसके अतिरिक्त नहा धोकर आसन पर बैठकर धूप, दीप जलाकर कार्तवीर्य देव का स्मरण करें और 'ओं कार्तवीर्याय नमः' मन्त्र का १०८ बार जाप करने से मन के भीतर ऐसा आभास होने लगता है कि वस्तु कहाँ है और वह स्वतः प्राप्त हो जाती है।

फोड़े-फुन्सी निवारणार्थ प्रयोग

यह मन्त्र ११००८ बार जाप करने से सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् फोड़े-फुन्सी के रोगी को झाड़ने से आराम मिलता है। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो आदेश गुरु को वन में
ब्यायी अंजनी जिन जाया हनुमन्त
फोड़ा-फुन्सी गूमड़ी ये तीनों भस्मन्त।

अनिष्ट निवारण

निम्न मन्त्र २१ हजार बार जप करने से सिद्ध होता है। प्रयोग के समय वस्त्र में एक गाँठ लगाकर इस मन्त्र से ३१ बार अभिमन्त्रित

कर सामने जाने से सभी शत्रुता का भाव त्याग कर मित्र हो जाते हैं।

ओं ह्रीं ह्रीं ठी ठी अनिष्ट निवारय
ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं सः सः स्वाहा।

मन्द बुद्धि बालक

कई बार बच्चे मन्दबुद्धि होते हैं। वह बात को देर से या फिर कम समझते हैं। इस कारण कार्य कुशलता पर काफी बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे बच्चों के कल्याण के लिए एक अनुभूत टोटका है।

किसी भी दिन रात के लगभग १२ बजे बच्चे के थोड़े से बाल चुटिया के स्थान (शिखा) पर से काट लें और उन्हें अपने पास रख लें।

अगले दिन भी यही क्रिया करें। इस टोटके को करते हुए जब ५ दिन हो जाएँ तो रविवार के दिन इन बालों को जला कर बाहर फेंक दें।

सम्भव हो तो पैर से भली भाँति रगड़ दें। बच्चा शनैः शनैः कुशाग्र बुद्धि का होने लगेगा। इस मन्त्र का उच्चारण भी करें।

ओं ह्रीं ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः

परीक्षा में सफलता हेतु

कठोर से कठोर परिश्रम करने पर भी अनेक बार बच्चे फेल हो जाते हैं, जिसका सारा दोष भाग्य पर मढ़ दिया जाता है। वास्तव में परिश्रम तो वह बहुत करते हैं, पर मस्तिष्क उस मेहनत को एकत्रित नहीं कर पाता है। इसके लिए सरल अनुभूत टोटका है।

जब तक परीक्षाएँ हों बच्चे को दही नियमित दिया करें,

केवल उसके समय में परिवर्तन करना होता है इसमें रहस्य है। जैसे प्रथम दिन प्रात: ८ बजे दिया अगले दिन ९ बजे और फिर १० बजे इस प्रकार एक घण्टा रोज बढ़ाते जाएँ।

कार्य से भय

देखा गया है कि कुछ व्यक्ति या बच्चे पूर्णत: कार्य कुशल होने पर भी काम से दिल चुराते हैं। उनकी उपस्थिति की मात्रा में अनुपस्थिति कहीं अधिक होती है। ऐसी हालत में बड़ी कुण्ठा उत्पन्न होती है।

मन्द बुद्धि हों, अक्षम हों या कार्य उपलब्ध न हो तो बात समझ में आती है, पर कार्य कुशल होने पर पूर्णत: सक्षम होने पर और कार्य उपलब्ध होने पर भी अनुपस्थिति होना या कार्य ना करना यह बात काफी गलत है। ऐसी जटिल परिस्थिति में यह टोटका अपनाएँ।

रविवार के दिन शराब की बोतल लें। सर्वप्रथम उसे भैरों पर अर्पण करें। उसके बाद उस बोतल को सात बार उस पीड़ित व्यक्ति के ऊपर से उतार कर किसी को दान कर दें या फिर दिन ढले किसी चौराहे पर, मरघट में या पीपल के पेड़ के नीचे रखे दें। परिस्थिति में तुरन्त सुधार अनुभव करेंगे।

लक्ष्मी प्राप्ति

आज हर व्यक्ति किसी न किसी समस्या को लेकर अत्यन्त दु:खी है। कुछ व्यक्ति घर में ऐश्वर्य सम्पन्नता चाहते हैं, तो कुछ नौकरी व्यापार में उन्नति चाहते हैं, तो कुछ घर की समस्याओं को

लेकर दुःखी हैं।

ऊं ८	१ ऐं	६ ह्रीं ह्रीं
३ क्लीं	५ चामुंडायै	७ लं
४ लं	१ लं	२ नमः

ऊपर लिखित यन्त्र को अच्छी प्रकार अभिमन्त्रित कर शीशे के फ्रेम में या किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर जड़वा लें, तो यह यन्त्र आपके भाग्य को पलट देगा और आप जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए दुःखी न होंगे।

घर में सुख शान्ति का वास और व्यापार स्थल में बरकत रहेगी। इस यन्त्र के प्रभाव से चंचला लक्ष्मी स्थायित्व ग्रहण करेगी।

ऋण

ऋण उस दलदल की तरह है, जिसमें से जितना निकलने की चेष्टा करें फंसते ही चले जाते हैं। जीवन में कभी कहीं न कहीं हर व्यक्ति को ऋण लेना पड़ता है। अगर यह ऋण लेकर चुक जाए तो वह व्यक्ति भाग्यशाली होता है अन्यथा कर्ज में कई पुश्त गुजर जाती हैं और ऋण ज्यों का त्यों खड़ा रहता है। इसके निवारण के लिए यह कार्य करें—

सर्वप्रथम पाँच गुलाब के पूर्ण खिले हुए फूल लें। इसके पश्चात डेढ़ मीटर सफेद कपड़ा लेकर अपने सामने बिछा लें।

इन पाँचों गुलाब के फूलों को उसमें गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए बाँध दें। अब आप स्वयं जाकर इन्हें गंगा या यमुना में प्रवाहित कर दें। भगवान ने चाहा तो घर में सुख समृद्धि और खुशहाली रहेगी।

गायत्री मन्त्र इस प्रकार है।

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

धन वृद्धि

यह टोटका केवल नवरात्रि में ही किया जाता है।

मुख पूर्व की ओर हो तो रविवार, पश्चिम की ओर हो तो शुक्रवार को करें। काले घोड़े की नाल लाकर दरवाजे पर ठोंक दें।

धन लाभ

या मुसब्बित वल असबाब।

इस मन्त्र को पाँच सौ बार किसी भी सादे कागज पर लिख कर सिद्ध कर लें। फिर इस यन्त्र को एक कागज पर लिखकर घर में रखें। खुशहाली आएगी।

बिक्री वृद्धि

जिस व्यापारी की बिक्री लाख प्रयत्नों के बाद भी निरन्तर घटती जा रही हो या जिन गृहस्वामियों के लाख जतन करने पर भी घर में खुशहाली या शान्ति स्थापित न हो रही हो वह यह अचूक टोटका अपनाएँ। अवश्य ही लाभ होगा।

शुक्ल पक्ष के वृहस्पतिवार (गुरुवार) से क्रिया आरम्भ करें और हर वृहस्पतिवार को बिना विघ्न दोहराते जाएँ। टोटका निम्न प्रकार है—

घर या व्यापार स्थल के मुख्य द्वार के एक कोने को गंगाजल

से धोलें। इसके पश्चात हरिद्रा से स्वास्तिक (सतिया) बनाएँ। उस पर चने की दाल और थोड़ा गुड़ रखें।

इसके बाद स्वास्तिक को बार-बार देखें। प्रभु कृपा से आप शीघ्र ही लाभ का अनुभव करेंगे। यह एक सावित्वक क्रिया है।

नवनिर्मित मकान

प्राय: अनेक लोग नया मकान बनवाकर या फिर नई दुकान कर परेशानी में आ जाते हैं।

धन और परिश्रम दोनों ही नष्ट हो गए। जब भी कोई मकान बनवाएँ, उसकी नींव में निम्न वस्तुएँ रखवा दे। यह वस्तुएँ धन लाभ के साथ-साथ टोने-टोटकों से भी बचाव रखती हैं।

इस टोटके के लिए निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है—

१. ताँबे की लुटिया ढक्कन सहित।
२. चाँदी का सर्प-सर्पिणी का जोड़ा।
३. चाँदी का एक छोटा सा पतरा।
४. पूजा वाली पाँच छोटी सुपारियाँ।
५. हल्दी की सात साबुत और साफ गाँठ।

इन सब वस्तुओं को ताँबे की लुटिया में पानी भरकर डाल दें। इसके बाद ढक्कन अच्छी प्रकार से बंद कर दें। अब यह लुटिया मुख्य द्वार के पश्चिम की ओर दबा दें।

सम्भव हो तो किसी तांत्रिक या विद्वान पंडित का परामर्श भी लें, ताकि कोई त्रुटि न रह जाए।

अचानक धन प्राप्ति

निम्न मन्त्र को ५१००० की संख्या में जपकर शक्तिवान कर लें, इसके बाद इस मन्त्र को विधि अनुसार प्रयोग में लाएँ। अचानक धन प्राप्त होगा। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं शं शिवाय नमो नमः।

★ ★ ★

यह एक बेहद सरल और सस्ता टोटका है। इसमें केवल नियम की आवश्यकता होती है। थोड़ा सा नियम के साथ पालन करने पर कोई भी व्यक्ति धन लाभ कर सकता है।

शनिवार के दिन सांयकाल जब दोनों समय मिल रहे हों तो उड़द के दो साबुत बड़े लेकर उन पर तनिक-सा सादा दही और सिन्दूर छिड़क दें। इसके बाद उसे किसी पीपल के पेड़ के नीचे रख दें। यह ध्यान रहे, पलट कर नहीं देखना है। इस टोटके को २१ दिन नियम पूर्वक करें।

★ ★ ★

यह मन्त्र दीपावली के दिन ही सिद्ध किया जाता है—

दीपावली की रात लगभग बारह और एक बजे के बीच थोड़ा सा गंगाजल लेकर और सवा सौ ग्राम बेसन की बनी पीली बर्फी लेकर आसन पर बैठ जाएँ। तत्पश्चात इस मन्त्र की तीन माला जपें।

''ओं यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय,
धन धान्यपतिपतये धन धान्य समृद्धि देहि दाषाय स्वाहा।''

इसके पश्चात पीली बर्फी बच्चों को बाँट दें और अभिमन्त्रित जल कार्यालय या व्यापार स्थल की चारों दीवारों पर छिड़क दें।

इस क्रिया के पश्चात सम्भव हो तो एक माला प्रतिदिन नियम

से जपें।

धन-धान्य की वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग के लिए यह साधना अति उपयोगी है।

विघ्न निवारण

हर प्रकार के विघ्न, बाधा निवारण हेतु दुर्गा सप्तशती वर्णित निम्न मन्त्र अत्यन्त उपयोगी है। मन्त्र इस प्रकार है—

सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोकस्य अखिलेश्वरी।
एवमेष त्वया कार्यम मस्मद बैरी विनाशनम।।

इस मन्त्र के नियमित जाप से व्यापार मार्ग में आई बाधाओं का शमन और निराकरण होता है। साथ ही तिलों से हवन भी करें। जाप में निरन्तर यही मन्त्र दोहराते जायें। साथ ही इस मन्त्र को लिखकर उसकी पूजा भी करें।

ग्राहकों की संख्या

व्यापारी बन्धुओं को चाहिए कि सोमवार के प्रातः सफेद चन्दन ले आएँ। उसे लाने के पश्चात नीले डोरे में पिरो लें उस पर निम्न मन्त्र को २१ बार पढ़ें और तिजोरी में रख लें या पूजा के स्थान पर रख दें। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं दुर्गे स्मृता हरसि भीति-मशेष जन्तो,
स्वस्थेशः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि।

यह एक नवरात्रि से लेकर दूसरे नवरात्रि तक ही प्रभावकारी रहता है।

★ ★ ★

इस सरल टोटके में घर का मुखिया अष्टमी के दिन ५८ पैसे लेकर किसी लाल कपड़े में (माता का कन्द भी हो सकता है) बाँधकर पूजा के स्थान, व्यापारी वर्ग द्रव्य रखने के स्थान पर रख सकते हैं।

इस प्रकार यह धन का टोटका आगामी नवरात्रि तक प्रभावी रहेगा। माता की असीम अनुकम्पा से आपके घर में धन-सम्पत्ति की कोई कमी न रहेगी।

★ ★ ★

व्यापारी वर्ग आमतौर पर बिक्री बाँध देने से अधिक चिन्तित रहता है। प्रतिस्पर्धा के युग में ऐसे व्यक्तियों की तादाद कम नहीं होती, जो इस प्रकार की कठिनाई से पीड़ित होते हैं। अगर ऐसा कोई व्यापारी ऐसी कठिनाई को झेल रहा है तो वह इस टोटके को अपनाए।

रविवार के दिन गंगाजल लें। उसे ११ बार गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित करें, तत्पश्चात उसको कार्यालय या दुकान की चारों दीवारों पर भली भाँति छिड़क दें।

इसके बाद थोड़े काले उड़द ले लें।

उन काले उड़दों पर २१ बार निम्न मन्त्र का जाप करें। और कार्यालय या दुकान में बिक्री बढ़ जाएगी और लाभ निरन्तर बढ़ता जाएगा। इस तांत्रिक क्रिया को कई बार दोहराना है।

मन्त्र इस प्रकार है—**ओं लक्ष्मी इलि हिन्।**

सर्व कार्य सिद्धि

यह एक अत्यन्त प्रभावशाली एवं कार्य में लाभकारी मन्त्र है।

इस मन्त्र को जपने के लिए रात्रि के बारह बजे के बाद का समय श्रेष्ठ है। इस मन्त्र को इकतालीस दिन तक नियम से तीन माला प्रतिदिन जपना होता है। इस मन्त्र में नियम और श्रद्धा की आवश्यकता सबसे अधिक है।

जहाँ पर 'अमुक' शब्द आया है वहाँ पर विशेष का उच्चारण करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो महाशाबरी शक्ति मम अरिष्ट निवाराय मम 'अमुक' कार्य सिद्ध कुरु-कुरु स्वाहा।

नजर व टोक

अगर आप किसी दुकान, मकान के मुख्य द्वार, चौखट पर ध्यान से देखें तो लोहे की नाल (जो घोड़े के खुर में ठोकी जाती है) लगी स्पष्ट नजर आ आएगी, इस नाल का प्रयोग व्यापार या मकान को बुरी नजर (टोक) और टोने-टोटके से बचाने के लिए किया जाता है।

इस कार्य के लिए प्राय: अज्ञानवश कोई भी लोहे की नाल किसी भी दिन ठोक दी जाती है, जबकि इसका विधान है कि नाल केवल घोड़े की हो तो अधिक उत्तम रहता है। पहले नाल को गंगाजल से धो लें। अगर संस्थान या मकान है, तो प्रवेश द्वार पर चुपचाप लगा दें।

लक्ष्मी हेतु प्रयोग

जिस प्रकार बिल्ली की जेर लक्ष्मी लाभ हेतु काम आती है, ठीक उसी प्रकार काली घोड़ी की जेर भी काम में आती है। यह

लक्ष्मी प्राप्ति का एक अत्यन्त अचूक टोटका है।

घोड़ी जब प्रसव कर रही हो तो बच्चे के साथ एक झिल्ली भी बाहर आती है।

घोड़ी प्रयत्न कर उसे खा जाती है। इस झिल्ली की रचना सफेद होती है। अगर इसको सँभाल कर रखा जाए तो धन प्राप्त होता है।

व्यापार में वृद्धि

मंगलवार के दिन ७ साबुत डंठल सहित हरी मिर्च और एक नीबू लाएँ। इसके पश्चात उन्हें एक डोरे में पिरो लें। इन सबको कार्यालय या व्यापार स्थल के बाहर टाँग दें। ऐसा हर मंगलवार को करें। ऐसा करने से व्यापार बढ़ता है और नजर या टोक भी नहीं लगती है।

अचल सम्पत्ति

प्रत्येक व्यक्तियों का लाख प्रयत्न करने पर भी स्वयं का मकान न बन पा रहा हो, वह व्यक्ति इस अनुभूत टोटके को अपनाएँ।

प्रत्येक शुक्रवार को नियम से किसी भूखे को भोजन कराएँ और रविवार के दिन गाय को गुड़ खिलाएँ। ऐसा नियमित करने से अचल सम्पत्ति बनेगी या फिर कोई पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी।

यदि सम्भव हो तो प्रातःकाल स्नान ध्यान के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें।

उद्देश्य शीघ्र ही प्राप्त होगा। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ओं शं शंभवाय वायु गमेशाय शं फट्।

प्रात:काल सर्व कार्यों से निवत्त होकर दुर्गा सप्तशती के चतुर्थ अध्याय का पाठ १०८ दिन नियम से करें। कार्य में सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी।

बचत हेतु

प्राय: कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो अधिक से अधिक धन कमाने के पश्चात् भी कुछ नहीं बचा पाते। यह पूछने पर कि क्या व्यय हुआ? वह बता पाने में स्वयं को नितान्त असमर्थ अनुभव करते हैं। कमाई में बचत हेतु एक टोटका है। इस सरल टोटके को करें और लाभ उठायें।

मंगलवार के दिन लाल चन्दन, लाल गुलाब के फूल और रोली ले आएँ। इन सब बस्तुओं को लाल कपड़े में बाँधकर तिजोरी या द्रव्य रखने के स्थान पर रख दें।

धन की बचत प्रारम्भ हो जाएगी। इस टोटके को प्रत्येक छः मास के बाद दुबारा करें।

बरकत हेतु

अगर आप यह अनुभव करें कि आपके द्वारा बनाई गई सम्पत्ति में कोई बढोत्तरी नहीं हो रही है, इसके विपरीत वह घट ही रहा है, या नष्ट हो रहा है तो निम्नलिखित का प्रयोग करें।

किसी भी वृहस्पतिवार को बाजार से जलकुम्भी ले आएँ। उसे पीले कपड़े में लपेटकर लटका दें। इस क्रिया में जलकुम्भी को एक बार लटका देने के पश्चात् उसे दुबारा छूना निषेध है।

पैतृक सम्पत्ति हेतु

कई बार देखा गया है कि पैतृक सम्पत्ति होने के बाद भी वह सम्पत्ति किसी न किसी कारण प्राप्त नहीं होती है। कारण अनेक हो सकते हैं। यहाँ एक तन्त्रोक्त उपाय है, जो लगभग खरा उतरता है।

व्यक्ति विशेष को चाहिए कि सोमवार के दिन श्वेत चितकबरी कौड़ी को भली भाँति पीस लें। इस पीसी गई चितकबरी कौड़ी का पाउडर जिस व्यक्ति से सम्पत्ति प्राप्त होनी है, उसके मुख्य द्वार पर छिड़क दें। यह टोटका तीन-चार बार दोहराएँ कार्य में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

लाटरी द्वारा धन प्राप्ति

यूँ तो प्रतिदिन करोड़ों व्यक्ति लाटरी का टिकट खरीदते हैं, पर केवल चन्द ही भाग्यशाली व्यक्ति होते हैं, जिनकी लाटरी निकलती है। लाटरी का टोटका इस प्रकार है पर इस कार्य में सफलता केवल 'भाग्य' पर ही निर्भर करती है।

जिस दिन लाटरी का टिकट खरीदना हो उस दिन प्रात:काल ही स्नान करें लक्ष्मी के चित्र के आगे धूप जलाएँ। पीले पुष्प अर्पण करें और पीली वस्तु खाकर, पीत वस्त्र पहनकर लाटरी का टिकट खरीद कर लाएँ यह ध्यान रखें उस टिकट के अंकों का जोड़ आपके मूलांक के जोड़ से मिलता हुआ हो। वह टिकट लाकर लक्ष्मी के चित्र के आगे रख दें। माँ लक्ष्मी की कृपा से हो सकता है आपको कोई पुरस्कार मिल जाए।

मूलांक आप अपनी जन्म तिथि से ज्ञात कर संकते हैं। ध्यान रहे जन्म तिथि शुद्ध होनी चाहिए वरना गणित में त्रुटि होने पर लाभ

से वंचित भी हो सकते हैं।

सफलता प्राप्ति हेतु

प्रातः सोकर उठने के बाद नियमित रूप से अपनी हथेलियों को ध्यान पूर्वक देखें और उन्हें तीन बार चूमें। सफलता प्राप्त करने के लिए अचूक और सरल सुगम टोटका है। इस टोटके को किसी भी शनिवार से शुरू कर सकते हैं। इस टोटके को गुप्त रखें, अन्यथा मनोवांछित फल मिलने में कठिनाई होती है।

गमन हेतु

अगर किसी से मिलने के लिए जाना है तो घर के आगे कामिया सिन्दूर छिड़क दें और उस पर धीरे से सावधानीपूर्वक पैर रख कर जाएँ तो अवश्य ही मिलने वाले से कार्य सिद्धि हो जाती है।

सिद्ध भाग्योदय प्रयोग

अगर हमारी कोई इच्छा है और वह प्रयत्न करने पर भी पूरी नहीं हो रही है तब आप यह प्रयोग सम्पन्न करें। प्रयोग करने वाला व्यक्ति शुक्लपक्ष के रविवार के दिन प्रातः उठकर अपने पूजा स्थान में सात नारियल एक पंक्ति में रखे और प्रत्येक नारियल पर सुगन्धित कुंकुम से तिलक करे और प्रार्थना करे कि मेरा कार्य सफल हो जाए। इस प्रकार लगातार नौ दिन करें। इसके बाद उन नारियलों को भगवान शिव के सामने चढ़ा दे। ऐसा करने पर प्रयोग करने वाले की जो इच्छा होती है, वह पूरी हो जाती है।

वशीकरण व अन्य टोटके पूर्णतः सफल हैं, जिस प्रकार एक

छोटा सा अंकुश पूरे हाथी को अपने नियन्त्रण में कर लेता है। ठीक उसी प्रकार छोटा सा टोटका पूरे जीवन को बदलने में सहायक होता है इसके अतिरिक्त यह टोटके पूरी तरह निरापद भी हैं। आवश्यकता केवल इन्हें श्रद्धा, विश्वास और एकाग्रता से सम्पन्न करने की है।

तांत्रिक प्रयोगों से मुक्ति

अगर किसी ने घर पर अथवा व्यापार पर रोक लगा दी है अथवा परिवार में कलह है, लाख प्रयत्न करने पर भी शान्ति नहीं हो रही है, तो समझ जाना चाहिए कि किसी ने घर पर या व्यापार पर तांत्रिक प्रयोग करा रखा है। इसके लिए एक अचूक प्रयोग है। किसी भी कृष्ण पक्ष के रविवार से यह प्रयोग शुरू होता है और प्रत्येक रविवार को यह प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार पाँच रविवार यह प्रयोग करना चाहिए।

लाल हकीक की माला ९१ दानों की लेकर उसे लाल आसन पर रख दें और माला के मध्य में दीप जला दें। फिर माला के प्रत्येक मनके पर कामिया सिन्दूर का तिलक करें और यह निवेदन करें कि मेरे परिवार में अथवा दुकान में जो तांत्रिक बाधा है वह दूर हो फिर रात को १२ बजे उस माला को और सरसों के तेल के दीपक को दूर वीराने में रख दें। इस प्रकार पाँच रविवार प्रयोग करने से निश्चय ही तांत्रिक बाधा दूर हो जाती है।

मुकदमा हेतु

अगर आप पर कोई मुकदमा चल रहा है तो कोर्ट, कचहरी जाने से पहले तीन साबुत काली मिर्च के दाने तथा थोड़ी सी देशी

शक्कर चबाकर जाएँ तो उस दिन मुकदमे में अनुकूल वातावरण मिलता है। अगर किसी से पैसे माँगने हों और वह लाख कहने पर भी पैसे नहीं दे रहा हो तो उसके पास जाते समय इक्कीस लौंग जमीन पर रखकर, उस पर दाहिना पैर रख कर घर से निकलें और फिर उससे मिलें तो वह अनुकूल व्यवहार करता है।

धन प्राप्ति प्रयोग

अगर परिवार में अत्यन्त दरिद्रता हो और लाख प्रयत्न करने पर भी दरिद्रता समाप्त नहीं हो रही हो तो आप इसके लिए एक टोटके का प्रयोग करें। अमावस्या की रात्रि को सरसों के तेल का दीपक जलाकर घर के द्वार पर रख दें और उसके चारों ओर कोई भी अभिमंत्रित फल रख दें। पहले फल पर सुगन्धित सिन्दूर की छोटी-छोटी बिन्दी लगा दें, फिर परिवार का मुखिया और उसकी पत्नी दोनों दरिद्रता से प्रार्थना करें कि वह सदैव के लिए घर छोड़कर चली जाए और चंचला लक्ष्मी से भी प्रार्थना करें कि वह घर में आएँ तथा स्थायी रूप से निवास करें। फिर प्रातः उठकर उस तेल के दीपक और फलों को ले जाकर जहाँ चार रास्ते मिलते हों, वहाँ पर रखकर वापिस आ जाएँ। पीछे मुड़कर नहीं देखें। उसी दिन से परिवार में सुख, सौभाग्य और समृद्धि आने लगती है।

रोग मुक्ति के लिए

अनेक बार इलाज कराने के बाद भी रोगी ठीक नहीं हो पाता या रोग का पता नहीं चलता और रोगी बराबर निर्बल होता जाता है, ऐसी स्थिति में आप निम्न प्रयोग करें। इसमें आप नित्य प्रातः उठकर

ताँबे का एक लोटा गंगाजल से भरकर रोगी के ऊपर ५४ बार घुमा दें और इस पानी के लोटे का गंगाजल चौराहे पर डाल दें। इस प्रकार २१ दिन के बाद रोगी स्वस्थ होने लगता है।

कार्य सफलता

अखण्डित भोजपत्र पर लाल चन्दन से मोर के पंख की कलम से १५ का यन्त्र लिखे और उसे अपने पास रखे। सदैव हर कार्य में सफलता प्राप्त होगी। यन्त्र इस प्रकार है—

ओं

६	७	२
१	५	९
८	३	४

ओं (बाएँ) ओं (दाएँ)

ओं

सम्पत्ति हेतु

काली बिल्ली की जेर को तिजोरी, व्यापार स्थल या जेब में रखने से जीवन धनधान्य से पूर्ण होता है, पर यह जेर कठिनाई से ही मिलती है।

प्रतिद्वन्द्वी

तन्त्र में इस प्रकार के प्रयोग निषेध हैं, फिर भी यह प्रयोग भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न कार्यों के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

किसी भी रविवार को गुंजा लाकर रख लें। जब भी को कुंवारी कन्या रजस्वला हो तो उसके रक्त में इस गुंजाकल्प को भि लें। इसके बाद छाँह में सुखा लें। इसको पीस कर चूर्ण कर लें। इ चूर्ण को दुश्मन के घर, दुकान के मुख्य द्वार पर छिड़क दें। कु समय बाद वह स्वयं ही भाग जाएगा।

रोग निवारण

मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य का जितना महत्व है, उतना औ किसी बात का नहीं। स्वास्थ्य का ही दूसरा नाम जीवन है। हमा यहाँ कहा गया है—पहला सुख निरोगी काया अर्थात् स्वास्थ्य ह सब कुछ है।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है। य विद्वानों का मत है। स्वास्थ्य से सम्बन्धित कुछ टोटके हैं। इन करते समय स्वच्छता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखें। कोई त्रुि न होने दें। सतर्कतापूर्वक और ध्यान से इन पर अमल करें।

ज्वर नाशक

यह एक ऐसा रोग है जो प्रायः होता रहता है। बच्चे, बू सभी इसका शिकार बनते हैं। प्रायः उपचार से आराम हो जाता है

यदि शीघ्र लाभ और काफी समय तक इससे मुक्ति पाना है तो शनिवार के दिन सूर्यास्त के पश्चात हनुमान मंदिर जाएँ।

हनुमान जी को साष्टांग प्रणाम कर उनके केवल चरणों क सिन्दूर ले आएँ फिर एक कुश आसन पर बैठ कर उत्तर दिशा क ओर मुँह कर इस श्लोक को सात बार पढ़ें।

मनोजवं मारूततुल्यवेगं, जितेन्द्रिय बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

पाठ के उपरान्त ज्वर रोग से ग्रसित व्यक्ति के माथे पर इस सिन्दूर को लगा दें। ज्वर प्रकोप शान्त हो जाएगा।

यह रामबाण 'मन्त्र' प्राय: सभी प्रकार की व्याधियों में अपना रामबाण असर करता है, पर विशेष रूप से इसे हर प्रकार के ज्वर में अत्यन्त उपयोगी पाया जाता है।

★ ★ ★

सफेद मदार की जड़ लाकर उसे कपड़े पर धागे के द्वारा पुरुष की दाहिनी और स्त्री की बायीं ओर बाँध दें। इससे एक दिन छोड़कर दूसरे दिन आने वाला ज्वर समाप्त हो जाता है।

शनिवार के दिन बबूल की जड़ सफेद धागे में लपेट कर बाँह में बाँध लें। यह तन्त्र शीत ज्वर को शान्त करता है। सफेद कनेर की जड़ से भी यही लाभ होता है।

सोंठ की माला बनाकर जाप करने से सामान्य ज्वर शान्त हो जाता है।

नजर

मनुष्य की नजर में बड़ी शक्ति होती है। कुछ नजरों में तो बड़ा भयानक प्रभाव होता है। जब कोई किसी को बुरी नजर या बदनियती से देखता है, तो उसका प्रभाव होता है। बालकों को नजर लगने से अपच, ज्वरादि हो जाता है।

नजर उतारने के अनेक सफल उपाय हैं। अधिकांश प्रामाणिक हैं। जब भी नजर की शंका हो, इनका प्रयोग करें।

१. राई, लहसुन, नमक, प्याज के छिलके, सूखी लाल मिर्च को साथ-साथ रखकर अंगारों पर छोड़ दो। फिर इन अंगारों को नजर लगे व्यक्ति या वस्तु पर सात फेरे लगाकर घर के बाहर फेंक दें। बुझाएँ नहीं।

२. शनिवार या रविवार को नजर लगे व्यक्ति के सिर पर से सात बार दूध के फेरे लगाएँ। बाद में यह दूध काले कुत्ते को पिला दें।

३. नजर लगे व्यक्ति या बालक को दरवाजे (देहरी) के बीच में बैठा दें। थोड़ी काली उड़द, नमक और मिट्टी बराबर-बराबर मात्रा में लेकर सात फेरे लगाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

४. नजर लगे व्यक्ति से नजर लगाने वाले व्यक्ति (संभावित) का नाम लेकर झाड़ू या जूता हाथ में लेकर २१ बार उतारें और फिर उसे जमीन पर जोर-जोर से २१ बार पटकें।

५. थोड़ी सी फिटकरी ले लें। नजर लगे व्यक्ति पर से ३१ बार उतारें फिर उसे चौराहे पर ले जाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

मोटापा

बहुत से लोग अनावश्यक रूप से मोटे और भद्दे हो जाते हैं। इनको इससे परेशानी होती है। ज्यादा मोटा होना भी ठीक नहीं है।

जो अपना मोटापा कम करना चाहते हैं, वह रविवार के दिन काला धागा अनामिका में बाँध लें और उसे राँगे की अंगूठी से ढंक दें। शनैः शनैः मोटापा स्वयं कम हो जाएगा।

भूख

बहुत से व्यक्तियों की यदा कदा भूख कम हो जाती है। कुछ

भी खाने के लिए मन ही नहीं होता। शरीर आलस्य और टूटन से भर जाता है। चेहरा निस्तेज होने लगता है। इस प्रकार के रोग से पीड़ित व्यक्ति को रोज कम से कम एक घंटा पेट के बल सोना चाहिए।

प्रातःकाल सोकर उठने पर एक गिलास शुद्ध जल हाथ में लेकर जल की ओर देख और '**ओं अमिचक्रायहीय नमः**' का १०८ बार पाठ करें।

पाठ करते समय केवल हाथ में लिए जल की ओर देखते रहें।

जाप पूरा होते ही सारा जल एकदम पी जाएँ और गिलास को औंधा करके रख दें।

आलस्य

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। प्रायः इस बीमारी के कारण व्यक्ति का काम-काज में मन नहीं लगता। बात करते-करते सुस्ती आ जाती है। बदन टूटने लगता है।

ऐसे व्यक्ति सुबह स्नान करते समय रेशम का एक धागा हाथ में लेकर सूर्य की ओर मुंह करके खड़े हो जाएँ और १०८ बार "ओं नमो भगवते स्वाहा' का जाप करें। फिर धागा बाएँ हाथ के अंगूठे पर बाँध दें।

अगर धागा न बाँधना चाहें, तो प्रतिदिन नियम से एक टाँग पर खड़े होकर जाप करें। वाँछित लाभ होगा।

अतिसार

अधिक दस्त लगने पर सदहेई के पौधे की जड़ के सात बराबर-बराबर टुकड़े करें। इसकी एक माला कमर में बाँधें। अतिसार

समाप्त हो जाएगा।

पेट दर्द

उत्तर की तरफ मुँह कर कुशा के आसन पर बैठ जाएँ। थोड़ा सा देशी घी, कपूर इथेली पर रख लें। १०८ बार ओं नमः शिवाय का जाप उस कपूर को देख कर करें। फिर स्वयं या किसी अन्य को पेट दर्द हो तो उसे थोड़ा खिला दें। दर्द जाता रहेगा।

कपूर न मिलने पर एक कटोरी में जल भरकर कटोरी हाथ में रख लें बाद में उपरोक्त मन्त्र पढ़कर वह जल रोगी को एक साँस में पी जाने के लिए कहें। दर्द ठीक हो जाएगा।

आंत

आंत के लिए शनिवार के दिन लाजवंती पौधे की जड़ लाकर छल्ले के रूप में कमर में बाँधें तो आंत का उतरना बन्द हो जाएगा।

भिण्डी की जड़ भी इसी तरह प्रयोग करें। तुरन्त लाभ होगा।

खांसी

शुक्रवार या मंगलवार को लोबान के पौधे की जड़ लाकर गले में बाँध दें। खांसी में आराम मिल जाएगा।

सिर दर्द

सिर दर्द बहुत अधिक होने पर मजीठ के पौधे की जड़ कपड़े में बाँध लें। फिर उसे माथे पर रख लें। जब सर दर्द समाप्त हो जाए तो जड़ चौराहे पर दक्षिण की ओर फेंक दें।

सिर दर्द दूर होने के बाद एक गिलास ठण्डा पानी पी लें। सिर दर्द काफी समय के लिए टल जाएगा।

पथरी

इस बीमारी से आराम पाने के लिए शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल लाकर इसका छल्ला बनवा लें। इस छल्ले को नीचे की ऊँगली में पहनने से पथरी रोग शान्त हो जाता है।

संग्रहणी

गेहुंअन सांप की पूरी केंचुली को कपड़े में लपेटकर पेट से बाँध लें। यह बीमारी जाती रहेगी।

नींद न आना

आजकल नींद न आने की बीमारी काफी बढ़ गई है। नींद न आने के कारण लोग नींद लाने वाली गोलियों का खुल कर प्रयोग करते हैं। अगर किसी को इस बीमारी से पीड़ित देखें, तो उसे यह प्रयोग बता दें।

बिस्तर पर लेटने के पश्चात शरीर एकदम ढीला छोड़ दें और शनैः शनैः १०० तक गिनती गिनें। उसके बाद सांस रोक कर '**ओं कुम्भ-कर्णाय नमः**' बोलें और सांस छोड़ दें। इस प्रकार १०८ बार करें। प्रारम्भ में थोड़ी बेचैनी तो अवश्य होगी पर नींद आ जाएगी।

फील पाँव

निश्चय ही यह एक भयानक रोग है। आक (मदार) का पौधा

उत्तर दिशा की ओर से तोड़कर रविवार के दिन लाएँ। उसकी जड़ को लाल धागे के सहारे जहाँ यह रोग है, बाँध दें। जब यह रोग ठीक हो जाए तो उस जड़ को कहीं गहरा गाढ़ आएँ।

दाँत पीड़ा

सैहुड़ की जड़ को दर्द वाले दाँत के नीचे दबा लें, दर्द समाप्त जो जाएगा।

दूसरा अनुभूत प्रयोग जो एक सिद्ध पुरुष ने बताया है वह लिख देना अपना नैतिक दायित्व समझता हूँ। इसके लिए पहले तो गायत्री मन्त्र की एक माला कभी भी ग्रहण में जपकर सिद्ध कर लें। उसके पश्चात जब भी कोई दाँत पीड़ा वाला रोगी आए उससे एक कील ३ इंच की मंगवा लें। फिर रोगी को नीम के पेड़ के पास ले आएँ, जिस दाँत में दर्द है, उसे पकड़कर नीम में कील गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए ठोंक दें। दर्द काफी समय के लिए समाप्त हो जाएगा।

बवासीर

१. भेड़ की खाल की अँगूठी गुरुवार के दिन बनाकर उसी दिन मध्यमा अंगुली में पहनें। लाभ होगा।
२. धतूरे की जड़ कमर में बाँधें।
३. साँप की केंचुली बवासीर के मस्सों पर बाँधें। निश्चित लाभ होगा।
४. लाल रंग का धागा निम्नलिखित मन्त्र से अभिमंत्रित कर पैर के अंगूठे में बाँधें। लाभ होगा।

खुरासांकी टहनी सा, अमति-अमति चल-चल स्वाहा।

मिरगी

यह एक असाध्य एवं भयानक रोग है। इसका एक अचूक उपाय मुझे वैष्णों देवी जी की यात्रा के दौरान एक साधू ने बताया था—

१. २१ डलियाँ (छोटी) नमक की लो। फिर उसे रेशमी धागे में बाँधकर गले में पहन लो। लाभ होगा।

२. शुद्ध हीरा, हींग एक तोला पन्द्रह के यन्त्र में भरकर गले में पहनें, लाभ होगा। इसे ढाई घर की चाल से लिखें।

पागलपन-उन्माद

प्रत्येक मंगलवार, शनिवार को संध्याकाल हनुमानजी के चरणों का सिन्दूर पागल के माथे पर लगाते रहिए। शीघ्र ही शुभ फल सामने आएगा।

औघड़ तन्त्र में एक और विधि है। कुत्ते के अगले के पैरों में से किसी एक तरफ का नाखून, कौवे का नाखून और बिच्छू तीनों को ऊंट के चमड़े में सिलकर ताबीज बना लें। फिर रोगी के गले में डाल दें। कुछ समय में ठीक हो जाएगा।

ब्लड प्रेशर

ब्लड प्रेशर के लिए रुद्राक्ष की माला पहनना अति उत्तम है। ध्यान रखें रुद्राक्ष काले धागे में ही पिरोयें। रुद्राक्ष दो, पाँच मुखी और एक छः मुखी होना आवश्यक है।

प्रातःकाल नियम से २१ बार **'ओं मंगलग्रह देवाय नमः'** का जाप करें। जब तक इस मन्त्र का जाप करें, तब तक नमक का

सेवन कम से कम करें।

नेत्र दोष

आँखों के सभी प्रकार के विकारों और नजर कमजोर होने पर गोरख-मुण्डी का पौधा उखाड़ लाएँ। फिर घर लाकर जल से धोकर सुखा लें। चार-पाँच दिन बाद जब यह सूख जाए तो कूट-पीस कर उसका चूर्ण बना लें।

रात को सोते समय एक चुटकी लोटे में डाल दें। प्रतिदिन प्रातः उठकर उस जल से आँखों को धो लें। इससे सभी प्रकार के आँखों के रोग समाप्त हो जाते हैं।

इस चूर्ण की एक चुटकी दूध में डाल दें और इस दूध को पी लें। इससे शरीर शक्ति का विकास होता है, चेहरे पर अपूर्व कान्ति आ जाती है।

लम्बे घने बाल

काले रंग के घोड़े की लीद जला लें। भस्म बन जाने पर उसकी राख को शुद्ध तिल्ली के तेल में मिलाकर बालों की मालिश करें और लगातार यह तेल लगाते रहें। इसके नियमित प्रयोग से बाल लंबे चमकीले और घने होंगे।

गंजापन

बहुत से स्त्री-पुरुषों के सिर के बाल असमय उड़ जाते हैं। इस प्रकार बालों का झड़ना या टूटना गंजापन कहलाता है।

औघड़ तन्त्र में इसके लिए एक विचित्र प्रयोग है। इस प्रयोग

को सम्भवत: घृणा या गंध के कारण करने में लोग हिचकते हैं। विधि में बतलाया गया है कि गधे के सिर की हड्डी को जैतून के तेल में घिस कर लेप बनाएँ और गंजे स्थान पर लगाकर रात को सो जाएँ। प्रात: काल सूर्य की ओर मुख करके लेप को धो लें।

थकावट दूर करें

यात्रा से उत्पन्न थकावट, कार्य से उत्पन्न थकावट को दूर करने के लिए ठण्डे पानी से दोनों पैर धो लें। तुलओं में हल्के-हल्के निम्न मन्त्र का जाप करते हुए हाथ फेरे। हाँ फट्! थोड़ी देर में थकावट दूर होकर स्फूर्ति का संचार होगा।

फोड़े-फुन्सी

शरीर में प्राय: फोड़े-फुन्सी हो जाया करते हैं, वह पक जाते हैं। मवाद निकलती है। फिर उनका मुँह बन्द हो जाता है। कुछ समय बाद फिर मवाद बन जाता है। इस प्रकार के फोड़े-फुन्सी जब तक न जाएँ और मवाद न निकल जाए तो फुन्सी के मुँह पर केले के पत्ते पीस कर बाँध दें। जब घाव ठीक हो जाए तो, यह लुगदी गहरे पीले कपड़े में लपेट कर जमीन में गहरे में दबा दें।

मासिक धर्म

मंगलवार के दिन लगभग ६ ग्राम शुद्ध धनिया लेकर किसी कलई किए गए पीतल के बर्तन में आधा किलो पानी में डाल कर पकाएँ। जब पानी आधा रह जाए तो उतार लें और उसमें दो सौ ग्राम मिश्री मिला दें। अब इसे वृहस्पतिवार से प्रारम्भ कर रविवार तक

थोड़ा-थोड़ा पिलाएँ मासिक धर्म नियमित हो जाएगा।

पसली, कमर दर्द

जिन व्यक्तियों के पसली या कमर दर्द रहता हो, वह सायंकाल डूबते सूरज की ओर मुख कर वहाँ जहाँ दर्द हो कमर या छाती पर उस भाग को खोलकर नीम की टहनी से २१ बार स्पर्श कराएँ और निम्न मन्त्र बोलते रहें **ओं भैरवाय नमः** इसके पश्चात टहनी को कुँए या तालाब में फेंक दें।

चक्कर, दौरे

बहुत से स्त्री पुरुषों को अचानक दौरे पड़ते हैं या चक्कर आते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसका मुख्य कारण मानसिक दुर्बलता बतलाया गया है। प्रायः बीमारी से उत्पन्न दुर्बलता के बाद इस तरह होता है। इसके लिए तन्त्र में यह उपाय बताया गया है- रोगी व्यक्ति सूर्योदय के समय उठे और सूरजमुखी का फूल लेकर अपने माथे पर घिसे।

रोगी को चाहिए कि फूल घिसते समय **ओं सूर्याय नमः** का जाप करता रहे। इसके तुरन्त बाद स्नान कर लें। स्नान के पश्चात कुछ समय सूर्य की रोशनी में खड़े रहें। अगर सम्भव हो तो थोड़ी ताजा क्रीम पी लें। बीमारी में पर्याप्त लाभ होगा।

हकलाना

प्रायः देखा गया है कि जो लोग हकला कर बात करते हैं, वह शीघ्र ही हीनता की भावना के शिकार हो जाते हैं। जो व्यक्ति इस

दोष से ग्रसित हैं, वह निम्न उपाय करें। माँ सरस्वती के आशीर्वाद से वह इस रोग से मुक्ति पा लेगा।

हकलाने वाला व्यक्ति प्रत्येक सोमवार व शुक्रवार को सूर्योदय से पूर्व उठे। पवित्र होकर वह उत्तर, दिशा की ओर मुख करके बैठ जाए और '**ओं सरस्वत्यै नमः**' का जाप कम से कम एक सौ आठ बार करें।

जाप से पूर्व एक गिलास में जल सामने रख लें। जाप के बाद उसे पी लें। इसके बाद सायंकाल ३ छोटी सुपारियाँ अपने ऊपर उतार कर दक्षिण दिशा में फेंक दें।

मस्सा

कई बार शरीर के ऐसे स्थान पर विशेष रूप से मुख पर मस्सा निकल आता है जो बहुत ही अप्रिय लगता है। आपरेशन (शल्य क्रिया) के द्वारा इसको हटाया जा सकता है पर तन्त्र में इसके कई उपाय बताए गए हैं—

१. काला मारू बैंगन लें। उसे चीर कर दोनों भागों को आपस में रगड़ें, इससे जो झाग उत्पन्न हो वह मस्से वाले भाग पर लगाएँ। यह बीमारी दूर होगी।
२. रविवार की सायं मारू बैंगन ले लें। रात को मारू बैंगन, काले तिल, साबुत काली उड़द और काला कपड़ा यह सब बस्तुएँ सिरहाने रखकर सो जाएँ सोमवार की प्रातः इन्हें किसी नदी में प्रवाहित कर दें।
३. प्रातःकाल उठकर अपना स्वयं का थूक मस्से पर लगा ले। पान की डंडी से उस मस्से को रगड़ें। मस्सा कट

जाएगा और फिर दुबारा नहीं होगा।

मुंहासे

यौवनकाल में या शरीर की अतिरिक्त गर्मी के कारण प्राः मुंहासे (कीलें) हो जाया करते हैं। यह पकने पर फूटते हैं। इनव अगर ठीक उपचार न किया जाए तो चेहरे पर काले निशान डालव व्यक्तित्व का नाश कर देते हैं।

तन्त्र में कहा गया है कि ११ ग्राम चिरायता पाँच सौ ग्रा पानी में खौला कर जब कुछ गाढ़ा सा बन जाए तो उसमें थोड़ा गंगाजल डाल दें। इस काढ़े का नियमित प्रयोग करें। महिला मासि धर्म के मध्य इसका प्रयोग न करे।

सफेद दाग

यह बड़ी ही मनहूस बीमारी है। इस बीमारी को कोढ़ कहते हैं, पर वास्तव में यह कोढ़ नहीं है। इसका रूप रंग कोढ़ समान होता है। इस कारण यह भ्रम फैला है। तन्त्र में इसके लि निम्न उपाय हैं—

१. कपास के पत्तों को पीस कर रस निकाल लें। इस रस प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व सफेद दाग पर लगाएँ, सूख ज पर ताजे पानी से धो लें। इस चिकित्सा के मध्य केव गाय का घी प्रयोग करें।

२. प्रातः सोकर उठते ही बिना कुल्ला किये अनटोक अ थूक दाग पर लगाएं। दाग ठीक हो जाएँगे।

कर्ण पीड़ा

किसी भी प्रकार की कर्ण पीड़ा में प्रातःकाल उठकर सूर्य को नमस्कार करें।

फिर उत्तर की ओर मुख कर प्राणायाम करें। आसन करते समय कानों को अंगुलियों से बन्द कर लें, केवल श्वांस छोड़ते समय कानों की अंगुलियाँ हटा लें।

प्रत्येक बार जोर से उच्चारण करें '**ओं वासुदेवाय नमः**' इससे कानों के रोग से मुक्ति मिलेगी।

नेत्र पीड़ा

नेत्र पीड़ा के मध्य प्रातःकाल उठकर सूर्य को नमन करें। उसके बाद सूर्यमुखी का फूल सूँघे तथा शुद्ध गुलाब जल आँखों में डालें। इस प्रयोग से नेत्र पीड़ा समाप्त होती है।

हिस्टीरिया

यह रोग प्रायः स्त्रियों को होता है। मेरा स्वयं का अनुभव है कि यह रोग अविवाहिता एवं सन्तानहीन स्त्रियों को होता है। इसमें रोगी के दाँत कस जाते हैं और शरीर ऐंठ जाता है। बड़ी कठिनाई से होश आता है।

इस प्रकार का दौरा पड़ने पर हल्दी या प्याज सुंघाने से लाभ होता है।

हिस्टीरिया का दौरा न पड़े, इसके लिए प्रत्येक रविवार को गौ का पूजन और चन्द्रमा के दर्शन करें।

दस्त

यह शरीर की खराबी, पाचन क्रिया की गड़बड़ी से हो जाया करते हैं। इसके बहुत से अच्छे डाक्टरी उपचार हैं। सर्वप्रथम इसको ही कीजिए। जब देख लें कि किसी प्रकार से कमी नहीं आ रही है तो निम्न प्रकार तांत्रिक उपाय करें—

सर्वप्रथम सफेद कागज पर एक चौकोर आकृति बनाएँ। इसके पश्चात इस चौकोर आकृति के चारों कोनों पर सेंधा नमक की छोटी-छोटी लगभग बराबर-बराबर वजन की डलियाँ रख दें। मध्य भाग में ७ काली मिर्च रख दें। उन पर '**अश्विनी नमो नमः**' का उच्चारण २१ बार दोहराएँ।

इसके पश्चात इन सब वस्तुओं को उठा लें। इन सबको पीसकर चूर्ण बना लें और दिन में तीन बार खाएँ। यह क्रिया केवल मंगलवार अथवा शनिवार को ही करें।

व्यापार में सफलता

कई बार ऐसा होता है कि व्यापारी उद्योग से अत्यन्त सफलता पाकर नया उद्योग करने के लिए उत्साहित होता है। ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं जब पुराना उद्योग तो यथावत चलता रहता है, पर नया उद्योग जी का जंजाल बन जाता है। तब ऐसी दशा में यह प्रयोग करें। शनिवार के दिन पुराने कार्यालय से कोई भी लोहे की वस्तु अपने नए प्रतिष्ठान में लाकर रख दें। रखने से पूर्व उस स्थान पर थोड़े से काले उड़द की दाल डाल दें। यह ध्यान रहे कि वस्तु बार-बार हटाई न जाए। इस प्रकार टोटका करने से पुराने उद्योग के साथ नया उद्योग भी चल निकलने की सम्भावना बनती है।

साझेदारी के लिए

व्यापार में साझेदारी का चलन बहुत प्राचीन है। यह साझेदारी दो व्यक्तियों में हो सकती है या फिर अनेक व्यक्तियों में साझेदारी बनाए रखने के लिए या फिर ऐसी किसी जटिल स्थिति को टालने के लिए यह टोटका अपनाएँ—

किसी भी दीपावली की रात को कच्चा सूत ले आएँ। उसे लक्ष्मी के आगे श्रद्धापूर्वक बटें। रोली के छींटें भी लगाएँ। इसके पश्चात् व्यापार स्थान पर कहीं ऊपर टांग दें। प्रयत्न करें कि हर दीपावली की रात यह क्रिया दोहराई जाती रहे। ऐसा करने से साझेदारी बनी रहेगी।

स्थायी कर्मचारी

एक सज्जन ने प्लास्टिक के खिलौने बनाने के एक छोटा सा कारखाना लगाया, कारखाना तो ठीक चल रहा था, पर कर्मचारी बराबर भागते रहते थे। इस कारण मालिक को नया कर्मचारी खोजने में काफी परिश्रम करना पड़ता था। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए एक साधु ने एक सरल टोटका बताया। जिससे उन्हें काफी लाभ हुआ। वह नीचे लिखा जा रहा है।

किसी शनिवार को कारखाने की ओर आते हुए मार्ग में पड़ी कोई लोहे की नाल अथवा कील उठा लें।

कारखाने में लाकर उस कील को प्रथम गाय के मूत्र से तत्पश्चात् गंगाजल से धोकर उस स्थान या कमरे में ठोंक दें जहाँ कर्मचारी काम करते हों। उस कील के कारण अचानक कर्मचारियों का भागना बंद हो जाएगा।

आलस्य

दिल्ली में एक सज्जन हैं। उनका अच्छा खासा चलता व्यापार है। अनेक व्यक्ति काम करते हैं, पर लाख प्रयत्नों के बाद भी वह व्यापार से अधिक लाभ कमाने की स्थिति में नहीं थे। इसका कारण उनका आलस्य था। आलस्य कोशिश करके भी नहीं हटा पा रहे थे अन्ततः एक विधि का प्रयोग आप भी करके देखें।

मंगलवार के दिन लाल मूँगा ले आएँ। उसी दिन उसे सुनार से जड़वा लें इसके पश्चात् "**राम दूताय हनुमान नमः**" का जाप कर पहन लें। ईश्वर की कृपा से एक माह के अंदर आलस्य दूर भाग जाएगा और काफी कार्यकुशलता बढ़ती जाएगी।

सफलता

जीवन में प्रायः मनुष्यों को ऐसी जटिल स्थिति का सामना करना पड़ता है जब अनेक प्रयत्नों के बाद भी कार्य सफल होता नजर नहीं आता है।

निम्न वस्तुएँ इकट्ठी कर लें—सात हल्दी की साबुत गाँठें, ७ जनेऊ, ७ सुपारियाँ, ७ पीले फूल और सात लड़के।

वृहस्पतिवार के दिन यह सब वस्तुएँ लड़कों को छोड़कर एकत्रित कर लें और इनको किसी पीले वस्त्र में एक साथ बाँध लें।

अब बच्चों को थोड़ा-थोड़ा पीला वस्त्र और कुछ पैसे देकर विदा करें और वह पोटली घर में लाकर किसी भी निजी स्थान पर रख दें।

इसके पश्चात इन वस्तुओं को पीसकर सोने या ताँबे के एक ताबीज में भर कर पहन लें। धीरे-धीरे काम करने की इच्छा स्वयं ही जाग्रत हो जाएगी।

असफलता

अगर आपके अधिकतर कार्य असफल होते हैं या कार्य अनेक विघ्न-बाधाओं के बाद ही संपन्न होते हैं तो आप इस तन्त्र को करें। आपके अधिकतर कार्य बन जाएँगे। कम परिश्रम से अधिक लाभ अर्जन करेंगे।

प्रात:काल में जब सूर्य जब चढ़ रहा हो तो इस टोटके को कर सकते हैं। सूर्य जब ढलने लगे तो यह टोटका प्रभावशाली नहीं रहता। सर्वप्रथम आप सूर्य को नमन करें, इसके बाद कच्चा सूत लेकर उस पर निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए साथ गाँठ लगाएँ। अब आप इस सूत को कमीज की सामने वाली जेब में रख कर चले जाएँ बिगड़ा कार्य सिद्ध होगा और उस दिन काम बनते चले जाएँगे। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं गं गणपतये नमः। कार्य में रुकावट समाप्त कर।

अगर कोई व्यक्ति आपके काम में रुकावट डाल रहा हो तो आप निम्न टोटका अपनाएँ। सारी बाधाएँ दूर हो जाएँगी।

अपना नाम लेकर एक-एक लौंग सात बार जमीन पर फैंके और बाद में गहरी दबा दें। आपकी सारी विघ्न बाधाएँ समाप्त हो जाएँगी और वह व्यक्ति आपके अनुकूल हो जाएगा।

कार्य कुशलता की कमी

अगर आप काफी समय से यह अनुभव कर रहे हैं कि आप के लाख प्रयत्न करने के बाद भी आपकी कार्य कुशलता दिन-ब-दिन घटती जा रही है और आपका यह सन्देह विश्वास में बदल गया है कि किसी ने कुछ करा रखा है या कुछ स्वयं हो गया है तो निम्न क्रिया करें। शीघ्र लाभ होगा।

प्रत्येक मंगलवार को हनुमान मन्दिर जाएँ और हनुमानजी के हाथों में से थोड़ा सा सिन्दूर ले आएँ।

सर्वप्रथम माथे, फिर बाहों पर और अन्त में छाती पर लगाएं साथ ही निम्न मन्त्र का जाप करें आपको चमत्कारी लाभ प्राप्त होगा

ओं श्रीहनुमते नमः ओं नमोहरी संकट मर्कटाय स्वाहा
ओं श्री श्री पवननन्दाय स्वाहा
ओं नमो हनुमते आवेशय स्वाहा
ओं नमो भगवते आंजनेमाय स्वाहा
महाबलाय स्वाहा हूँ पवननन्दाय स्वाहा
श्री हनुमान की जय।
ओं हूँ हनुमते रुद्रत्मकाय हुम फट्
हनुमते रक्षा सर्वदा ओ हनुमते नमः ओ अंजनी सुताय
विग्रहे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो मारूति प्रचोदयात।

बेरोजगारी

आप काम की कमी से दुःखी और परेशान रहते हैं और आप काफी हीनभावना का अनुभव करने लगे हैं, तो आप यह टोटका अपनाएँ। इसके प्रभाव से काम मिलने की सम्भावना है।

एक बेदाग बड़ा सा नीबू लें। इसके चार बराबर-बराबर टुकड़े कर लें। दिन ढले किसी चौराहे पर जाकर चारों दिशाओं में फेंक दें। काम का अभाव समाप्त हो जाएगा।

कमजोरी-बीमारी

अगर आप यह अनुभव करते हैं कि बीमारी के कारण आप

चाह कर भी काम नहीं कर पाते हैं तब आप पुष्य नक्षत्र में अभिमन्त्रित सहदेवी की जड़ लाकर अपने पास रखें। इस समस्या से छुटकारा मिल जाएगा।

आलस्य

कटेरी की जड़ शहद में पीस कर केवल सूँघने मात्र से आलस्य दूर हो जाता है। यह समय-समय पर आजमाया टोटका है।

सर्वजन वशीकरण

इस यन्त्र को पत्थर पर लिखकर चूल्हे में गाढ़ दें कुछ समय तक गड़ा रहने दें जिसे वश में करना हो उसका व उसकी माँ का नाम इस पर लिखें, तो यह खाली नहीं जाएगा।

=	॥	=	॥
॥	=	॥	=
=	॥	=	॥

इस यन्त्र को पीपल पर लिखकर या खोदकर जुमे की नमाज पढ़ें तथा लोबान की धूनी देकर अनार के पेड़ पर लटका दें फिर प्रेमी या प्रेमिका का ध्यान करें तो एक-दो दिन के भीतर वह अवश्य मिलेगी।

मृतक की राख और बच अगर यह चीजें पीसकर मिला लें फिर जिसका वशीकरण करना हो उसके पैर के नीचे इसी को डालें और अगर स्त्री को वश में करना हो तो उसके सिर के ऊपर इसी को डालें। इससे वह वश में होगी।

मंगलवार को अपने बीसों नाखून काट कर उसे गुलाब के फूलों व केशर में भिगो १००१ बार '**ओं ऐं ई ऊं अमुकं वश्यं वश्यं ओं ई ऐं फट्**' का जाप करें फिर इसे ही बोलकर आग में जला दो। वह राख जिस पर डालोगे वो तुम्हारा मित्र होगा।

स्त्री के बाल लाएँ फिर अपने वीर्य में मिलाकर अपनी इन्द्री पर मलें फिर जिस औरत के साथ सहवास करें वह दासी बन जाएगी।

गोरोचन, केले का रस, रजस्वला का रक्त मिलाकर तिलक करें, जो देखेगा, वह वशीभूत हो जाएगा।

तालीम कट तगर कूट कर रस निकाल कर उसमें रेशमी कपड़े रंगे और छाया में सुखा लें। फिर उसकी बत्ती बना लें तथा सरसों के तेल में डालकर दीपक जलाएँ। दीपक के ऊपर मनुष्य की खोपड़ी औंधा कर काजल पालें उसमें रसौत तथा नीम के पत्ते, गुलाब के फूल मिलाकर काजल लगायें इसे लगा कर औरत वश में हो जाएगी।

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में सुदर्शन की जड़ को लाकर उसमें देशी कपूर निदापत्र मिलाकर वस्त्र पर लेप करें, छाया में सुखा लें फिर बत्ती बनाकर विष्णुकांता के बीजों का तेल निकाल के दीपक में डालकर बत्ती को उसमें डालकर जलाएँ काजल पार फिर नेत्रों में लगाकर कचहरी में जाएँ तो हाकिम वशीभूत होता है।

उल्लू या घुग्घू पक्षी की बीट को पान में शत्रु को खिलाएँ तो वशीभूत हो।

बन्दर की विष्ठा अगर शत्रु पर छिड़के तो शत्रु भी वशीभूत हो जाएगा।

सहदेवी औंगा के रस को त्रिलोह के पत्र में घोटकर तिलक लगाने से दुश्मन वशीभूत होता है।

वशीकरण प्रयोग

वशीकरण का सीधा शाब्दिक अर्थ है, किसी को अपने वश में करना अर्थात उस पर इतने अधिक हावी हो जाना कि वह कठपुतली के समान आपके इशारे पर नाचना शुरू कर दे।

वशीकरण एक प्रकार से सम्मोहन का परिष्कृत रूप है। सम्मोहन में वह क्रिया विशेष द्वारा आदमी किसी को अपने संकेतों पर चलाता है। हम जो भी देखते या सुनते हैं, उसका हमारे संकेतों मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव तत्काल होता है।

आपके सामने एक छोटा सा बच्चा यकायक किसी तेजगति से आते समय बच्चा नीचे गिर जाए (ईश्वर करे ऐसा कभी न हो) तो उसी समय बच्चा तो दूर, बिना चोट लगे आप भी चीख उठेंगे, हाय मर गया और आप थर-थर कांप उठेंगे। चोट लगी बच्चे को, शिकार हुआ बच्चा, चीखे घबराए पथराए आप। आपने देखा आपके दिल और दिमाग पर सीधा प्रभाव हो गया। आप लाख प्रयत्न करने पर भी उस चीख घबराहट को रोक नहीं सकते। संसार में भला ऐसा कौन व्यक्ति है, जिसके सामने इस प्रकार की दुर्घटना हो वह अप्रभावित रह जाए।

आपको किसी ने अपशब्द कहे, आपने सुने··· तत्काल आपका चेहरा लाल हो उठेगा, आपका खून खौल गया। आप गुस्से से भर जाएँगे। उस समय आप अपने ऊपर काबू नहीं रख सकते हैं।

यह स्वाभाविक क्रियाएँ कहलाती हैं। आदमी का इन पर वश नहीं चलता और वह वशीभूत हो जाता है, तो वही वशीकरण है।

आँखों देखी, कानों सुनी क्रियाओं के कारण आदमी वशीभूत होता है।

आपने एक सुन्दर युवती को देखा, देखते रह गए। सुन्दर वस्तु देखी, देखते रह गए। आपके मुंह से अनायास ''वाह'' निकल गया। एक संगीत सुनकर आप वहाँ रुक गए। मधुर स्वर सुनकर आप मुग्ध हो गए। यह सब वशीकरण का प्रभाव कहलाता है। वशीकरण में वशीभूत व्यक्ति जिसके प्रभाव में रहता है, उसकी इच्छानुसार काम करने लगता है।

इसी क्रिया के गुण के कारण प्रत्येक यह इच्छा रखता है कि उससे सम्बन्धित व्यक्ति उसके वश में हो, उसकी आज्ञानुसार चले, उसकी हर बात माने उसकी इच्छापूर्ति करे, इसके लिए वह नाना प्रकार के उपाय करता है। एक प्रकार से वह प्रभावित करने की चेष्टा करता है।

अपने पहनावे से, अपनी शाहखर्ची, अपनी प्रतिभा, अपनी योग्यता, अपनी बाँकी अदा, आशय है कि वह इच्छित व्यक्ति को वश में करना चाहता है। यह उसका स्वभाव नहीं होता है, वह क्यों छटपटाता है। एक युवती है, उस पर एक पुरुष मोहित है, उसे अपने वश में करना चाहता है, उधर उसका हर संभव प्रयोग असफल हो रहा है, तो वह एक उपाय का सहारा लेता है। यह उपाय कोई भी हो सकता है।

क्या कोई ऐसा उपाय नहीं है कि वह मनुष्य के व्यक्तित्व, क्रियाकलाप तथा गुणों का प्रभाव सम्बन्धित युवती पर डाल सके

और उस युवक को सफल बनाया जा सके। इस प्रश्न और चिंतन ने वशीकरण को जन्म दिया है। उपरोक्त दशा में वशीकरण का प्रयोग कर अपनी इच्छापूर्ति कर सकते हैं।

भला यह कैसे सम्भव है? इस प्रकार की क्रिया सम्भव है तो फिर संसार का हर आदमी अपना काम बना ले। बात ठीक है, पर इसका अपना औचित्य है। आंखों देखी, कानों सुनीं, अप्रत्याशित बातें जिस प्रकार हो जाती हैं वही मनोदशा अन्य प्रकार से भी तो हो सकती है।

वशीकरण का सारा सिद्धान्त इसी रहस्य में है। इस प्रकार विधियाँ या टोटके खोज निकाले गए हैं कि जिनके प्रयोग से सम्बन्धित व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है। इसमें एक शर्त है कि सम्पूर्ण इच्छा और मनोभावनाओं का भी प्रयोग करना पड़ेगा। हृदय की गहराइयों के साथ इस कार्य के प्रति तीव्रतम लगाव आवश्यक है। यह मनोदशा और टोटके मिलकर अपना प्रभाव दिखाते हैं। दोनों का ही यह मेल मिलकर अपना रंग जरूर लाता है।

वशीकरण के लिए यह एक आवश्यक शर्त है। बिना टोटके का उपयोग निष्फल हो जाता है।

वशीकरण के सम्बन्ध में इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि इसके द्वारा आप किसी का अनिष्ट न करें। किसी का अहित करने के लिए यह क्रिया नहीं है। ऐसा करने पर सम्भावना इस बात की है कि आपका ही अहित न हो जाए।

इस क्रिया का भी उद्देश्य किसी को हानि न पहुँचा कर अपना काम बना लिया जाय अर्थात उससे बंध न जाए। मालिक नौकरी बनाए रखें, तरक्की दे दे, इच्छित वस्तु प्राप्त हो, डूबा धन या

उचित कर्ज मिल जाए, गया मीत या परिजन वापिस आ जाए आदि अनेक प्रकार के कार्य वशीकरण के अंतर्गत आते हैं। अपना बिगड़ा काम आप भी बना सकते हैं।

वशीकरण किसो को मुग्ध कर उसको लूटने, हत्या, बलात्कार, अपहरण, शील हरण, डाका डालने के लिए नहीं है। अपने रुके हुए केवल अच्छे काम बनाने के लिए है। पूरी ईमानदारी के साथ ही इनका प्रयोग कर आप मनवांछित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

वशीकरण प्रयोग

किसी भी व्यक्ति को, पति या पत्नी को, प्रेमी या प्रेमिका को अपने वश में करने के लिए यह प्रयोग किया जाता है। इस प्रयोग का कोई दुष्प्रभाव नहीं होता, जिस पर यह प्रयोग कर रहे है, वह हमारे अनुकूल हो जाता है। एक भोजपत्र पर कामिया सिंदूर से उस पुरुष अथवा स्त्री का नाम लिख देना चाहिए। जिसे हमें वश में करना है। फिर अभिमन्त्रित स्फटिक की माला से निम्न मन्त्र का जप ११०८ बार करना चाहिए।

ओं नमो सुन्दरी आगच्छ गच्छ फट् स्वाहा।

जब मन्त्र पूरा हो जाए तो मध्य रात्रि में उस माला को किसी चौराहे पर रख देना चाहिए और भोजपत्र पर जो कामियां सिंदूर से स्वयं को तिलक कर भोज पत्र को पश्चिम दिशा की ओर फेंक देना चाहिए। ऐसा करने पर प्रयोग सफल होता है और साध्य कुछ ही दिनों में हमारे सामने होता है।

टोटके

बुधवार के दिन एक फूलदार लवंग लाकर किसी भी पेड़ या

पौधे के नीचे थोड़ा दबा दें। अब सात दिन नियमित रूप से किसी भी समय उस पर मूत्र त्याग करें। ध्यान रहे कि दिन में केवल एक बार ऐसा करना चाहिए। आठवें दिन उस लंवग को निकाल लें। इस लौंग का चूर्ण बनाकर इच्छित व्यक्ति को खिला दें। वह वश में हो जाएगा। यह क्रिया केवल दो बार दोहराएँ।

दो साबुत फूलदार लवंग लें। उस पर अपनी जीभ का मैल लगाकर पान में डालकर खिला दें। साथ ही निम्न मन्त्र का १०८ बार जाप कर लें तो वशीकरण होगा।

ओं हुं हुं हुं चैतन्य स्वर्ण देह
योवनागम हुं हुं हुं फट्

रविवार के दिन चार लवंग जो खण्डित न हों, ले आएँ एक लौंग अपने किसी भी स्थान में २४ घंटे रखें। २४ घंटे के बाद उस लवंग को निकाल लें उसके बाद एक लवंग के दो टुकड़े कर लें और उन्हें वापिस जोड़कर शेष लौंगों को रख दें। अब निम्न मन्त्र का जाप करें, वशीकरण होगा। यह क्रिया केवल रविवार को ही होती है। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो आदेश गुरु का लौंग तू मेरा भाई
तुम्हारी शक्ति चलाई
पहली लौंगराती दूजी लौंग जोखइम माती,
तीजी लौंग अंग में रखें,
चौथी दुई कर जोड़े चारों लौंग
जो मेरी खाए 'अमुक' झट मेरे पास आए आदेश
देवी कामरूप कामाख्या की दुहाई फिरें।

एक अखण्डित भोजपत्र का टुकड़ा ले लें। उसके ऊपर उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिसका वशीकरण करना है, ध्यान रहे यह नाम केवल चन्दन से लिखना है, जिसमें गंगाजल मिला हो। अब उस भोजपत्र के साथ एक साबुत लौंग रख लें। इन सब वस्तुओं को पीस लें। जिसका नाम लिखा है उसके नाम में जितने अक्षर हैं उतनी ही गोलियाँ बना लें। अगर सम्भव हो तो इन गोलियों को सात रात अपने बाईं सिरहाने रखकर सोयें। इसके बाद नियमित रूप से नियम से जिसका वशीकरण करना है, उसके घर के द्वार पर डालते रहें, शीघ्र ही वशीकरण होगा।

पुनः सम्बन्ध सुधारने हेतु

प्रायः देखा गया है कि विवाह तक तो सम्बन्ध मधुर रहता है, पर विवाह के बाद सम्बन्धों में कटुता आ जाती है। इस कटुता में दोष लगभग दोनों पक्षों का समान रूप से होता है। अगर विवाह के पश्चात सम्बन्धों में अति कटुता आ गई हो और स्थिति अलहदगी तक पहुँच गई हो तो निम्न क्रिया करें—

कोई भी हरा पत्ता ले लें इसके बाद चन्दन को गंगाजल में घिसकर उस व्यक्ति विशेष का नाम लिखें। उसके ऊपर कुछ लाल गुलाब की पत्तियाँ रख दें। इन सबको बारीक पीस लें। भली भांति पीसकर नाम में जितने अक्षर हों, इतनी ही गोलियाँ बना लें। अब एक गोली नियम से जिसका भी वशीकरण करना है उसके घर के मुख्य द्वार पर फेंक दें। शीघ्र ही बिछोह समाप्त होगा और मिलन होगा।

आकर्षण हेतु

गेंदे के फूल लें। उसे पूजा के स्थान पर रख कर हरिद्रा के दो-चार छींटे मार दें। अब गेंदे के फूल को गंगाजल में बारीक पीस लें। जाते समय इसका तिलक ललाट पर करें। जहाँ भी जाएँगे, सामने वाला वशीभूत होगा। यही क्रिया प्रेमिका या प्रेम से प्रथम बार मिलने जाते समय भी की जा सकती है।

एक लट्ठे का सफेद टुकड़ा ले लें। उस पर निम्न प्रकार से यन्त्र लिखें—

बहक अजहड़

१४	१९	१२
१३	१५	१७
१८	११	१६

बहक लह अजहड़

इसके पश्चात अलसी के तेल में इस टुकड़े को भिगो कर फिर भस्म कर दें। अब इस भस्म को साथ लेकर चले जाएँ जिस व्यक्ति से भी मिलोगे वह वश में रहेगा और आपका कार्य करेगा।

शुक्ल पक्ष के सोमवार के दिन केशर, चिरमिरी और गाय का दूध एक में मिलाकर सांयकाल किसी पन्द्रह के यन्त्र को विलोम रीति से लिखें पश्चात भुजा या कंठ में बांधे तो वशीकरण हो। अगर मंगलवार के दिन सारस पंख की कलम से और उसके खून से कफन पर यन्त्र व दुश्मन का नाम लिखकर दुश्मन के द्वार की भूमि खोदकर गाड़ दें, तो उच्चाटन हो जाता है।

ओं तंष्फुतिक विक्रम चांचिक
विद्वान माधव न रफ जो ठः ठः।

कृष्ण पक्ष के रविवार को जिस दिन अमावस्या पड़े, उस दिन आधी रात के समय ऊंट के चर्म पर बैठकर स्फटिक की माला पर दुश्मन के नाम पर उक्त मन्त्र की १०८ माला का जाप करें, तो उच्चाटन होता है।

★ ★ ★

ओं बैताल चच्छ यच्छ क्षं क्षी क्षूँ क्षै क्षः स्वाहा।

घुग्घू का सिर लाकर मन्त्र पढ़कर दुश्मन के सिर पर डाले तो उसे उच्चाटन हो तब नीबू की लकड़ी, घुग्घू की हड्डी, बिल्ली के नख, धतूरे का बीज और शमशान की हड्डी सबको एकत्र कर दुश्मन के घर में डालें तो उसका उच्चाटन हो। मन्त्र उपरोक्त पढ़ें।

★ ★ ★

ओं नमो भगव्यै ही स्वेतवासे नमो नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का दस हजार बार जप करना चाहिए। तिल में शुद्ध घी मिलाकर दशांश हवन करें, फिर चिरचिरी की जड़ उखाड़ लें। उसको सफेद चन्दन में घिसकर लेप करें तो जो देखे उसका मन उच्चाटन होकर वश में हो।

क्रय विक्रय में लाभ हेतु

मेषसिंधा, बक, खस, राल, चन्दन और छोटी इलायची यह सब समभाग लेकर कूट छानकर रख लें। जब जरूरत हो तब पहिनने के कपड़ों को लेकर उसमें इनकी धूनी दें तो क्रय तथा विक्रय में लाभ होगा।

सिद्धि दाता यन्त्र

इसके सिद्ध होने पर साधक को हर कार्य में सफलता होती है। अगर प्रतिदिन प्रात: शुद्ध होकर पन्द्रह का यन्त्र लिख लिया करें तो उससे यश की वृद्धि होती है।

उसके सिद्ध करने की रीति यह है कि सोमवार के दिन प्रात: शुद्ध होकर हवन करें और इष्ट का नाम लेकर अपने कार्य की ओर लक्ष्य बनाकर कागज पर यन्त्र लिखें व उसे धूपित करें। फिर उसे सन्दूक में रख दें। इस प्रकार २१ दिन तक करें तो साधक को हर कार्य में सफलता होगी। यदि उसे चाँदी में मढ़वाकर गर्दन या बाजू पर बाँध लें तो हर समय रक्षा करेगा। यन्त्र इस प्रकार है—

ला	हामीम	
	ला	अ
म		अह

वशीकरण

निम्न यन्त्र को देशी कपूर, कस्तूरी, गोरोचन और चन्दनादि की स्याही से चमेली की कलम में भोजपत्र पर लिख सुगन्धित द्रव्यों से पूजन कर चाँदी के यन्त्र में भरकर बाँह में बाँध लें, तो जिसके पास जाएँ वह वशीभूत हो। यन्त्र इस प्रकार है—

ओं व जे हीं ड
ड हीं ओं ड व
ड जगत व हट्टी

पीर का कलमा

कुएँ की मंडेर पर रात के समय एकान्त स्थान पर निम्न मन्त्र को लोबान की धूप देकर प्रतिदिन ११०८ बार उल्टी माला पर जपने से इकत्तीस दिन के भीतर पीर स्वयं उपस्थित होकर हर प्रश्न का उत्तर देते हैं।

या जरब्बाज खिज्ज में तेरा इलियांस।
लिल्लाह मकादि चित्त मेरे पास॥

★ ★ ★

वशीकरण मन्त्र

"ओं तातुम्बरी दह दह भाल माल आं आं हुं हुं हुं हुं हे काल कमानि कोठि कोठिया ओं ठः ठः।"

हंस का बड़ा पंख, चोचनी का फूल तथा प्रातः दूध की खीर बनाकर मन्त्र पढ़कर अग्नि में खीर की आहुति दें, तत्काल कार्य सिद्ध होगा।

★ ★ ★

कार्य सिद्धि हेतु

आगे लिखे यन्त्र को कागज पर हरिद्रा से लिखें और उसके नीचे मनोरथ लिखकर पलीता बनाकर रविवार को दिया जलाएँ। इस तरह सात रविवार करें, सो सब दुःखों का नाश हो और पीली माला से निम्नलिखित मन्त्र की ३१ माला जपें।

यन्त्र इस प्रकार है—

"ह्रीं ह्रीं सः"

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	२

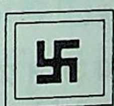
ग्राहक वृद्धि हेतु

शुक्लपक्ष के वृहस्पतिवार (गुरुवार) से यह क्रिया आरम्भ करें और हर वृहस्पतिवार को बिना विघ्न दोहराते जाएँ।

टोटका निम्न प्रकार है—

घर या व्यापार स्थल के मुख्य द्वार के एक कोने को गंगाजल से धो लें। इसके पश्चात् हल्दी से स्वास्तिक (सतिया) बनाकर उस पर चने की दाल और थोड़ा सा गुड़ रख दें। इसके बाद स्वास्तिक को बार-बार ना देखें। प्रभु कृपा से आप शीघ्र ही लाभ का अनुभव करेंगे। यह एक शुद्ध सात्विक क्रिया है।

सतिया और मन्त्र



ओं क्लीं अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णु किरीटी श्वेत वाहनः।
वीभत्सु विजयः कृष्णः सव्य सांची धनंजय॥ क्लीं ओं

नया मकान बनने पर

एक नहीं अनेक व्यक्ति हैं, जो नया मकान बनवाकर या फिर

नई दुकान कर परेशानी में आ गए। धन और परिश्रम दोनों ही नष्ट हो गए। जब भी नया मकान बनवाएँ, उसकी नींव में निम्न वस्तुएं रखवा दें। मेरा अनुभव है कि यह वस्तुएँ धन लाभ के साथ-साथ टोने-टटकों से भी बचाव रखती हैं। इसके टोटके के लिए निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

१. ताँबे की लुटिया ढक्कन सहित, २. चाँदी का सर्प-सर्पिणी का जोड़ा, ३. चाँदी का एक छोटा सा पतरा, ४. पूजा वाली पाँच छोटी सुपारियाँ, ५. हल्दी की सात साबुत और साफ गाँठ।

इन सब वस्तुओं को ताँबे की लुटिया में पानी भर कर डाल दें। इसके बाद ढक्कन अच्छी प्रकार बन्द कर दें। अब यह लुटिया मुख्य द्वार के पश्चिम की ओर दबा दें। अगर सम्भव हो तो किसी योग्य तांत्रिक का परामर्श भी ले लें, ताकि कोई त्रुटि न रह जाए।

धन लाभ

व्यापारी बन्धुओं को चाहिए कि सोमवार की प्रातः सफेद चन्दन ले आएँ। उसे लाने के पश्चात् नीले डोरे में पिरों लें। उस पर निम्न मन्त्र को २१ बार पढ़ें और तिजोरी में रख लें या पूजा के स्थान पर रख दें। मन्त्र इस प्रकार है—

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुत्व आ तु प्र याहि हरिवस्तदीकाः।
पिबा त्वऽस्य सुषुतस्य चारोर्ददो मघानि मघवान्नियानः॥

लक्ष्मी प्राप्ति

जिस प्रकार बिल्ली की जेर लक्ष्मी लाभ हेतु काम आती है ठीक उसी प्रकार घोड़े की जीभ भी काम आती है। नीचे मैं लक्ष्मी

प्राप्ति का एक अत्यन्त अचूक टोटका लिख रहा हूँ।

घोड़ी जब प्रसव कर रही हो तो बच्चे के साथ एक झिल्ली भी बाहर आती है। घोड़ी प्रयत्न कर उसे तुरन्त खा जाती है। उस झिल्ली का रंग सफेद होता है। अगर इसको संभाल कर रखा जाए तो धन प्राप्त होता है।

व्यापार

मंगलवार के दिन ७ साबुत डण्ठल सहित हरी मिर्च और एक नींबू लाएँ। इसके पश्चात् उन्हें एक डोरे में पिरो लें। इन सबको कार्यालय या व्यापार स्थल के बाहर टाँग दें। ऐसा हर मंगलवार को करें। ऐसा करने से व्यापार बढ़ता है और नजर या टोक भी नहीं लगती।

घाव भरने का मन्त्र

सार सार विजय सार सार बाँधूं
सात वीर फूटे अन्न न उपजे
घाव सीर राखे श्री गोरखनाथ
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

मन्त्र पढ़े और फिर घाव पर फूँक दें तो घाव भरे, पीड़ा न होगी।

वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र लोबान की धूनी देकर ताँबे में मढ़वा लें ऐसा कोई भी कार्य नहीं रहेगा जो इसके द्वारा न हो जाए।

यन्त्र इस प्रकार है—

असमा	अलसा	जलसा

गर्भ धारण हेतु

विवाह के अनेक वर्षों के बाद भी जब सन्तान नहीं होती तो निश्चय ही यह एक गम्भीर चिन्ता का विषय बन जाता है। ऐसे दम्पत्ति हैं, जिन्होंने प्रारम्भ में तो इस तरफ विचार नहीं किया, पर जब समय अधिक हो गया तो चिन्तित हो भाग-दौड़ प्रारम्भ कर दी। देर हो जाने के कारण अन्त में निराश ही होना पड़ा।

गर्भ धारण के लिए सरल-सा टोटका है। मंगलवार के दिन कुम्हार के घर जाएँ और उससे प्रार्थना कर मिट्टी के बर्तन काटने वाला डोरा ले आएँ।

उसे किसी साफ गिलास में गंगाजल भर कर डाल दें। कुछ समय पश्चात् डोरे को निकाल लें और वह पानी पति-पत्नी दोनों पी लें। क्रिया केवल मंगलवार को ही करनी है।

अगर सम्भव हो तो उस दिन पति-पत्नी अवश्य ही रमण करें। गर्भ की स्थिति बनते ही उस डोरे को हनुमान जी के चरणों में रख दें।

★ ★ ★

सोमवार के दिन शिवलिंगी का एक बीज और लक्ष्मण बूटी का एक बीज ले आएँ। इन पर ३१ बार **ओं नमः शिवाय** का पाठ करें। इसके बाद इन बूटियों का सेवन करें। सन्तान अवश्य होगी।

★ ★ ★

अगर पति-पत्नी रमण से पूर्व अपने मन को एकाग्र कर

केवल यह सोचें--हमारे सन्तान होगी। हमारे सन्तान अवश्य होगी। प्रभु कृपा से हम केवल पुत्र धन ही प्राप्त करेंगे। हम सन्तान धन प्राप्त करके रहेंगे। इसके बाद पुरुष अपने दाएँ पैर के अंगूठे से स्त्री की योनि का स्पर्श करे तो भी सन्तान सुख प्राप्त होता है।

गर्भपात

ऐसी स्थिति में केवल शुक्रवार के दिन किसी भी कुम्हार के घर जाएँ और उसके हाथ से मिट्टी छुड़ाकर ले आएँ। इसके पश्चात् इस मिट्टी को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में शहद और बकरी के दूध में मिलाकर गर्भिणी को नियमित खिलाएँ। गर्भपात की आशंका समाप्त हो जाती है। इस क्रिया को करने से पूर्व कुम्हार की स्वीकृति अवश्य प्राप्त करें अन्यथा फल प्राप्त होने में सन्देह रहता है।

बार-बार गर्भपात होना एक अच्छा लक्षण नहीं है। ऐसी स्थिति में तुरन्त और सटीक उपचार करना चाहिए। मुलहैटी, आँवला और सतावर को कूट इन सबको भली-भाँति पीसकर कपड़छन कर लें। इसके बाद इस औषधि को रविवार से प्रारम्भ करें। इस औषधि को गाय के दूध में सेवन करना गुणकारी माना गया है। मात्रा लगभग ५ ग्राम है।

मंगलवार के दिन लाल कपड़ा लें। उसमें थोड़ा सा नमक बाँध लें। इसके बाद हनुमान मन्दिर जाएँ और इस पोटली को हनुमान जी के पैरों से स्पर्श कराएँ। वापिस आ कर गर्भिणी के पेट में बाँध दें। गर्भपात होना बन्द हो जाएगा।

पुत्र प्राप्ति

पुत्र प्राप्ति की इच्छा स्वाभाविक है। यूँ तो हजारों टोटके हैं

पुत्र प्राप्ति के लिए पर यहाँ केवल तीन टोटके दिए जा रहे हैं।

गर्भ को जब तीसरा माह चल रहा हो तो गर्भिणी को थोड़ा सा जायफल और गुड़ मिलाकर शनिवार को खिला दें। लड़का होगा।

एक बेदाग नींबू ले लें। उसे हाथ से निचोड़ कर भरपूर रस निकाल लें। इसके बाद उसमें थोड़ा नमक स्वाद के अनुसार मिला दें। अब इस द्रव्य को लड्डू गोपाल के आगे थोड़ी देर के लिए रख दें। रात्रि सोने से पूर्व स्त्री इस द्रव्य का सेवन करे और पति अपने पति धर्म का पालन करे। इस क्रिया को एक बार से अधिक न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है।

प्रायः पति या पत्नी दोनों में से एक अवश्य पूजा के लिए मन्दिर जाता रहे। सोमवार के दिन जो भी मन्दिर जाए वह शिवजी पर चढ़े हुए थोड़े चावल ले आए। इसके बाद उन्हें पीस लें और नियम से आने वाले सोमवार तक दूध से सेवन करें। पुत्र रत्न प्राप्त होगा तथा निम्न यन्त्र को रेशम के धागे में बाँध कर कमर में बाँध लें। यन्त्र इस प्रकार है—

१९६	१९९	२०२	१८९
२०१	१९०	१९५	२००
१९१	२०४	१९७	१९४
१९८	१९३	१९२	२०३

कष्ट रहित प्रसव

प्रसव के समय कष्ट होना स्वाभाविक होता है। फिर भी निम्न उपाय करने से प्रसव कष्ट में कमी आती है और प्रसव सुखपूर्वक

होता है।

एक साफ कटोरी मंगवा लें। उसमें गंगाजल भर लें और निम्न मन्त्र का ३१ बार जाप करें। ध्यान रहे जाप के मध्य मध्यमा अंगुली बराबर जल में घूमती रहे। इसके बाद प्रसूति के लिए जाने वाली स्त्री पी ले। प्रसव ठीक प्रकार से होगा। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ओं मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा मुक्ताः सूर्यशा रश्मयः।
मुक्ता सर्वमयादर्जम एहि माविर माचिर स्वाहा॥

★ ★ ★

कष्ट रहित प्रसव के लिए निम्नलिखित १५ के यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर केवल रविवार को गर्भिणी की कमर में बाँध दें। प्रसव कष्ट रहित होगा। इसके अलावा इसी मन्त्र को कांसे के बर्तन पर अष्टगन्ध से लिखकर उस पर पानी डाल दें। इसके बाद जल किसी गिलास में एकत्रित कर लें और वह जल गर्भधारण किए हुए महिला को पिला दें।

यह बात विशेष ध्यान रखने योग्य है कि वह क्रियाएँ केवल प्रसव वेदना प्रारम्भ होने के बाद करनी है। इससे पहले करने पर गर्भ समय से पहले ही हो जाएगा। यन्त्र इस प्रकार है—

८	१	६
३	५	७
४	९	२

यह ध्यान रहे इस यन्त्र को २ से आगे लिखना शुरू करना है। इसके साथ-साथ ढाई घर की चाल से भी लिखना है।

प्रसव पीड़ा से मुक्ति

सहदेई बूटी से प्रसव पीड़ा से मुक्ति पाई जा सकती है। इसकी आयुर्वेद में बड़ी ही महिमा बताई गई है। तन्त्र मार्ग में भी इसका विशिष्ट स्थान है। प्रसव पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए शनिवार के दिन सहदेवी की जड़ ले आएँ। उस पर २१ बार निम्न मन्त्र का जप करें, तत्पश्चात् प्रसूता की कमर में बाँध दें। प्रसव पीड़ा कम होगी। मन्त्र निम्न प्रकार है—

मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

★ ★ ★

सहदेवी का पूरा पौधा सोमवार के दिन खोदकर घर ले आएँ। इसके पश्चात् इसका चूर्ण बना लें। मासिक धर्म प्रारम्भ होने से लगभग ५ दिन बाद तक यह चूर्ण एक-दो माशा रोजाना गौ घृत के साथ सेवन करें। शेष फेंक दें। अगर सम्भव हो तो निम्न मन्त्र का जाप केवल स्त्री करे। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ओं हीं हीं हुं कुरु कुरु स्वाहा।

★ ★ ★

शीघ्र सन्तान प्राप्ति

अगर विवाह को काफी समय हो गया है और पति-पत्नी शारीरिक दृष्टि से बिल्कुल स्वस्थ हैं, तो यह प्रयोग करें। शीघ्र सन्तान प्राप्त होगी।

रविवार के दिन गुंजा की टहनी काटकर ले आएँ। मंगलवार तक निम्न मन्त्र का नियमित जाप करें। मंगलवार को इस टहनी को किसी ताँबे के यन्त्र से भर लें। गंगाजल से स्नान कराएँ और हनुमान

जी के चरणों का स्पर्श कराएँ। इसके बाद इस यन्त्र को गले या हाथ पर बाँध लें। शीघ्र ही उद्देश्य की प्राप्ति होगी। मन्त्र निम्न प्रकार है—

हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरोनाम यक्षिणी।
यस्य नृषृरशब्देन विशाल्या गर्भिणी भवेत॥

इसी प्रकार मकार (आक) को वृहस्पतिवार को लाकर कमर में बाँधने से सुन्दर और स्वस्थ सन्तान की प्राप्ति होती है। मदार कल्प को बाजार में कई नामों से जाना जाता है इसे अर्श, मदार, आक या मन्दार भी कहते हैं।

स्वस्थ सन्तान

सन्तान का बिल्कुल ना होना, अगर होना और होकर मर जाना, या फिर गर्भपात हो जाना अगर यह सब स्थितियाँ न हों और सन्तान भी हो जाए और वह विकलाँग या अपंग हो तो माँ-बाप के सिर पर दुःखों का पहाड़ टूट जाता है। यहाँ सुन्दर और स्वस्थ सन्तान उत्पन्न करने का अनुभूत टोटका है।

पत्नी शुक्रवार के दिन दो चने की रोटियाँ बनाए। उस पर भली-भाँति घी लगाए और उस पर कोई भी सूखी सब्जी इस प्रकार रखें कि वह दो फुलकों के मध्य रहे। इसके बाद पति-पत्नी दोनों बाजार में जाकर, किसी भी भूखे को अपने सामने खिला दें। उसे यथा योग्य दक्षिणा दें और वापिस चले आएँ।

सोमवार के दिन गर्भवती स्त्री देशी कपूर का एक टुकड़ा ले। उसमें आधा अपने सामने रखकर जला दे और बाकी आधा शिव मन्दिर में चढ़ा दे। ऐसा करने से भी सन्तान सुन्दर और स्वस्थ उत्पन्न होती है।

अधिक वमन

प्रायः देखा गया है कि बच्चा दूध से घबराता है, सारे-सारे दिन भूखा रह सकता है, पर दूध पीते ही रोने लगता है और उल्टी कर देता है। इस कारण प्रायः बच्चे दुर्बल और निढाल रहते हैं। अगर आपका बच्चा दूध नहीं पीता है या उल्टी कर देता है, तो निम्न टोटका आजमाएँ। प्रभु की कृपा से आपका बच्चा दूध पीने लगेगा और उल्टी भी नहीं करेगा। यह टोटका केवल शनिवार या रविवार को ही करना है।

एक कपूर का साबुत टुकड़ा ले लें। उसमें से थोड़ा सा तोड़ कर बच्चे को चटा दें और बाकी हनुमान मन्दिर में चढ़ा दें। यह ध्यान रहे यह टोटका केवल एक ही बार करना है।

एक सकोरे में कच्चा दूध ले लें। उस बच्चे के सिर पर से ७ बार उतार कर काले कुत्ते को अपने सामने पिला दें। बच्चा इस टोटके के पश्चात् स्वयं ही शनैः शनैः दूध पीने लगेगा।

किसी ऐसी स्त्री जिसके सन्तान न होती हो यानि पूरी तरह (बाँझ) हो। उसे शनिवार के दिन घर पर बुलाएँ और बच्चे के सिर पर हाथ फेरने को कहें। यह ध्यान रहे वह बच्चे को गोद में बिल्कुल न ले। उस स्त्री के जाने के बाद उस जगह पर झाड़ू लगा दें और पानी बहा दें।

दुग्धपान

प्रायः हमारी माताओं और बहनों को शिशु पालन की कोई प्रारम्भिक जानकारी नहीं दी जाती है। फिर भी वह शिशु पालन में कोई कमी नहीं रखती हैं। बच्चे को दुग्धपान कराते समय आँचल में छुपा कर रखें। दूध के पात्र को छुपा कर रखे। अगर सम्भव हो तो

दुग्धपान कराते समय बच्चे को प्यार भरी नजर से बार-बार देखती रहें। ऐसा करने से बच्चे में आत्मविश्वास पैदा होगा और हड्डियों को मजबूत करेगा।

दुर्योधन शारीरिक दृष्टि से काफी पुष्ट था। इस विषय में कहा जाता है एक बार माँ ने अति ममतावश दुर्योधन से कहा— दुर्योधन तू मेरे सामने सारे वस्त्र उतार कर खड़ा हो जा। मैं आँखों से पट्टी हटा कर तेरे शरीर पर अपनी ममता भरी नजर डालूँगी। जहाँ-जहाँ मेरी नजर पड़ेगी वह स्थान वज्र के समान कठोर हो जाएगा। दुर्योधन ने सारे वस्त्र उतार दिए। जब गांधारी ने पट्टी खोलकर देखा तो दुर्योधन के सम्पूर्ण शरीर पर कच्छा शेष था। माँ ने रुष्ट होकर पूछा, बेटे यह क्या? दुर्योधन ने बतलाया, माँ लज्जावश मैंने यह नहीं उतारा।

माँ से लज्जा कैसी? गांधारी ने पूछा।

दुर्योधन चुप रह गया। प्रमाण बताते हैं कि इसी कारण भीम ने गुप्तांग पर गदा मारकर दुर्योधन का अन्त किया था।

अस्तु माँ की प्यार भरी नजर कवच के समान होती है। इस कवच को प्राप्त करने का सही समय दुग्धपान या स्तनपान का समय ही होता है। माताओं, बहनों को स्वयं लेटकर स्तनपान नहीं कराना चाहिए। इससे बच्चे को नाना प्रकार के कर्ण रोग लग जाते हैं। अगर माताएँ इन बातों का ध्यान रखेंगी तो निश्चय ही वह सन्तान को बलिष्ठ, निरोगी और आत्मविश्वासी बना पाएँगी।

बीमार रहने पर

अगर आपका शिशु हर समय किसी न किसी रोग से पीड़ित रहता है, दवा आदि करने पर भी कोई विशेष लाभ न होता हो तो

ऐसी हालत में आप निम्न क्रियाएँ करें।

मंगलवार के दिन अष्टधातु का कड़ा बनाने के लिए दे दें। शनिवार को वह कड़ा वापस ले जाएँ। गंगाजल में भली भाँति धोकर शुद्ध कर लें। इसके बाद कड़े के एक ओर थोड़ा सा सिंदूर लगा दें। अगर समय उपलब्ध हो तो एक बार हनुमान चालीसा का पाठ कर लें। इसके बाद वह अष्टधातु का कड़ा शिशु के सीधे हाथ में पहना दें। आप उसे स्वस्थ होते स्वयं अनुभव करेंगे।

अधिक रोने पर

माताएँ बहनें प्रायः यह अनुभव करती हैं करती होंगी कि बच्चा कुछ अधिक ही रोता है। रात्रि में सोते-सोते चौंक पड़ता है और कुछ तीव्र स्वर में रोना प्रारम्भ कर देता है। अगर आपका शिशु अधिक रोता है या रात में प्रायः चौंक पड़ता है तो निम्न टोटका करें।

रविवार को काला डोरा ले आएँ उसमें एक छोटी सी खड्ग या बाघ नख डाल दें। इसके पश्चात् आपका शिशु अधिक रोना या रात को सोते हुए चौंकना बन्द कर देगा। यह वस्तुएँ केवल ४ वर्ष की आयु तक ही डालें। बाद में नहीं।

पेट के कीड़े

अनेक व्यक्ति हैं ज़ो अपने बच्चों के पेट में कीड़े होने से बहुत चिन्तित थे। इन्हीं कीड़ों के कारण बच्चे का स्वास्थ्य नहीं बन पाता था, जितना वह खाता है भूखा ही रह जाता है।

बुधवार के दिन अखण्डित भोजपत्र ले आएँ और उस पर निम्न मन्त्र हल्दी से लिखें और ताँबे के खोल (ताबीज) में भर कर

पीले डोरे में बच्चे को पहना दें। शनैः शनैः कीड़े समाप्त हो जाएँगे और बच्चा स्वस्थ हो जाएगा—

१. अगर आपका शिशु दाँत निकाल चुका है और किसी अनजाने कष्ट के कारण बार-बार दाँत पीसता है तो सोमवार के दिन लाल डोरे में रुद्राक्ष उसके गले में डाल दें। शिशु दाँत पीसना बन्द कर देगा।
२. अगर आपका बच्चा काफी बड़ा हो गया है और अंधेरे से या एकान्त से डरता है तो इसमें आपको डरने की कोई बात नहीं। आप शेर के कुछ बाल एक यन्त्र में भरकर उसके गले में बाँध दें। अगर भाग्यवश शेर के बाल उपलब्ध नहीं हों तो बिल्ली के बाल भी ताबीज में भरकर डाल सकते हैं।
३. प्रायः लगभग सभी माताएँ बच्चों के बिस्तर पर पेशाब कर देने से परेशान रहती हैं। बिस्तर पर पेशाब कर देने से बिस्तर तो गन्दा होता है साथ में दुर्गन्ध भी आती है। अगर आपका शिशु बिस्तर पर पेशाब अधिक करता है तो आप मंगलवार के दिन गुलाब की अगरबत्ती जलाएँ। जब वह सारी जल जाएँ तो उसकी राख भोजपत्र पर एकत्रित कर लें। उस भोजपत्र पर राख में गंगाजल डाल कर लेप बना लें। उस लेप को शिशु की नाभि और पेट पर हल्के से लगा दें। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपका बच्चा अब बिस्तर पर पेशाब नहीं करता है इस क्रिया को एक दिन छोड़कर एक दिन करें। इस प्रयोग को एक माह नियम से करें।

ऐसे अनेक व्यक्ति हैं, जो पहले सन्तान ना होने को लेकर

व्यथित और निराश थे। उनके समक्ष नि:सन्तान होना एक गाली थी। प्रभु कृपा से उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। कालांतर में वह इस बात को लेकर परेशान हुए कि उनका पुत्र कुमार्गी हो गया। आज यह कह सकते हैं कि सन्तान वह गुड़ है जो खाए वह भी पछताए जो न खाए वह भी पछताए।

ऐसे बच्चों के लिए जो कुमार्गी हो गए हैं या अपने माँ-बाप की इज्जत ठोकरों में उड़ाते फिरते हैं। उनको सुमार्ग पर लाने का यह मन्त्र है—

१. एक काली मिर्च का कच्चा पापड़।
२. थोड़ी-सी मात्रा में साबुत काले उड़द।
३. एक छोटी-सी गुड़ की डली।
४. सरसों के तेल का एक दीपक।
५. दो लोहें की कीलें।
६. एक लुटिया में थोड़ा-सा जल, उसमें काले तिल छोड़ दें।
७. थोड़ा-सा सिंदूर।

इन सब वस्तुओं को काली मिर्च के कच्चे पापड़ पर रख लें ठीक उसी प्रकार जैसे आप थाली सजाते हैं। इन सब वस्तुओं को शनिवार के दिन सायंकाल जब दोनों समय मिल रहे हों तो पीपल के पेड़ के नीचे रख दें और लुटिया का जल पीपल पर चढ़ा दें। इसके बाद बिना पीछे देखे घर आ जाएँ।

यह क्रिया केवल नौ शनिवार ही करनी है। प्रभु की अनुकम्पा से कुमार्गी बच्चा भी सुधर जाएगा। इस क्रिया को रहस्य ही रखें। प्रयोग बताने पर प्रभावहीन हो जाएगा।

भूत बाधा

आज के इस भौतिक युग में कोई गाँव या शहर ऐसा नहीं है जहाँ कभी न कभी कोई न कोई व्यक्ति भूत-प्रेत से ग्रस्त न हुआ हो। जैसे कि चोट लगने पर प्राथमिक उपचार कर दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार किसी योग्य तांत्रिक या ओझा के आने से पूर्व भूत-प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति के प्राथमिक उपचार का एक सफल, अनुभूत मन्त्र दे रहा हूँ।

जब भी आप किसी व्यक्ति को भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त देखें, तो सर्वप्रथम उसके मनोबल को ऊँचा उठाएँ।

उदाहरण के लिए वह व्यक्ति (भूत-प्रेत बाधा ग्रस्त) जोर-जोर से चिल्ला रहा है। वह सामने खड़ी है, अपनी लाल-लाल आँखों से मुझे घूर रही है, वह मुझे अवश्य खा जाएगी। हालांकि वह व्यक्ति सत्य कह रहा है पर आप उसे समझाइए कि वह कुछ नहीं है, केवल वहम है।

लो, उसे हम भगा देते हैं और उसे भगा देने की क्रिया करें आदि। इससे उसमें ऊँचे मनोबल का संचार होगा। उसे धीरज भी बंधाइए।

कोई चाकू, छुरी, कैंची उसके सामने (समीप) रख दें और (उसे बताएँ नहीं) किसी देवी देवता का चित्र उसके सामने टाँग दें, अगरबत्ती लोबान आदि जला दें।

भूत-प्रेत को गलती से भी अपशब्द न कहें। इससे अशान्त आत्मा को क्रोध आ सकता है। इसमें कोई बुराई नहीं, अगर घर के बड़े या बुजुर्ग भूत-प्रेत से अनजाने अपराध के लिए क्षमा याचना कर लें, मेरे निजी विचार में इन निराकार योनिधारियों को मित्र बनाना या

मनाना कठिन नहीं होता है। यह मृदु बातों से सुस्वाद भोग से जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं और तब अहित के स्थान पर हित कर देते हैं।

इस काम के पश्चात् आप किसी भी पीपल के पाँच पत्ते ले लें, ध्यान रहे कि वह खण्डित न हों, उन पाँच पत्तों पर सुपारियाँ रख दें। पीपल के पाँचों पत्तों पर लाल चन्दन गंगाजल से घिस कर "राम दूताय हनुमान" दो-दो बार लिखें। अब इसके सामने धूप, दीप, अगरबत्ती जला दें और बाधाग्रस्त व्यक्ति को छोड़ देने की प्रार्थना करें। ऐसा करने से प्रेत बाधा नष्ट होती है और भूत जाते-जाते धन वैभव प्रदान कर जाता है।

देह रक्षा

१. ओं नमः परमात्मने परब्रह्म मम शरीरं
बन्धनाये पाहि पाहि कुरु स्वाहा।

२. ओं नमः परमात्मने अंजनी सुताय हुं हुं हुं।

३. ओं नमः वज्र का कोठा
जिसमें पिण्ड हमारा पैठा
ईश्वर पूजा ब्रह्म का ताला
मेरे आठों धाम का यती हनुमन्त रखवाला।

इनमें से किसी भी एक मन्त्र को किसी ग्रहण की रात में सिद्ध कर लें। जब भी श्मशान में जाएँ या किसी दुष्ट तांत्रिक से अहित का डर हो तो ३१ बार पढ़कर शरीर पर फूंक मार दें। आपका शरीर दुश्मनों के आक्रमण से पूर्णतः मुक्त रहेगा।

★ ★ ★

भूत-प्रेत दिखाई देने पर

निम्नलिखित यन्त्र को सायंकाल दिन छिपने के पश्चात् अखण्डित भोजपत्र से शुद्ध केवड़े के रस से अनार की कलम से लिखें। फिर इसे चाँदी के ताबीज में भरकर जिस व्यक्ति को रात्रि में सोते समय भूत-प्रेत दिखाई देते हों उसे दे दें। वह रात को सोते समय सिरहाने रखकर सोए। इसके प्रभाव से भूत-प्रेत दिखलाई देने बन्द हो जाएँगे। यन्त्र इस प्रकार है—

५९१५	५९०८	५९१३
५९१०	५९१२	५९१४
५९११	५९१६	५९०९

साधक को चाहिए कि वह ग्रहण के दिन इस मन्त्र को सिद्ध कर लें। इसके पश्चात् श्मशान की काफी बड़ी बिना भीगी ठीकरी ले आएँ। फिर जो व्यक्ति भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त हो, उसे अपने सामने बैठा लें और श्मशान की ठीकरी को बीच में रख लें और निम्नलिखित मन्त्र का झाड़ा कर दें। झाड़ा केवल शुक्रवार और शनिवार को ही करना चाहिए। यह क्रिया करने से भूत बाधा शान्त होती है। झाड़ने के बाद ठीकरी को एक ही मुक्के में चूर-चूर कर दें।

★ ★ ★

गरूर चरणे दिया मन, श्री हरि मोक्ष करन।
देव दानव दैत्यानी लाई, नरसिंह वश आसी सब उड़ाई॥
आलाली पालाली चोटी-चोटी हुंकारे, फुंकारे उड़ाय माटी।
शलिकेर पाँच देव, टुकरिया जाय "अमुकार" आगे।
डाईनेर दृष्टि पलायकर अक्षावीर नरसिंह आग॥

जिस स्थान पर (अमुक) शब्द आया है, वहाँ पर भूत-प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति का नाम जोर से लें और नरसिंह की दुहाई दें। यह झाड़ा पूर्णतः हानि रहित और अत्यन्त प्रभावशाली है। कोई भी व्यक्ति इसे कर सकता है।

स्वप्न में भूत

यह यन्त्र जो किसी भी स्त्री या पुरुष को स्वप्न में भूत-प्रेत दिखाई देने पर प्रयोग में ला सकते हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि यह यन्त्र केवल स्वप्न में भूत दीखने पर काम आ सकता है।

भूत-प्रेत बाधा होने पर यह यन्त्र अधिक प्रभावकारी नहीं होंगे।

उपरोक्त यन्त्रों को केवड़े के रस या आक के दूध से भोजपत्र पर शुद्धता से लिख लें। फिर जिस स्त्री या पुरुष को रात्रि में भूत दिखते हों वह इनमें से किसी एक यन्त्र को सिरहाने रख कर सो जाए। भूत-प्रेत दीखने तुरन्त बन्द हो जाएँगे।

अधिक प्रभावी करने के लिए इन यन्त्रों को गिलोय का रस या अष्टगन्ध से भी लिख सकते हैं। लिखना केवल भोजपत्र पर ही है। यन्त्र निम्न प्रकार है—

या रहीमु वा रहमानु या अल्लाहु
या अ-ह-दु या कुद्दूसू या मालिकु
या सलामु या मुहयमिनु या मोमिनु

प्रेत बाधा से बचाने का टोटका

इन टोटकों का प्रयोग भूत-प्रेत बाधा होने पर ही करें। इ

यन्त्रों का प्रयोग भूत बाधा न हों, इसलिए न करें। इन यन्त्रों को भोजपत्र पर लाल चन्दन या श्मशान की राख को गंगाजल में मिलाकर शुक्रवार को लिखें। इसके बाद जिस व्यक्ति को भूत-प्रेत बाधा हुई है, उसके गले में डाल दें।

इस यन्त्र को गले में डालने के बाद घर के बड़े बुजुर्ग व्यक्ति को चाहिए कि वह १ रुपया २५ पैसे भूत-प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति का हाथ लगवाकर रख दें। जब वह ठीक हो तो वह पैसे गंगा में फिकवा दें। भविष्य में फिर भूत बाधा होने की सम्भावना समाप्त हो जाएगी।

भूत-प्रेत बाधाग्रस्त व्यक्ति अगर कुछ पीपल के पत्ते अपने पास रखे तो वह शांत रहता है। ऊपरी बाधा उसे अधिक परेशान नहीं करती है। पीपल के पत्ते पर अगर सम्भव हो तो ''राम दूताय हनुमान'' लाल चन्दन से लिख लें। इसके बाद वह पीपल के पत्ते किसी बहती नदी या गंगा, यमुना में फिकवा दें। ऐसा करने से तुरन्त लाभ होगा।

घर में प्रेत

अगर किसी व्यक्ति विशेष के स्थान पर घर में ही भूत-प्रेत बाधा या उपद्रव हो तो निम्न उपाय करें। यह घर में अनजानी आत्माओं के द्वारा आग लगाने पर, विष्ठा फेंकने पर, पत्थर फेंकने पर सफल नहीं होगी। छोटे उपद्रवों पर सफल है।

सर्वप्रथम सारा घर गंगाजल या अभिमन्त्रित जल से धो डालें और धूप या अगरबत्ती जला दें और गायत्री मन्त्र का जाप करें। भूत उपद्रव तुरन्त शांत हो जाएगा। आप इस मन्त्र का जाप भी कर सकते हैं—

प्रनवउ पवन कुमार खल बल पावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

आत्मा के सताने पर

प्राय: ऐसे किस्से देखने में आते हैं, जब मरणोपरान्त कोई अशान्त आत्मा किसी व्यक्ति विशेष को या किसी समुदाय या परिवार को निरन्तर सताती रहती है। इस कारण काफी विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ता है।

अगर कोई इस प्रकार की परिस्थिति से जूझ रहा है तो निम्न टोटका करें—

सर्वप्रथम आप कुछ मुद्राएँ उस अशान्त आत्मा के नाम से उठाकर रख दें और यह संकल्प लें—अगर वह अशान्त आत्मा सताना छोड़ गति को प्राप्त करे तो हम वह मुद्राएँ कल्याण हेतु व्यय करेंगे। इसके पश्चात् कुछ भूखों को भरपेट खाना दें। उसका कोप शान्त हो जाएगा। निम्न यन्त्र को धूनी दें तो और भी उत्तम रहेगा। यन्त्र इस प्रकार है—

१८	४८	९
१२	२४	३६
४२	३	३०

प्रेत मुक्ति

भगवान शिव औढर दानी हैं। उनके पास एक से एक बढ़ कर दुर्लभ रहस्य, एक से एक गोपनीय साधनाएँ हैं। उनकी प्रत्येक

साधना कसौटी पर खरी उतरी··· जीवन का कोई क्षेत्र क्यों न हो··· क्या शाबर मन्त्र, क्या अघोर मन्त्र, क्या कापालिक मन्त्र, क्या शाक्त मन्त्र। किसी भी तन्त्र का कोई भी तांत्रिक मन्त्र उनसे अलग नहीं है। जीवन की सौभाग्यदायक साधनाएँ तन्त्र की जटिलता हो, अथवा फिर दैनिक जीवन में आने वाली समस्याएँ। ऐसा ही अद्‌भुत प्रयोग समझाया उन्होंने मुझे स्वप्न में। एक विलक्षण रात्रि के अन्तर्गत शाबर मन्त्र का ऐसा मिला-जुला प्रभाव जो कि तीर की तरह प्रभावित करें, प्रत्येक शरीर पर। ···पूरे वर्ष किसी भी दिन, कभी भी किया जाने वाला सिद्ध तन्त्र प्रयोग एक ऐसा प्रयोग जो झपट्टा मारकर रोगों को समाप्त करने में सक्षम है।

दिन वार अथवा मुहूर्त का कोई बन्धन नहीं, फिर भी अगर मंगलवार की रात्रि में यह प्रयोग किया जाए तो अधिक उपयोगी रहता है। साधक चमकदार पीले अथवा गहरे काले रंग के वस्त्र धारण कर, दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठ जाए, उसका आसन और सामने बिछा वस्त्र उसके धारण किए हुए वस्त्र के ही रंग का हो। सामने बाजरे की तीन ढेरियाँ बनाएँ, प्रत्येक पर एक-एक पूजा में प्रयोग होने वाली सुपारी रख, मध्य में अपने इष्ट की स्थापना करें, उनके बायीं ओर गुरु गोरखनाथ की भावना कर, उनका पूजन जाफरान, सफेद चन्दन, चावल एवं पुष्प से करें तथा कामिया सिन्दूर का टीका लगाएँ। इस साधना में स्फटिक की माला की आवश्यकता पड़ती है। इनके अतिरिक्त कोई अन्य विधि-विधान आवश्यक नहीं है। वातावरण पूरी तरह से शान्त हो, इसके बाद निम्न मन्त्र का जाप आरम्भ करें। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं इलि इलि चलि चलि इल हुम् ओं।

साधक अपनी सामर्थ्य के अनुसार अथवा संकल्प कर दस हजार बार उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करें, इससे अधिक मन्त्र जप की आवश्यकता नहीं है। मन्त्र जप के उपरान्त माला को गले में धारण कर लें। यह एक चमत्कारी साधना है। इस साधना के बाद साधक पर कोई भी अपघात अथवा तांत्रिक प्रयोग नहीं रह सकता। मुझे यह साधना हिमालय में बिचरते साधकों से पता चली है।

भूत-प्रेत टोटके

केवल मनुष्य ही क्यों संपूर्ण जगत त्रिआयाम (बहुत कुछ थ्री डाईमैंशन) में है। इस कारण ही कभी लम्बाई-चौड़ाई और मोटाई का हमें पता नहीं चलता है और वह जीवन्त लगती है। मूक आयाम में तस्वीर होती है। इस कारण वह केवल सपाट लगती है। क्या पता मनुष्य का शरीर मृत्यु के उपरान्त केवल एक आयाम में रह जाता हो इसे हम देख न पाते हों, कभी-कभी संयोगवश 'मीटर' मिल जाने पर देख लेते हैं। रेडियो की आवाज 'मीटर' से पकड़ में आती है वरना सब आवाजें हवा में रहती हैं। वरन हम सुन नहीं पाते। केवल मीटर पकड़ने पर सुन सकते हैं। यही दशा प्रेतात्मा के साथ सम्भव है।

इसके अलावा आज पुनर्जन्म की कथाएँ कपोल-कल्पित रह गई हैं। उनकी सत्यता की जाँच पड़ताल हो चुकी है और मनुष्य की आत्मा या चेतना को अमर माना गया है। हजारों वर्ष पूर्व गीता में कही गई बात एक सच्चाई के रूप में सामने है। जब आत्मा या चेतना का अस्तित्व माना गया है, तो वह किसी न किसी आधार पर या रूप में दिखलाई पड़ सकती है। उसे शून्य, अशरीर और अदृश्य माना गया है। वह कभी भी कोई भी रूप धारण कर सकती है।

शायद यही भूत-प्रेत कहलाता है। अब भूत-प्रेतों के अस्तित्व के सैकड़ों प्रमाण सामने आ चुके हैं। उनके अनेकों उपद्रव प्रत्यक्ष देखे जा चुके हैं। अतएव प्रमाणित न होने के बावजूद उनका अस्तित्व है। यह बात अवश्य है कि उनके रूप इच्छानुसार काम नहीं कर सकते। प्रत्येक कार्य की एक निश्चित् विधि होती है। हो सकता है उनके बात करने या उनको वश में या नियन्त्रण में रखने की कोई विधि हो। सम्भवत: तन्त्र ही ऐसी क्रिया है।

इस कारण भूत-प्रेत बाधा को भी तन्त्र द्वारा ठीक किया जा सकता है। अतृप्त भटकती आत्माएँ प्राय: बड़ा उपद्रव करती हैं। उनके उपद्रव के हजारों रूप हैं। उन सबका वर्णन व्यर्थ है। आशय मात्र यह है कि भूत-प्रेत बाधाएँ भी बड़ी कष्टकारक होती हैं। उनके द्वारा मनुष्य का बड़ा अहित होता है।

तन्त्र द्वारा इसे रोका जा सकता है। कठिक साधना और क्रियाओं के स्थान पर छोटे-छोटे सरल उपाय टोटके के रूप में प्रेत रूपी बाधा से अपने को मुक्त करने के लिए हमारे पूर्वजों द्वारा यह विधान बनाया गया है। इनसे आप छुटकारा पा सकते हैं। अदृश्य रूप से यह सब बड़ा परेशान करते हैं।

नियम तो यह है कि इनका उपद्रव टोटकों द्वारा शान्त कर देना चाहिए फिर किसी योग्य तांत्रिक के द्वारा इनकी उचित व्यवस्था करनी चाहिए। टोटके केवल क्षणित राहत दे सकते हैं। मृत अतृप्त आत्माएँ कभी-कभी इतनी दुष्ट होती हैं कि शान्त होकर फिर उपद्रव करने लगती हैं। अतएव टोटके इनका स्थायी इलाज नहीं है। इनका कार्य और लाभदायक इलाज योग्य तांत्रिक ही कर सकता है। अतएव इनकी रोकथाम कर ऐसा करना चाहिए।

भूत-प्रेत की इतनी जातियाँ प्रजातियाँ हैं कि उन पर विचार कर पाना साधारण बात नहीं है। कभी-कभी कुशल से कुशल तांत्रिक भी इनके सामने परास्त हो जाया करते हैं। भूत-प्रेत बाधा का निराकरण करने में समय और साधना की भी आवश्यकता है।

अतएव इस सम्बन्ध में आपको पहले से ही आगाह कर दिया जाता है कि इनका प्रयोग कर रोक लगाएँ पर पूर्ण निराकरण के लिए योग्य तांत्रिक या ओझा का सहारा लें।

प्रेत बाधा के तीन लक्षण

जब भी किसी व्यक्ति को भूत-प्रेत बाधा होती है, वह बेचैन और परेशान रहता है, आँखें नींद में भारी रहती हैं और मन अशान्त रहता है और इसके बाद भी तीन बातें और देख लेनी चाहिए।

१. कान की लवें गर्म होंगी।

२. कन्धों पर बोझ का अनुभव होगा।

३. उखड़ी-उखड़ी और बहकी-बहकी बातें करेगा।

अगर आप देखते हैं कि यह सब बातें हैं तो उसे किसी योग्य आदमी को तुरन्त दिखाएँ।

पीर का हाजरत

मन्त्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम खुदाई बड़ी तू बड़ा
जैनुदी पैगम्बरदुनी तेरा सादात फुरो
याद बाद वा मुरादी ने बुनियादी तर्क मापोर
ताइयासिलार देखूं तेरी शक्ति बेगि बाँध ल्याव

ना नाहरसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्मा अठारासै शाकिनी कामन दुरामन छल छिद्र भूत-प्रेत चाखर अगिया बैताल बेगि बाँधि ल्याव जो न बाँधि ल्यावे तो दुहाई सुलेमान पैगम्बर की।

किसी भी शुक्रवार के दिन से शुरू करें। इस मन्त्र का लवंग मिठाई, गूगल, इत्र, सुगन्धित तेल, फुलेल से पूजन करें। इसके बाद उपरोक्त मन्त्र का या दिन १२०१ की संख्या में जाप करें। इसके बाद आप किसी भी बच्चे पर हाजरात कर सकते हैं मुवक्किल तुरन्त हाजिर होंगे।

गोमती चक्र

गोमती चक्र से ऐसा कौन सा साधक है जो परिचित नहीं है ? इसके तन्त्र में भी उपयोग हैं—दो गोमती चक्र एक ओनेक्स लेकर जिन दो नामों को एक मुट्ठी सरसों के साथ चमकीले गहरे लाल वस्त्र में बाँधकर रख दिया जाए तो उनमें सदैव मित्रता बनी रहती है। दो गोमती चक्र चिता की भस्म में रख कर जिन दो नामों के साथ गहरे काले वस्त्र में बाँध दिया जाए तो उनमें जीवन भर के लिए कलह बन जाती है।

भूत-प्रेत पीड़ा शान्ति मन्त्र

किसी भी प्रकार की भूत-प्रेत बाधा अथवा पीड़ा हो तो रोगी को गंगाजल अभिमन्त्रित कर जल पिला दें। भूत-प्रेत व्याधि भाग जाता है, और रोगी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो भगवती वज्रश्रृंखले हनतु भक्षतु खादतु,
अहो रक्तं पिव-पिव नर वक्षास्थिरक्तपटे।
भस्मार्गिभस्म लिप्त शरीरे वजायुथे,
वज्रप्राकारानिचिते पूर्वां दिशिं मुंचतु दक्षिणां दिशिं।
मुंचतु पश्चिमां दिशं मंचतु उत्तरादिशं मंचतु,
नागार्थ धनग्रहपति बन्धतु नागपीठं बन्धतु।
यक्षराक्षसपिशाचन् बन्धतु प्रेम भूतगन्धवादियो,
ये केचिट् उपद्रबास्तेभ्यो रक्षतु ऊर्ध्व रक्षतु।
अधो रक्षतु श्येकां मुंजतु ज्वल महाबले,
एझेहिं तु मोटि मोटि सटावलि वज्राग्नि।
वज्रप्राकारे ऐं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट्,
हं हं फुं फें फः सर्व व्याधिभ्यः।
सर्वदुष्टोप्रदद्रवेभ्यः ह्रीं अशेषभ्यो मा रक्षतु।

ऊपर दिया गया मन्त्र पूर्ण रूप से आजमाया हुआ है। तन्त्र विद्या के जानकार तांत्रिकों के पास जीवन की हर समस्या की जानकारी होती है, इसलिए तो ये अपना जीवन निश्चिन्त होकर व्यतीत करते हैं, क्योंकि उन्होंने उस सिद्धि की अनुभूति कर ली होती है, जिसकी सामान्य साधक कल्पना ही कर सकता है। उपरोक्त मन्त्र को सामान्य व्यक्ति भी पूर्णता के साथ प्रयोग कर सकता है।

★ ★ ★

बैर कराने का मन्त्र

उपरोक्त यन्त्र को बनाने वाला कुण्डी के पानी से कागज पर लिखकर दुश्मन के घर में गाढ़ दे तो रात-दिन क्लेश होता है।

३	७६	८०	५
८४	७	१	८४
८३	२	८१	८१
६	७९	८५	४

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ओं आं इं ओं, ऋ, ल्वां माक कामिनी
कौतुहला हाँ हीं ओं क्लीं।

होली के दिन मध्यान्ह चंचिका पक्षी को मारकर ले आए और संध्या समय उसकी चोंच में चावल भरकर नदी के किनारे गाढ़ आएँ। प्रातः उखाड़ लाएँ, फिर यह मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री को चावल खिला दें, वह वश में हो जाएगी।

कलह कराने का मन्त्र

इस यन्त्र को मंगल के दिन उल्लू के पंख से सिर पर लिख कर कुम्हार के आवे से निकाले गए मटके में रखकर दुश्मन के घर फेंक दें तो अत्यन्त क्लेश पैदा हो।

७	१३	१९	२५	१
२०	४१	२	८	१४
३	९	१५	१६	२२
११	१७	२३	४	१०
२४	५	६	१२	१८

आकर्षक प्रयोग

भोजपत्र पर काले धतूरे के रस में गोरोचन मिलाकर सफेद कनेर की कलम से जिसके ऊपर आकर्षण करना हो उसका नाम लिखें और उस नाम के चारों तरफ मन्त्र को लिख दें। फिर लकड़ी जलाकर उस भोजपत्र को उसी आग पर तपाएँ जिस पर यह प्रयोग करेगा वह चला आएगा।

२४	२८	३१	१७
३०	१८	२३	२९
१९	फलां बिन फलां अर्थात् वो व उसकी माँ का नाम	२६	२२
७	३५	७	१८

मित्र आकर्षण मन्त्र

मृत के कपाल में गोरोचन और शुद्ध जाफरान मिलाकर मन्त्र को लिखकर फिर ढाक की लकड़ी से खोपड़ी को तपाए तो आकर्षण होगा। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं ह्रीं क्रीं श्री महासर्वरिश्रय।

सभा आकर्षण मन्त्र

हथेली तो हनुमान बसे भैरों बसे कपाल
नरसिंह की मोह नौ मोहे सब।

मोहन रे मोहता बीरग सब बीरान में तेरा सिर।
सबकी नजर बाँधि दे तोहि तेल सिंदूर चढ़ाऊँ।
तेल सिंदूर कहाँ से आया, कैलाश पर्वत से आया।
कौन लाया अंजनी का पुत्र हनुमान।
गौरी का गणेश काला और तोतला तीनों बसे कपाल।
बिना तेल सिंदूर का दुश्मन गया पाताल।
दुहाई कालिया सिंदूर की हमें देख शीतल हो जाए।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।
सत्यनाम आदेश गुरु का।

शनिवार के दिन दीपक में सरसों का तेल भरकर लोहबान दें व मिठाई भोग धरें ३२०७ बार जपें। फूल पान से पूजा करें, इसके बाद जहाँ जाए ३१ बार मन्त्र पढ़ माथे पर सिंदूर लगा कर जाएँ तो देखने वाले का मन आकर्षित हो जाए।

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि॥

पुरुष आकर्षण

ओं नमो काल संहराय ह्रीं हूं फट् 'अमुक' आकर्षण कुरु।

इस मन्त्र को एक हजार एक सौ आठ बार जपे। 'अमुक' के स्थान पर जिसको बुलाना हो उसका नाम लेता जाए। थोड़े ही दिन में वह स्वयं आकर मिल जाएगा।

इक्कीस का यन्त्र

यह यन्त्र अनुभव से ठीक प्रमाणित हुआ है। यदि इसको

भोजपत्र पर गंगाजल से लिखकर किसी गर्भवती नारी को २१ दिन तक इसे धोकर पान कराया जाए, तो उसको प्रसव के समय तकलीफ न होगी।

१३	३	२	१६
८	१०	११	५
१२	६	७	९
१	१५	१४	४

वशीकरण सुपारी

ओं नमः भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय समुचितं
राति रागांसविधया वम्यन अमुकस्या।

शुभ मुहूर्त देखकर दस बार उपरोक्त मन्त्र का जाप कर अभिमन्त्रित सुपारी जिसे खिलाएँ वह तुरन्त वश में होगा।

स्त्री वशीकरण

पुष्य नक्षत्र में नई चिता की राख, कट, बच, तगर और सुगन्धित कुंकुम पीसकर जिस स्त्री के सिर पर डालें वह आजन्म दासी बने।

पति वशीकरण

गोलाकार चक्र में गोरोचन से भोजपत्र पर अष्ट दल बना उसके भीतर पूर्वार्द्ध क्रम के चारों दिशाओं में लिखकर मध्य में साध्य का नाम लिखे। उसके ऊपर एक वृत्ताकार के चारों ओर 'हुं' शब्द दें। तीन रात गंधादि से पूजन करें। इसके बाद मन्त्र का उच्चारण

करें। मन्त्र इस प्रकार है—

अनंग-अनंग वल्लभे देवी सत्वयम् त्रिया नामितः।
एवं बिय नहबन्धं कर त्वस्मा वल्लभे॥

इस मन्त्र से स्त्री का पति उसके वश में रहेगा।

स्तम्भन मन्त्र

ह्रीं वीं श्रीं जीं लीं भ्रीं स्वाहा।

इस मन्त्र को सैनिक की ढाल पर कच्चे लोहे की कलम से ईख के रस में दीपावली की आधी रात में लिखकर विधान सहित पूजन करें। फिर इस ढाल को देखते ही दुश्मन का सारा शरीर कांप कर रह जाता है।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्र को पचास हजार की संख्या में जपकर सिद्ध करना चाहिए—

ओंहन्ना महिषवाहिनी जे भय मोहय
छेदय अग्नि स्तम्य अग्निस्तभ्य ठः ठः
श्री महादेव की आज्ञा हनुमान की आज्ञा
नारायण सूर्य की आज्ञाकार।

जब यह मन्त्र सिद्ध हो जाए तब निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें तो साधक जलता नहीं है।

ओं अग्नि दहतीदोधरे समहवहै, कलाह तापिना तापचोरी इष्टद्रकपते अस्तम्भन श्री महादेव की आज्ञा।

रक्षा यन्त्र

निम्न यन्त्र को रक्त चन्दन से कोरे कपड़े पर लिखकर जिस गर्भिणी को दुःस्वप्न अधिक दीख पड़ें, जब डर जाती हो और सोते समय चौंक पड़ती हों, उसको दिखा दें तो वह ठीक हो जाती है।

१३८	१४२	१४५	१३१
१४४	१३२	१३७	१४३
१३३	१४७	१४०	१३६
१४१	१३५	१३४	१४६

अग्नि बुझाने का मन्त्र

सर्वप्रथम साधकों को नीचे लिखे मन्त्र को पहले सवा लाख बार जप कर सिद्ध करना चाहिए।

ओं नमो कोर करूआ जलसों भरिया ले
गौरा के सिर पर धरिया,
ईश्वर ढोल गौरा नहाय जलती आग शीतल हो जाए
शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा
सत्यभामा आदेश गुरु का।

आवश्यकता के समय एक मिट्टी के कलश में पानी भरें तथा स्नान कर उस पानी से ३१ बार मन्त्र पढ़कर जल के छींटे मारें तो आग बुझ जाएगी।

आधा शीशी का मन्त्र

आगे लिखा मन्त्र ११ हजार बार की संख्या में जपने पर सिद्ध

हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय मन्त्र को ३१ बार पढ़कर रोगी के मस्तक पर अंगुली फेरने से दर्द दूर हो जाता है।

ओं नमः आधा शीशी हुं हुं कारी पहर संवार मुखा मूँड पाटले डारी अयुको कर शशर है मुख महेश्वरी की आज्ञा फटे ओं ठं ठं ठं स्वाहा।

मुक्ति

प्रायः हमारी माताएँ और बहने भोलेपन में आकर गलत युवकों के छलावे में आ जाती हैं, और वह अपनी गलत इच्छापूर्ति हेतु उन्हें समय-समय पर ब्लैक मेल करते हैं। ऐसी जटिल स्थिति में उनकी दशा काफी दयनीय हो जाती है। वह निकलने के स्थान पर दलदल में फँसती चली जाती है। वह इसका प्रयोग करें।

किसी भी प्रकार के सफेद सूती कपड़े को सर्वप्रथम गंगा के साफ जल में धो लें। फिर किसी भी साधारण काजल से जो बाजार का बना हुआ न हो, उस दुष्ट व्यक्ति का नाम अपनी तर्जनी उंगली से उस कपड़े पर लिखें।

उस व्यक्ति के जितने अक्षर हों, उतनी बार उस पर थूकें, पैर से रगड़े। इसके बाद शौचालय में ले जाकर उसे फेंक दें और उस पर विष्ठा कर वहीं छोड़ दें। अगर उन दिनों माहवारी हो रही हो तो वह कपड़ा भी उस पर फेंक दें। उस दुष्ट व्यक्ति से शीघ्र ही पीछा छूट जाएगा।

कलह योग

पति-पत्नी में से जो भी चाहे वह इस क्रिया को चुपचाप कर

सकता है।

स्त्री का रज और पति का वीर्य जब दोनों मिले हों, तो उसके द्वारा यन्त्र लिखकर अगर स्त्री है तो पुरुष को और अगर पुरुष है तो स्त्री को चुपके से पिला दें। कलह शनैः शनैः समाप्त हो जाएगा। यन्त्र निम्न प्रकार है—

९	७४	९	५१
७४	४	६	५२
३	२८	८१	९१
९	५	४५	४५

पति वशीकरण

जिन स्त्रियों के पति बात-बेबात पर झगड़ते रहते हों या फिर कुसंगति के कारण किसी गलत स्त्री या व्यक्ति के चंगुल में फंस गए हों तो निम्न टोटका प्रयोग में लाने से हर समस्या सुलझ जाएगी और जीवन सुखमय हो जाएगा।

वृहस्पतिवार और शुक्रवार की रात बारह बजे पति की चोटी के स्थान से कुछ बाल चुपचाप काट लें और उन्हें अपने पास रख लें।

पति की बुद्धि सुधर जाएगी और वह वश में हो जाएगा, अगर वह फिर भी वश में न हो तो उन बालों को जला दें और बाहर फेंककर पैरों से रगड़ दें। इस प्रकार करने से सब ठीक हो जाएगा।

★ ★ ★

मनवांछित फल

निम्न मन्त्र को नियमित रूप से जपने से मनवांछित फल या प्रेमिका की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र के लिए किसी भी प्रकार के नियम या हवन की आवश्यकता नहीं होती है। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो आदेश गुरु कूं, पीर में नाथ, प्रीत में माथ, जिसे खिलाऊँ, वह मेरे साथ, शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

शत्रु नाश हेतु

गूलर की लकड़ी की चार अंगुल लम्बी कील बनाकर रात्रि में शत्रु के घर में गाड़ दो उसका उच्चाटन हो जाएगा।

तांत्रिक प्रयोग हेतु

किसी पर कोई तांत्रिक प्रयोग किया हो अथवा कोई वस्तु चीज खिला दी हो तो छोटी इलायची, काकड़ासिंगी, काली मिर्च, नीम के पत्ते सम भाग लेकर पीस लें, ११ बार रोगी के ऊपर से उतार कर मिट्टी के सकोरे में अग्नि लेकर उस पर चूर्ण की धूनी करें। उस व्यक्ति को धूनी सुंघाएँ तो लाभ होता है।

धन प्राप्त करना

धरती में जहाँ धन गड़ा होता है वहाँ सर्प भी होते हैं। जहाँ धन गढ़ा होगा उस स्थान पर पानी साफ होगा। सर्दी में जहाँ का पानी गर्म और गर्मियों में ठण्डा रहता हो वहाँ भी धन होता है। शिलीत पर कहीं विरोधी जाति के प्राणियों के चित्र अंकित हों तो वहाँ धन होने

की सम्भावना होती है।

पारा, शहद, कपूर, पीलू के पुष्प और सूरजमुखी के बीजों को समभाग ले उन्हें मिला लें पीस लें तेल में रुई की बत्ती में इन चीजों को लपेट कर अंजन बनाए। उसको लगातार निम्न मन्त्र पढ़ो—

सत्यं दर्शयं भौमेय दिव्यं सत्यम दर्शया।
यदि भूमिगतं हव्यमात्मानं दर्शय स्वयं।
ऊं ऊं गं गं क्षं अं लोकिनि निधिनि लोकिन स्वाहा॥

अमावस्या की रात्रि को उस स्थान पर दीपक जला कर बैठे और उपरोक्त मन्त्र का जाप करें। वहाँ पर कोई छाया आकर गड़ा धन बतला देगी।

कुत्ते का विष झाड़ने का मन्त्र

ओं कामरूप देश कामाक्षी देवी जहाँ बसे मछन्दर जोगी।
मछन्दर जोगी का झामरा कुत्ता सोने की डाढ़ रूपे का कूंड़ा।
बन्दर नाचे रीछ बजाए चीता बैठा औषध बांटे
कूकर का विष भागे।
शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

१०१ माला जपकर मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर समय पड़ने पर पर काटे हुए स्थान को चाकू की नोंक से झाड़ें। जमीन पर ३१ सीधी लकीरें खींचें। इस प्रकार सात दिन तक झाड़ने से पागल कुत्ते का विष दूर हो जाता है। इंजेक्शन जरूर लगवाना चाहिए।

पन्द्रह का मन्त्र

वशीकरण, मोहन, आकर्षण यह सब एक ही शीर्षक के

अन्तर्गत आते हैं कहीं-कहीं पर तो इनकी अलग-अलग क्रियाएँ बताई जाती हैं।

जिस व्यक्ति को वश में करना है, वह व्यक्ति जब घर आए तो देखें उसके पाँव का जो भी जूता स्वयं उल्टा हो गया हो उसे चुपचाप उठा लें। उसके बराबर आटा तोल लें। अब उसकी रोटी बनाकर उसे खिला दें। शीघ्र ही वशीकरण होगा।

शनिवार के दिन यह सब वस्तुएँ एकत्रित कर लें।

७ लाल मिर्च, ७ इलायची, ७ फूलदार लौंग।

उन पर निम्न मन्त्र का १०८ बार जाप कर लें। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो महायक्षिणी ममपति वश्य मानय कुरु स्वाहा।

इसके बाद एकत्रित कर अभिमन्त्रित की गई वस्तुओं को तवे पर फूंक लें और रविवार को जिसको वश में करना है। उसे किसी भी वस्तु में मिलाकर खिला दें तो वशीकरण होगा।

ऐसे औरत, पुरुष नवयुवक और नवयुवतियाँ हैं जो आपस के झगड़े को लेकर काफी चिन्तित और परेशान रहते हैं। इस बात का सबसे दिलचस्प भाग यह है कि वह स्वयं झगड़े या मनमुटाव का कारण नहीं बता पाते। वह केवल इतना ही कहते हैं, कि बस हम आमने-सामने बैठे कि झगड़ा शुरू।

तब शनिवार की रात ७ फूलदार लौंग ले आएँ। उस पर २१ बार जिस व्यक्ति को वश में करना है उसका नाम लो और केवल हर रविवार को लवंग आग में भस्म करते रहो यह क्रिया रविवार तक करनी है।

इस क्रिया को मासिक धर्म के मध्य न करें अन्यथा हानि हो सकती है।

कुंवारी कन्या हल्दी या केशर से इस १५ के यन्त्र को लिखे और माहवारी के रक्त में इस मन्त्र को डुबो दें, तो मनवांछित लड़का (पति) मिलता है।

अगर पति से प्राय: लड़ाई-झगड़ा रहता हो और लाख समझाने पर आपकी बात न समझता हो, इस मन्त्र को कामिया सिंदूर से लिखें और अपनी माहवारी के रक्त में भिगों दें। पति आपकी बात मानने लगेगा और आपके कहे अनुसार ही चलेगा।

नोट—१५ के यन्त्र को वशीकरण के लिए १ शुरू करें। आकर्षण हेतु इस यन्त्र को ४ से लिखना प्रारम्भ करें। इस प्रकार लिखने से उद्‌देश्य की प्राप्ति शीघ्र होती है।

★ ★ ★

वशीकरण

आगे लिखे मन्त्र को २१ दिन तक नियमित रूप से जिसको वश में करना है, एक यन्त्र बनाकर उसका नाम लिखकर जपें। यन्त्र लिखने की विधि निम्न प्रकार है—

इस यन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिख लें। यह सावधानी बरतें कि भोजपत्र खण्डित न हों। इसके बाद जिस औरत या आदमी को वश में करना है, उसका नाम मन्त्र पर तीन बार पढ़ें और फिर इस यन्त्र को फुलेल (इत्र) में जला दें। मन्त्र और यन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं श्रीपति में वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

१५९	१६२	१६५	१५१
१६४	१५२	१५८	१६३
१५३	१६७	१६०	१५७
१६१	१५६	१५४	१६६

वशीकरण

इस मन्त्र को शुक्रवार के रोज से नियमित जपना प्रारम्भ करें। ४० दिन के पश्चात् यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा अब इस मन्त्र को जलाकर खिला दें। तुरन्त वशीकरण होगा। मन्त्र इस प्रकार है—

बिल्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्लाहु लतीफुन कदीमुन अजलिथ्यु हय्यून कय्यूमुन ला यनामु।

★ ★ ★

यह मन्त्र बहुत ही सरल है और इसमें किसी भी प्रकार की जटिल साधना की भी आवश्यकता नहीं होती है। इस मन्त्र को केवल एक बार सूर्य ग्रहण के असवर पर जपकर सिद्ध कर लें। इसके बाद किसी भी वस्तु पर २१ बार पढ़कर खिला दें। वह व्यक्ति वश में हो जाएगा। मन्त्र इस प्रकार है—

दुहाई बाबा हनुमान की दुहाई मरघट वाली की दुहाई चौगान वाली की दुहाई, मुर्दे खाने वाली की दुहाई पांचों पीरों की दुहाई, सैयद बादशाह की दुहाई ला इलाही लिल्लाह उर रसूल लिल्लाह

दुहाई पवन की, माई की दुहाई,
नगरकोट वाली की दुहाई, बाबा बालकनाथ की दुहाई
गुरु गोखनाथ की दुहाई, अलखिया बाबा की दुहाई
मरतकट वाली की दुहाई, भैरों काली की दुहाई
बंगाली बाबा की दुहाई, पहलवान की दुहाई।

★ ★ ★

अगर आपका पति किसी अन्य नारी के छलावे में आ गया है और आपकी बात बिल्कुल नहीं मानता तो इस टोटके को करें। वह परस्त्री का साथ छोड़ देगा।

रविवार के दिन घर में गूगल जलाएँ और पति को अपने सिर के बाल भस्म करके खिला दें। वह उस नारी का साथ छोड़ देगा।

सर्व वशीकरण

काले घोड़े के अखण्डित २७ दाँतों का प्रबन्ध करें। इसके बाद इन दाँतों को घोड़े के बालों में ही पिरोकर माला बना लें। अब आप किसी भी प्रातःकाल से पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ जाएँ और निम्न मन्त्र का जाप श्रद्धा पूर्वक करें। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो भगवते रुद्राय कालद्रष्टाय "अमुक"
सकुटुम्ब शीघ्र मोहनं हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र की जप संख्या ११०१ है। इसके बाद प्रभावी होता है।

★ ★ ★

प्रायः स्त्रियों को यह शिकायत रहती है कि उनके पति दूसरों के बहकावे में आकर बात-बेबात में मारते हैं और घर से निकाल

देने की धमकी भी देते हैं। अगर कोई माता व बहन इस समस्या से पीड़ित है तो निम्न उपाय करें। लाभ होगा।

शनिवार के दिन अपने हाथ और पाँव की उंगलियों के बीसों नाखून उतार लें। इसके पश्चात् अपने शरीर के किसी भी गुप्त हिस्से के पाँच स्थान के बालों को लें। इन सबको तवे पर शनैः शनैः फूँक लें। यह एक काली भी विभूति बन जाएगी। अब जितनी भी अधिक से अधिक सम्भव हो माला निम्न मन्त्र को श्रद्धा और विश्वास के साथ जप लें। इसके बाद यह अभिमन्त्रित की गई वस्तु पति को खिला दें। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो भगवते कामदेवाय, यस्य-यस्य दृश्यो भवामि। यश्च-यश्च मम मुखं पश्यति, तं-तं मोहयतु स्वाहा।

प्रेमिका वशीकरण

अगर कोई युवक सच्चे मन से किसी को चाहता है या कोई युवती किसी युवक को सच्चे मन से प्रेम करती है तो निम्न मन्त्र का प्रयोग करें। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं कामेश्वर प्रेमिका/प्रेमी का पूरा नाम आनय आनय वशता क्लीं।

मन्त्र प्रारम्भ करने से पूर्व प्रार्थना अवश्य करनी है।

इस उपरोक्त मन्त्र का २१ दिन तक नियम से पालन करें, जब यह सिद्ध होकर प्रभावी हो जाए तो कोई वस्तु इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर खिला दें तुरन्त प्रभाव होगा।

इस मन्त्र का दुरुपयोग करना या किसी के जीवन से खिलवाड़ करना वर्जित बताया गया है। इस बात का अवश्य ध्यान रखें।

वशीकरण तन्त्र

शनिवार की रात लगभग १२ बजे श्मशान जाएँ और श्मशान को न्यौत आएँ। इसके बाद रविवार की रात एक बार फिर श्मशान जाएँ और थोड़ी सी श्मशान (चिता) की राख लाएँ और एक ठीकरी पर रखें उसमें अपना थूक और वीर्य मिलाकर तरल पदार्थ बना लें। अब उस ठीकरी को सामने रखकर निम्न मन्त्र का यथासम्भव अधिक से अधिक जाप करें। इस क्रिया के पश्चात् उस पदार्थ को जिसको वश में करना है, खिला दें। शेष बची ठीकरी को प्रवाहित कर दें। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ओं ऐं पूर क्षोभय भगवती गम्भीरा बलं स्वाहा।

★ ★ ★

अनेक ऐसी समस्याएँ आईं हैं जब स्त्रियों ने बताया कि उनके पति का व्यवहार सबसे अच्छा है, सारे सगे-सम्बन्धी उनकी तारीफ करते हैं, हरेक के दुःख-दर्द में काम आते हैं, पर वह मेरे प्रति काफी सशंकित और क्रूर बर्ताव रखते हैं। तब निम्न उपाय करें—

१५ का यन्त्र लिखकर बत्ती बनाएँ और घी के दीपक में जलाएँ, जब घर में आए तो उसकी भस्म उसे लगा दें। प्रीति उत्पन्न होगी।

जलतत्व प्रधान—

पूर्व

४	९	२
३	५	७
८	१	६

पृथ्वीतत्व प्रधान—

२	९	४	
७	५	३	पश्चिम
६	१	८	

वायुतत्व प्रधान—

८	१	६	
३	५	७	उत्तर
४	९	२	

अग्नितत्व प्रधान—

२	७	६	
९	५	१	दक्षिण
४	३	८	

बदहजमी

बदहजमी या अफारा होने पर तत्काल तुलसी के ७ पत्ते लेकर उन पर 'राम दूताय हनुमान पवन पुत्र हनुमान' कहते हुए ३१ बार फूँक मारें और वह पत्ते रोगी को खिला दें। (याद रखें यह पत्ते रोगी चबाए नहीं) तुरन्त लाभ हो जाएगा।

पसली दर्द

प्रायः देखा गया है कि छाती पसली में तेज दर्द होता है, जिसे

शूल भी कहते हैं। दर्द में आदमी बेचैन हो जाता है।

एक आटे का दीपक बनाएँ और उसके समक्ष 'राम रामेति राम राम राम' का जाप करें। कुछ समय पश्चात् उस दीप को हाथ से बुझा दें। दीपक की बाती निकाल लें और छाती पर मलें। शूल रोग ठीक हो जाएगा। सम्भव हो तो उक्त मन्त्र का जाप निरन्तर करते रहें।

दाद, खाज, खुजली

समस्त चर्म रोगों के उपचार के लिए रुद्राक्ष को अत्यन्त उपयोगी माना गया है।

पाँच, सात, ग्यारह, सोलह मुखी रुद्राक्ष को गंगाजल में घिसकर निम्न मन्त्र का जाप से शुद्ध या अभिमन्त्रित कर लें उसके पश्चात् वह लेप लगाएँ। तुरन्त लाभ होगा। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं हां आं सम्यो स्वाहा।

अगर दाद, खाज, खुजली का रूप अत्यन्त घिनौना हो गया हो तो एक गुलाब की अगरबत्ती शिव की पिण्डी के आगे जला दें।

इस अगरबत्ती की विभूति को उक्त लेप में मिला लें। ध्यान रहे अगरबत्ती केवल शुद्ध चन्दन अथवा गुलाब की हो। तत्पश्चात् निम्न मन्त्र को जप कर अभिमन्त्रित कर लें—

ओं रूं भू य ओं।

भगवान शिव कृपा से अवश्य ही लाभ होगा। यह क्रिया सोमवार के दिन अधिक प्रभावी होगी।

सिर दर्द

शनिवार या मंगलवार के दिन हनुमान मन्दिर के पैरों से थोड़ा

सा सिंदूर ले आएँ इसके बाद इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सिर दर्द के रोगी के माथे पर तिलक कर दें शीघ्र लाभ होगा। यह एक शाबर मन्त्र है, इसमें विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता नहीं होती है।

हजार घर वाले एक घर खाय
आगे चले तो पीछे जाए
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा गुरु का वचन साँचा।

रोग मुक्ति

जीवन में शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसे कभी न कभी कोई न कोई रोग न हुआ हो। भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति पाने के लिए निम्न मन्त्र का प्रयोग करें—

ओं नमो वज्र की चौकी वन में वास,
मरे भूत जो लेवे साँस,
पिण्ड छोड़ी घटता में पैसे,
ब्रह्मा कंची, महेश्वर ताला,
इस पिण्ड का गुरु गोरखनाथ रखवाला।

इस मन्त्र को गंगाजल रखकर एक सौ आठ बार पढ़े और रोगी व्यक्ति को पिला दें। शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ के लक्षण प्रतीत होने लगेंगे।

शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

कंपकपी

प्रायः देखा गया है कि बुखार में भय से कंपकपी प्रारम्भ हो जाती है। कई बार तो अनेक कपड़ों से ढांने के बाद भी कंपकपी

बन्द नहीं होती है।

ऐसे समय में निम्न मन्त्र का जाप कर एक लवंग खिला दें। कंपकपी तुरन्त बन्द हो जाएगी। मन्त्र इस प्रकार है—

ओंम ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः।

रात का ज्वर

ऐसे अनेक रोगी हैं जो दिन भर तो ठीक रहते है, पर रात आते-आते ज्वर हो जाता है। मध्य रात्रि के पश्चात् ज्वर धीरे-धीरे कम होता हुआ प्रातः तक बिल्कुल ठीक हो जाता है।

इस प्रकार के ज्वर के लिए मकोय की जड़ ले लाएं। उस पर इक्कीस बार निम्न मन्त्र का जाप करें और उस जड़ को रोगी के हाथ पर बाँध दें। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ओं टामक शब्द, यू भम्पउ, आला विष उ खाऊ,
चन्दन रूपी ही जगभमऊ, तू छोड़ि विपऊ घरि जाऊ।

वायु विकार

ओं कल्पान्ते नमस्कार फट् स्वाहा। नमः।

इस मन्त्र को किसी भी सूर्यग्रहण के अवसर पर सिद्ध कर लें। इसके पश्चात् पानी या चीनी पर २१ बार पढ़कर रोगी को दे दें। तुरन्त लाभ होगा।

इस मंत्र में अधिकस्य अधिक फलम, जितना जाप करोगे उतनी ही अधिक शक्ति प्राप्त होगी और रोगी को उतनी ही जल्दी आराम होगा।

आधा सिर दर्द

प्राय: देखा जाता है कि कुछ व्यक्ति अपने सिर के आधे हिस्से में तेज दर्द की शिकायत करते हैं। लाख इलाज करने के बाद भी लाभ नहीं होता है। तब कोई एक उपाय करें—

१. जिस व्यक्ति (स्त्री या पुरुष)के सिर में आधा शीशी का दर्द हो वह छोटी सी गुड़ की डली ले। प्रात:काल या सांयकाल जब दोनों समय मिल रहे हों, तो निम्न मन्त्र का जाप करते हुए चौराहे पर जाएँ। वहाँ दक्षिण की ओर मुंह करें। गुड़ की डली को दाँतों के अग्रिम भाग से काट कर दो हिस्से कर लें। तत्पश्चात् उन दोनों को वहीं चौराहे पर एक अपने आगे और एक अपने पीछे फेंक कर चले जाएँ। दर्द शीघ्र ही ठीक हो जाएगा। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं छम् फट: स्वाहा।

२. सफेद चिरमिटी लें और उसे बारीक पीस लें इसके बाद कपड़छान कर लें। गंगाजल मिलाकर उसकी लुगदी तैयार करें। फिर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें।

अब आधा शीशी के दर्द के लिए दवा तैयार है। इसे थोड़े-थोड़े समय के बाद सूँघें। लाभ होगा।

हृदय विकार

१. हौलदिली लेकर उसे काले डोरे में डाल लें। इसे सोमवार के दिन गले में धारण करें।

२. सोमवार के दिन काले डोरे में पाँच मुखी रुद्राक्ष का धारण करना भी हृदय रोग के लिए उत्तम रहता है।

३. जिन व्यक्तियों को कई बार दिल का दौरा पड़ चुका हो, वह निम्न प्रयोग करें—

१. मधु रूपेण पाँच मुखी रुद्राक्ष।

२. एक लाल रंग का हकीक।

३. आधा मीटर गहरा लाल कपड़ा।

४. साबुत लाल मिर्च डंठल सहित।

इन सब वस्तुओं को ३१ बार रोगी के ऊपर से उतार कर किसी नदी में प्रवाहित करवा दें।

मधुमेह

मधुमेह में रोगी जो नियमित रूप से इन्सुलिन ले रहे हों या शक्कर बहुत अधिक जाती हो, वह निम्न बूटी का प्रयोग करें—

१. शिलाजीत

२. विजय सार

३. गिलोय सत

४. गुड़मार बूटी

५. चिजक।

यह सब वस्तुएँ सरलता से मिल जाती हैं। केवल शुद्धता सुनिश्चित् कर लें।

इन सब वस्तुओं को एक ही वजन में लें।

इसके बाद इन्हें कूटकर एक जान कर लें। फिर छान कर लगभग एक-एक माशे की गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को। सुबह और शाम गर्म दूध के साथ सेवन करें। यह गोलियाँ ३१ दिन तक प्रयोग में लानी हैं।

प्रसव कष्ट छूटने का यन्त्र

ओं गं गणपति प्रहितं
हुं (नाम)
हुं गं घं स्वांग हा

इस यन्त्र को शुद्ध गुलाब रस से कांस की पत्तरी पर लिखें फिर उसका धोवन गर्भवती औरत को पिलाएँ तो उसका कष्ट दूर होगा।

सर्व विष नाशक यन्त्र

ओं अजिते स्वाहा
नाम......................
ओं अपराजिते स्वाहा

इस यन्त्र को कोरे चमकदार लाल कपड़े पर लिखें। सिद्ध के नियमानुसार सिद्ध करके ताबीज बनाकर दाहिने हाथ में बाँधने से विष उतर जाता है।

ज्वर नाशक यन्त्र

कुम्भे मोहे
नाम मोहे

इस यन्त्र को जिसे बार-बार ज्वर आता हो उसके गले में बाँधें तो ज्वर चला जाता है।

सर्प नाशक यन्त्र

क्रौं वे क्रौं ह्रीं व ह्रीं
क्रौं व क्रौं ह्रीं त ह्रीं

इस यन्त्र को केले के पत्ते पर लिखकर गूगल की धूप दें। तत्पश्चात् उसका रस निकाल कर सर्प के बिल पर डालें तो सर्प भाग जाए।

आधा शीशी का यन्त्र

अमुक (नाम)
ह्रीं सः (नाम) ह्रीं सः

इस यन्त्र को कागज पर सफेद चन्दन से लिखकर तथा गूगल आदि की धूप देकर अगर भुजा में बांधें, तो आधा शीशी मिट जाएगा।

स्त्री कष्ट निवारण

ह्रीं मां ह्रीं
अमुका

इस यन्त्र को गधे की हड्डी पर लिखकर स्त्री की कमर से बांध दें तो उसको किसी तरह का कष्ट नहीं होगा।

इस यन्त्र को गधे की चमड़ी पर हरी स्याही से लिखें और उसे स्त्री के निवास स्थान पर ही रखें तो कभी कष्ट न हो।

पराक्रमी

ओं वं जे ह्रीं
वैं ह्रीं ओं
वं जगत व ओं ह्रीं

इस यन्त्र को मासिक धर्म के रक्त से लिखकर विषय को और यन्त्र को देखते जाएं तो अधिक समय तक क्रिया हो। इस यन्त्र

को जच्चाखाने की मिट्टी लाकर लिखें तथा रात को भोग विलास करते समय खाट के नीचे रखें तो पराक्रमी बनें।

स्त्री वशीकरण

ओं श्री अमुक श्री ओंम मां का नाम

इस यन्त्र को योनि रज से अथवा चन्दन से हथेली या कागज पर लिखकर औरत को दिखाएँ तो वह वशीभूत हो जाएगी।

इस यन्त्र को लाल रंग के कागज पर चन्दन से लिखें तथा दिन में इत्र से भिगोकर रखें, जिसको वश में करना हो उसकी साड़ी के साथ लगा दें तो मनोरथ पूरा हो।

सर्वकष्ट निवारण इसलामी यन्त्र

निम्नलिखित यन्त्र बनाएँ। एक खाना एकदम काला बनाएँ।

इस यन्त्र को बनाने के बाद किसी ८-१० वर्षीय बालक को नहला-धुलाकर स्वच्छ कपड़े पहना कर उसके शरीर पर सुगंध लगाएँ। सफेद चादर बिछाकर उसके चारों कोनों पर लोहे की कीलें ठोंके। बालक के गले में माला डालकर उसे चादर पर आदर के साथ बैठा दें।

एक दीपक में चमेली का तेल भरकर दीपक सुलगा दें। एक रुपया, सवा किलो मिठाई, हिना का इत्र, फूल और एक तरफ बादशाह के लिए कुछ रख दें।

बालक को काले कोष्ठक पर निगाह रखने के लिए कहें। साथ में. यह मन्त्र बोलें—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अजदो या जिब्राईल या दरदा

ईल या रफ्तमाईल या तन्कफील बहक्कया बुदू हमहम्मन हम्मन बहक्क लाइलाइल्लिलिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह या हैकल या हैकलन या कोकल या कोकलन वहक्क सुलैमान नबी बिन दाऊद अलहुस्सलाम।

५	३	३	
२		६	७८६
७	४	९	

बालक के ऊपर जब बादशाह आएँ तो मेवा मिठाई की भेंट रखकर जो कुछ पूछना हो पूछ लेना चाहिए। उसे खाली खाने में जो कुछ भी दिखाई देगा, वही आपके सवाल का जवाब होगा। इस्लामी तन्त्र विज्ञान में यह यन्त्र जर्बा कहलाते हैं।

वैसे तो अनुभव में यह आया है कि साधकों को यन्त्र में प्रयोग होने वाली कलमों की प्रायः जानकारी होती है, लेकिन प्रसंगवश मैं भी जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ। आप इसी प्रकार की कलमें प्रयोग करें।

कलमों के प्रकार

१. सर्वकार्य सिद्धि हेतु	चमेली की लकड़ी की कलम है।
२. स्तम्भन हेतु	बरगद की लकड़ी की कलम है।
३. वशीकरण हेतु	कुशा की कलम है।
४. शुभ कार्य हेतु	चाँदी या सोने की कलम है।
५. आकर्षण हेतु	जामुन की कलम है।
६. भूत-प्रेत निवारण हेतु	पीपल की लकड़ी की कलम है।
७. शत्रु नाश हेतु	नीम की लकड़ी की कलम है।

कुछ प्रमुख मन्त्र

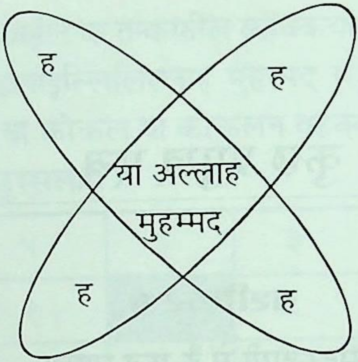
वशीकरण

ओं गुरुजी सिंदूरजोगी में है मन्द प्याला,
जिस कुल गाया, उसी की वह आवे
आधी रात, तन मुझे लागा, घरे सुख नहीं, बाहर सुख नहीं,
फिर-फिर देख हमारा मुख,
हमकूं छोड़ दूसरे कूं ध्यावे,
तो काड कालजा वीर नसिंह खावे,
तले, धरती ऊपर को उठा लाव
सोती की जग आकाश, चन्दा-सूरज दोनु साख,
अजरी हुक मदीया फजरी, बन्द किया, चलो धरे।
मंत्र ईश्वरो वाचा,
वाचा चूके तो उबो सूके।

उपरोक्त मंत्र को ४१ दिन तक ४१ बार रोज पढ़ना है।

दुश्मन विनाशक यंत्र

निम्न यंत्र को कागज पर स्याही से दुश्मन का नाम लिखकर चूल्हे के मुँह पर रखकर छुरी मारे और फिर उस छुरी को इस यंत्र को पढ़कर चूल्हे में खड़ी गाड़ दे और सारा दिन तक न उखाड़े।



बैरी मारण मंत्र

निम्न यंत्र को अखण्डित भोजपत्र के ऊपर हाथी के मद से रविवार के दिन लिखकर विधि से पूजा कर शमशान में आधी रात को जहाँ चिता जलती हो वहाँ नग्न होकर गाड़ दे तो बैरी की मृत्यु हो जाएगी।

बैरी की आकृति

११	८	१	१४
२	१३	१२	७
१६	३	६	९
५अ	१०	१अ१५	४

सर्व कार्य सिद्धि

निम्न यंत्र को हरिद्रा के रंग के कागज पर लिखकर दीपक में

जलावें तो मनोकामना पूर्ण हो। आप इक्कीस बार इस मंत्र को ध्यान में लाएँ।

७८२२	७८१७	७८२४
७८२३	७८२१	७८१९
७८१८	७८२५	७८२०

मोहन मंत्र

ओं ध्रां धं धं ठः ठः।

चिचिका पंक्षी का पंख परिवा को लाकर कस्तूरी में पीसकर मंत्र पढ़कर तिलक करें। जो भी देखेगा मोहित हो जाएगा।

नारी मोहन यंत्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर स्त्री के दूध से लिखकर भुजा में बांधे तो वह स्त्री मोहित हो।

६	९	८
७	१०	३
२	१	४
ओं नमो आदेश गुरु को।		

वशीकरण हेतु

कामरु देश कामाख्या देवी
जहाँ बसे इस्माइल योगी।

दीन्हा लौंग रोज प्राती,
दूसरी लौंग दिखावे राती,
तीनों लौंग रहे थहराय,
चौथी लौंग मिलावे आय। नहीं आवे तो कुआं बावड़ी थार
फिरे डण्डी कुआं बावड़ी छिटक मरे। ओं आदेश गुरु का।
मेरी भक्ति की गुरु की शक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण की रात में चार लौंग लेकर चारों दिशाओं में धरें, बीच में चौमुखा दीपक जलाएँ। फिर धूप सुगन्धित फूलों की माला और नैवेद्य चढ़ाकर एक हजार मंत्र जपें। यह सिद्धि होने पर सात बार लौंग पर मंत्र से फूंक मार दें और उसको जो खायेगा वही वश में होवेगा।

उच्चाटन प्रयोग-१

निम्न यंत्र को चिता के कोयले से बैरी के वस्त्र पर लिखें तो उच्चाटन होगा।

१२३	१२६	१२९	११६
१२८	११७	१२२	१२७
११८	१३१	१२४	१२१
१२५	१२०	११९	१३०

उच्चाटन प्रयोग-२

इस मंत्र को लोहे की कलम से ताँबे के पत्र पर स्याही से लिखें उच्चाटन हो।

ओं गं गणपति प्रहितं हुँ गं स्वाहा हुँ गंध 'अमुक'

कृष्ण चतुदर्शी को आधी रात के समय लाल कपड़ा और लाल फूलों की माला पहनकर लाल चंदन अपने शरीर पर लगाएँ। फिर अपनी अनामिका अंगुली को चीरकर उसमें निकलते हुए खून से इस यंत्र को लिखें और लाल रंग में पुष्प से यंत्र का पूजन करें।

यंत्र को टुकड़े कर जूठे भात में मिलाएँ और उसे ले जाकर श्मशान में कौओं को खिला दें, तो जिसे चाहे उसका उच्चाटन अवश्य हो जाएगा।

बवासीर निवारण का मंत्र

नीचे लिखा मंत्र दस हजार बार जपने पर सिद्ध हो जाता है।

आवश्यकता के समय लाल सूत में ३ गांठें देकर उसके ऊपर मंत्र को २१ बार पढ़कर रोगी के पाँव के अंगूठे में बाँध देने से खूनी, बादी, दोनों तरह से बवासीर पर आराम है। रोगी को चाहिए पहले इस मंत्र को ३ बार पढ़कर आबदस्त अवश्य ले लें।

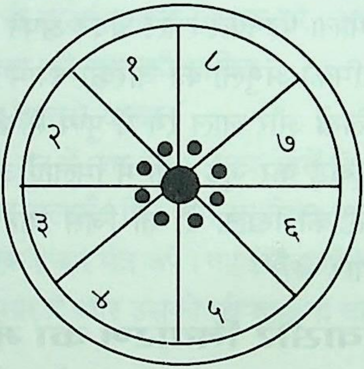
खुरासां की टहनी सा उमति चल-चल स्वाहा।

प्रेत बाधा

पीपल के पाँच पत्तों पर लाल चंदन गंगाजल में घिस कर "राम दूताय हनुमान" दो-दो बार लिखें। अब इसके सामने धूप, दीप अगरबत्ती जला दें और बाधाग्रस्त व्यक्ति को छोड़ देने की प्रार्थना करें। ऐसा करने से प्रेत बाधा नष्ट होती है और भूत जाते-जाते धन वैभव प्रदान कर जाता है।

भूत बाधा से रक्षा हेतु

इस यंत्र को किसी भी रात १२ बजे पीपल के पेड़ के नीचे अष्टगन्ध चिता की राख में मिलाकर अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखें। यंत्र निम्न प्रकार है—



भूत दिखाई देने पर

इस यंत्र को सांय दिन छिपने के पश्चात् अखण्डित भोजपत्र पर केवड़े के रस से अनार की कलम से लिखें। फिर इसे चाँदी के यंत्र में भरकर जिस व्यक्ति को रात्रि में सोते समय भूत प्रेत दिखाई देते हों उसे दे दें। वह रात को सोते समय सिरहाने रखकर सोए। इसके प्रभाव से भूत-प्रेत दिखाई देने बंद हो जाएँगे।

अल्लाह अल्लाह मुहम्मद वतद मुहम्मद वतद मुहम्मद वतद मुहम्मद वतद
नाम............

प्रेत

साधक को चाहिए कि वह ग्रहण के दिन इस मंत्र को सिद्ध कर लें। इसके पश्चात् श्मशान की काफी बड़ी कोरी ठीकरी ले आए। फिर जो व्यक्ति भूत प्रेत बाधा ग्रस्त हो उसे अपने सामने बैठा ले और श्मशान की ठीकरी को बीच में रख ले और निम्नलिखित मंत्र का झारा कर दें। यह क्रिया शुक्रवार और शनिवार को ही करनी चाहिए। ऐसा करने से भूत बाधा शांत होती है। याद रहे ठीकरी को एक ही मुक्के से चूर-चूर कर दें।

ओं नमो खर्परी सर्ववश कर की चौकी,
वज्र भेरू की चौकी,
बावन क्षेत्रपाल की चौकी,
कालजय कालकादेवी की चौकी,
हीये हनुमन्त वीर की चौकी,
सात सहेलियाँ की चौकी,
चौकी चीड़ी बावन वीर की,
चौकी नखसक देव की चौकी,
मार मारकरन्ता आया, घट का रखवाला भेरू,
'अमुक' शरीर की रक्षा नहीं करे तो,
माता कालका का दूध पिया हराम करे,
हमारा, रखवाला न बने तो,
माता कालका की सेज पर पाँव धरे,
शब्द साचा, पिण्ड काचा,
चलो मन्त्र काल भैरव की वाचा।

जिस स्थान पर (अमुक) शब्द आया है, वहाँ पर भूत प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति का नाम जोर से लें और नरसिंह की दुहाई दे। यह झारा पूर्णतः हानि रहित और अत्यन्त प्रभावी है। कोई भी व्यक्ति इसे कर सकता है।

अब हम नीचे हम कुछ यंत्र दे रहे हैं जो किसी भी स्त्री या पुरुष को स्वप्न में भूत प्रेत दिखाई देने पर प्रयोग में ला सकते हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि यह यंत्र केवल स्वप्न में भूत दीखने पर काम आ सकता है। भूत प्रेत बाधा होने पर यह यंत्र अधिक प्रभावकारी नहीं होंगे।

इन यंत्रों को केवड़े के रस या आक के दूध से भोजपत्र पर शुद्धता से लिख लें, फिर जिस स्त्री या पुरुष को रात्रि में भूत दीखते हों वह इनमें से कोई एक यंत्र सिराहने रखकर सो जाएँ। भूत प्रेत दीखने तुरंत बंद हो जाएँगे।

अधिक प्रभावी करने के लिए इस यंत्र को गिलोय का रस या रस अष्टगन्ध से भी लिख सकते हैं। लिखना केवल भेजपत्र पर ही है।

हनुमान सिद्धि

इस यंत्र को कामिया सिन्दूर से सवा लाख बार लिखें, तो हनुमान जी प्रसन्न हों।

६५	७२	२	८
७	३	६९	६८
७१	६६	९	१
४	६	६७	७०

दुःख यंत्र

इस यंत्र को कागज पर लिखकर शत्रु के द्वार पर गाड़े तो घर में अत्यन्त क्लेश होगा।

ॐ घण्टाकर्णो महावीरो

ॐ घण्टाकर्णो महावीरो

यहाँ पर
श्री घण्टाकर्ण
महावीर जी की मूर्ति
आटे से बनायें

ॐ घण्टाकर्णो महावीरो

अमुकस्य/मम सर्वोपद्रवं
नाशनम् कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ घण्टाकर्णो महावीरो

अभिलाषा पूर्ण यंत्र

इस यंत्र को बांस की कलम और जाफरान से सवा लाख बार लिखें, तो कार्य सिद्ध होगा।

८	३	१
९	७	५
४	११	६

वापसी मंत्र

इस यंत्र को सेही के कांटे से एक लाख बार लिखें तो रूठकर

गया मनुष्य वापस आए।

३८	४२	४५	३१
४४	३२	३७	४३
३३	४७	४०	३६
४१	३५	३४	४६

सिद्धि प्राप्ति यंत्र

निम्न यंत्र को सरस के पेड़ के नीचे बैठकर सवा दो लाख बार लिखें तो देवी-देवता प्रसन्न हो।

५३	४८	५५
५४	५२	५०
४१	३५	५१

आपदा दूर यंत्र

इस यंत्र को काले धतूरे के रस से लिखकर अपने या किसी के कंठ में बांधे तो आपदा से सदैव बचा रहे।

४१७	४२१	४२४	४१०
४२३	४११	४१६	४२२
४१२	४२६	४१९	४१५
४२०	४१४	४१३	४२५

वस्तु वापस होने का यंत्र

इस मंत्र को कनेर की छाया में बैठकर बकरे की अस्थि की कलम से लिखें तो गई वस्तु फिर वापस आए।

१०२०	१०२४	१०१०	१०३६
१०२२	१०३४	१०३२	१०२२
१०४०	१०१४	१०२०	१०२६
१०१८	१०२८	१०३८	१०१६

सम्मान होने का यंत्र

इस यंत्र को कपूर और कस्तूरी से लिखें तो राजसभा में आदर होगा।

३९०९	३९०४	३९११
३९१०	३९०८	३९०६
३९०५	३९१२	३९०७

मोहिनी यंत्र

इस यंत्र को पुष्प नक्षत्र में स्त्री के दूध से लिखें तो स्त्री जो कहोगे सो करेगी।

८	११	८८३	१
८८२	२	७	१२
३	८८५	९	६
१०	५	४	८८४

भाग्यशाली यंत्र

२०६२	२०६५	२०६८	२०५४
२०५६	२०५५	२०६१	२०६६
२०५३	२०७०	२०६३	२०६०
२०६४	२०५९	२०५७	२०६९

उपरोक्त यंत्र को दीपावली के दिन दुकान के सामने रखें तो बिक्री अधिक होगी।

रोने वाले बच्चे के गले में बाँधने का यंत्र

अगर बच्चा अधिक रोता है। रात दिन चैन न लेता हो। नींद न आती हो तो यंत्र को लिखकर बच्चे के गले में डाल दें तो बच्चे का रोना बंद हो जाएगा।

१	४	७	१
२	५	८	२
३	६	९	३

वाचा सिद्ध करने का यंत्र

इस यंत्र को भोजपत्र कर कुलींजन के रस से लिखें और ताँबे की ताबीज में मढ़ाकर गले में बांधें तो वाचा सिद्ध होगा।

८	११	४६	१
६२४६	२	७	१२
३	६२४९	९	६
१०	५	८	६२४८

व्यापार में लाभ होने का यंत्र

यह यंत्र भोजपत्र पर शुद्ध केसर की स्याही में बहती नदी का जल डालकर चमेली की कलम से शुक्रवार को ७०० यंत्र लिखकर आटे की गोली बनाकर मछलियों को खिला दें यह यंत्र दुकान पर भी लिखें। लाभ होगा।

२७	३०	३३	२०
३२	२१	२६	३१
२२	३५	२८	२५
२९	२४	२३	३४

बुद्धि वृद्धि यंत्र

यह यंत्र माल कंगनी के रस से शुक्ल पक्ष के दिन भुजा पर लिखे तो बुद्धि बहुत बढ़ेगी।

६४	६७	७०	५७
६९	५८	६३	६८
५९	७२	६५	६२
६६	६१	६०	७१

देवी देवता प्रसन्न करने का यंत्र

यंत्र को आक की लकड़ी से कागज पर लिखें और उस पर अपना मस्तक नवाये तो देवता प्रसन्न हो जाता है। इसमें संदेह नहीं है।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

आकर्षण यंत्र

निम्नलिखित यंत्र पीपल पर लिखकर अथवा उत्कीर्णकर लोबान की धूनी देकर अनार के पेड़ पर लटका दें फिर प्रेमी या प्रेमिका का ध्यान करे तो १५ दिन के भीतर माशूक अवश्य मिलेगी।

अशशयतान फिरऔन हामान	
अ या बददूह	या ब द दूह त
या या या या या या	
स ल स ल स ल स ल स ल स ल स ल स ल	
ह ह ह ह ह ह ह	
फिरऔन हामान शैतान	फिरऔर हामान शैतान

कालिका का मंत्र

श्री कालिका एलक मेलक अढ़त देव देवाने
सैयद मसाने ऐसे बांद वशकर हाथ हथकड़ी
पाँव पैकड़ी सवा मन का तंग ऊपरबज्र प्यान

तेरी शक्ति गुरु की भक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को सोमवार से आरम्भ करें। इसमें २७ दिन में सफलता प्राप्त होती है। सिद्ध होने पर जहाँ कहीं जाएँ तो मंत्र पढ़ के अपने ऊपर जल मारे मिट्टी पर मंत्र पढ़कर जाने पर तिलक लगाए तो कार्य सिद्ध होगा।

भैरव का मंत्र

काली भैरव रात चलो भैरव आधी रात
छाती पांव धरता जाए बैठी होए उठाय लाए
सोती होय जगाए लाए
नहीं लावे तो
माता का दूध हराम करें।

रविवार दीपावली के दिन पहले लाल अंडी के वृक्ष के पास बूरा डालकर यह कहना चाहिए कि वृक्षराज हमें अपना पराक्रम दीजिए। फिर दीपावली को उसके बीज लाकर तेल निकाल ले तथा सिंदूर आदि से उसका पूजन कर उपरोक्त मंत्र का जाप करें तो सफलता मिलेगी।

स्तम्भन यंत्र

अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जिस पर प्रयोग किया जा रहा है। भोजपत्र पर गोरोचन कुंकुम से इस को लिखकर षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। इसे शराब में रखकर यह प्रयोग करें। रात्रि को धरती पर शयन और ब्रह्मचर्य का पालन करें।

दूसरे दिन इस यंत्र को निकाल कर पूजन करके शिखा स्थान पर धारण कर ले और मौन रहकर जल्दी-जल्दी दूसरे यंत्र लिखे। जब आवश्यकता हो तब जिस दिन कार्य हो और उस व्यक्ति के सामने जाना पड़े उस दिन इस यंत्र को मस्तक पर रखकर चला जाए।

राज मोहन यंत्र

इस यंत्र को गोरोचन और सुगंधित कुंकुम से भोजपत्र पर लिखकर शराब में रख दें। यह विधि उस समय तक करता जाए जब तक कार्य सम्पूर्ण न हो। इससे पहले लिखे गए यंत्र को जिस निमित्त किया जाता है उसी निमित्त यह किया जाएगा।

या वलिय्युन		या वलिय्युन
	औरत मर्द का नाम	
या वलिय्युन		या वलिय्युन

मृत्युञ्जय यंत्र

इस यंत्र का नाम मृत्युञ्जय है। जब व्यक्ति पर घोर विपत्ति आ रही हो, दो भोजपत्र लाकर लोहे की सलाई से यंत्र लिखें। दोनों भोजपत्रों पर यंत्र लिखना चाहिए। उन दोनों यंत्रो को मिला दें। उन्हें धरती पर रखकर उत्तर की ओर मुँह करके उन पर एक बड़े पत्थर की शिला रख दें और फिर उसकी तरफ तीन चार कदम चले। इस यंत्र से अनिष्ट नहीं होता है। अमुक स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जिससे हानि होने की संभावना है।

ल	ला	लि
लः		ली
लं	अमुक	
लौ		लु
लो	लै ले	लू

पिशाच यंत्र

इस यंत्र को गोरोचन से अखण्डित भोजपत्र पर लिखकर गाय के दही में रख दें। अमुक के स्थान पर सेवक का नाम लिखा जाएगा। अगर कभी ऐसी स्थिति आ जाए कि किसी नीच के पास कोई काम अटक रहा हो और उस कार्य के विफल होने की आशंका हो जाए तो यह यंत्र सहायता करेगा। जिस पर प्रयोग करना है उसके नाम के जितने अक्षर हों उतने ही मंत्र लिखें और यंत्र में लिखे के अनुसार यंत्र रचना करे।

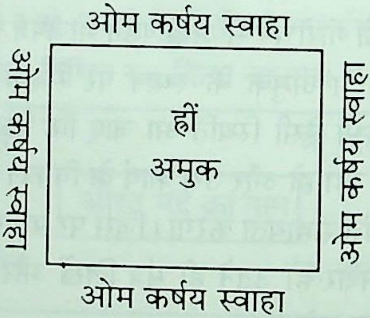
ह्रीं		ह्रीं
	अमुक	
ह्रीं		ह्रीं

गोरोचन से अखण्डित भोजपत्र पर यंत्र लिखकर मृतक के पैर की मिट्टी लाकर उसकी मूर्ति के हृदय में यंत्र रखकर उससे मिट्टी की मूर्ति का पूजन करे। पूजित प्रतिमा को अग्नि के पास जमीन खोदकर गाड़ दे। यह कार्य कृष्ण पक्ष की रात्रि में करना

चाहिए। दिकपालों की प्रसन्नता के लिए ओम महाकालाय स्वाहा के साथ होम करके एक सौ आठ आहुति दे। उसी प्रसाद से हवन करें।

उच्छिष्ट पिशाचकं यंत्र

व्यापार संबंधी कारणों को लेकर अगर कोई विवाद हो जाए तो इस यंत्र का प्रयोग लाभदायक रहेगा। यह यंत्र गोरोचन से अखण्डित भोजपत्र पर लिखना चाहिए। लिखकर पूजन करना चाहिए। पाँच दिन तक इसका प्रयोग करने से भरपूर सफलता मिलती है।



दमन यंत्र

अपने नजदीकी के नाराज हो जाने पर इस यंत्र का प्रयोग किया जाता है। लम्बा ताड़ पत्र लाकर बबूल के कांटे से सोमवार के दिन लिखे और सात दिन तक यह प्रयोग करता रहे। सातवें दिन कुम्हार के यहाँ से काली मिट्टी लाकर उसमें यंत्र वाले ताड़ पत्र को रख दें और उसे श्मशान में फेंक आए। प्रतिदिन यंत्र को हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़ें।

अक्रोधनः सत्यवादी जामदग्न्य दृढ़व्रत।
रामस्य जनकः साक्षात सत्यमूर्ते नमोस्तुते॥

	हूँ	
साध्य		हूँ
	अमुक	
हूँ	हूँ	साध्य

अर्शरोग नाशक

इस यंत्र को नींबू के रस से भोजपत्र पर लिखकर गले में बाँधने से अर्श रोग समाप्त होता है। इस यंत्र को अष्टधातु पर उत्कीर्ण कर दाहिनी भुजा पर बाँधने से अर्श रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जाता है।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

वायु गोला नाशक

इसे रविवार के दिन काली स्याही से भोजपत्र पर लिखकर और सूर्य के सामने पानी से धोकर पीने से वायुगोला नष्ट होता है।

७	५
९	१

शिशुओं के भूत नाशक यंत्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर दस नीम पत्र, वच, हींग, सर्प की केंचुली और सरसों की धूनी बच्चों को दे, व यंत्र को बच्चे को बांध देने से भूत प्रेत दोष दूर होता है।

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

स्वप्न में भूत दर्शन

निम्न यंत्र को कुचले के रस में तथा यंत्र एक तथा दो को गिलोय के रस से लिखकर रात्रि में सोते समय सिर के नीचे रखकर सोने से स्वप्न में भूत दिखाई देते हैं। भूत दिखाई देने पर आप बिना किसी डर के उनसे अपने मन की बात पूछ सकते हैं। यदि आप भलाई के लिए पूछेंगें तो उत्तर तुरन्त मिल जायेगा।

(१)

१	२	३	४
४	३	२	१
१	२	३	४
४	३	२	१

(२)

६	१३	२	८
७	३	१०	११
१२	७	८	१
४	६	९०	९

घर छोड़े व्यक्ति को वापस आने हेतु

चौराहे की मिट्टी लाकर उससे घर की जमीन को लीपकर उस पर श्मशान के कोयले से इस यन्त्र को लिखने से घर से गया व्यक्ति वापस आता है।

७	६	७८	१
२	३	७३	५
३	७६	८	७४
८	७५	१	७४

बुरी नजर का यन्त्र

इस यन्त्र को या तो छोटे ताम्बे के टुकड़े पर लिखवा कर पूजन कर ताँबे के ताबीज में डालकर गले में बाँधने से नजर नहीं लगती।

इबलीस	फिरऔन	हामान	फिरऔन	इबलीस
हामान	इबलीस	फिरऔन	हामान	फिरऔन
इबलीस	फिरऔन	हामान	फिरऔन	इबलीस

बहुत से बालक कुदृष्टि के कारण बराबर रोने लगते हैं जिससे माँ बाप परेशान हो जाते हैं। उन बच्चों को इस यन्त्र को बुधवार के दिन हरिद्रा से भोजपत्र पर लिखकर रोते हुए बालक के गले में बाँधने से बालक रोता नहीं है।

व्यापार वृद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को रक्त चन्दन से दीपावली के दिन दुकान में दीवार पर लिखने से रोजगार में काफी लाभ होता है।

१	४	८	४६
६	४५	४६	२
६	४२	४६	३
४८	५	४६	४

पिरामिड यन्त्र

बसन्त ऋतु में व्यापारी अपने रक्त व लाल चन्दन को मिलाकर सोने की कलम से इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखें। फिर इसे पूजा के स्थान में रखकर **ओं आकर्षय स्वाहा** मन्त्र का सवा लाख बार जप करे तो व्यापार में लाभ होता है। इस यन्त्र को सोमवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर दुकान पर टाँग देने से बिक्री बढ़ जाती है।

५	६	७	८
८	७	६	५
५	६	७	८
८	७	६	५

संकट नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप तथा नैवेद्य से पूजन कर गले में बाँधने से सभी प्रकार के संकट दूर होते हैं।

क	ह	१	८
क	ह	१	८
क	ह	१	८
क	ह	१	८
ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं			

तिजारी ज्वर नाशक

जिस व्यक्ति को हर तीसरे दिन ज्वर आया करता हो उसे यन्त्र को अखण्डित भोजपत्र पर लिखकर बाँह में बाँधने से ज्वर दूर होता है।

०	०	०	०
७१	७१	७१	०
७१	७१	७१	०
७१	७१	७१	०

स्मरण शक्ति हेतु

दीपावली के दिन इस यन्त्र को ज्योतिष्मतिकी डाली से जिसके जीभ पर दस बार लिख लिया जाता है तो बुद्धि विकसित हो जाती है।

फसल	कवसर	इन्नाआतयनाकल
इन्ना	वनहर	लिरलिरब्बिका
अब्तर	हुवल	शनिअका

त्वरित मनोकामना पूर्ति यन्त्र

जब भी कोई संकट या कार्य आ फँसे तभी इसी यन्त्र को लिखकर दाहिने हाथ में बाँधने से कार्य अवश्य ही सफल होता है।

१४	९१	२	९
७	३	९९	९७
९	९	९	१
४	६	९६	८९

सड़क दुर्घटना निवारण यन्त्र

आजकल सड़क पर सभी प्रकार के वाहनों का जैसे—मोटर, स्कूटर, बस, ट्रक, साइकिल आदि का बहुतायत है। अतः वाहन चलाते समय सड़क दुर्घटना से बचने के लिए हर वाहन चालक को इस यन्त्र को सादे कागज पर लिखकर इसकी पूजा कर अपने पास रखना चाहिए। इसे कागज पर लिखने के उपरान्त पीढ़े पर रखकर किसी एक अंक पर अंगुली रखनी चाहिए। फिर जो अंक की संख्या हो उतनी बार '**अंजनी सुत हनुमान रक्षतु-रक्षतु स्वस्ति।**' मन्त्र का पाठ करना चाहिए। फिर इसी प्रकार प्रत्येक अंक पर अंगुली रखकर

उतनी-उतनी बार ही मन्त्र का पाठ करना चाहिए। तत्पश्चात् प्रत्येक चौकोण पर हरीतकी घिसकर चन्दन की तरह लगानी चाहिए। अगरबत्ती जलाकर आक के सूखे पत्तों की धूनी देनी चाहिए। यन्त्र तैयार हो गया। इसे किसी यन्त्र में रखे तथा वाहन चलाते समय अपने पास रखें।

ओं १	मरुत २	आत्मजे ३	नमः ४
हरि ५	मर्कट ६	मर्कटा ७	स्वाहा ८
यं ९	हा १०	क्लीं ११	रं १२
मारुते १३	रं १४	ओं १५	ओं १६

सर्वांगीण उन्नति हेतु यन्त्र

सोमवार के दिन प्रातः स्नान कर इस यन्त्र को पीढ़े पर रखकर दूध से स्नान कराने के बाद गोमूत्र छिड़कना चाहिए। फिर अंक ६ पर अनामिका अंगुली रखकर आँख बन्द कर **ओं नमः शिवाय** मंत्र का पाठ ११०८ बार करना चाहिए। फिर एक अन्य अंक पर अनामिका अंगुली रखकर **''ओं नमो भगवते वासुदेवाय''** मन्त्र का १०८ बार पाठ करना चाहिए। बाद में अंक ९ पर अनामिका अंगुली रखकर **ओं नमो नवनाथाय** मन्त्र का १०८ बार पाठ करना चाहिए। तत्पश्चात्

यन्त्र को चन्दन, पुष्प तुलसी, पत्र, बेल आदि से पूजन कर शुद्ध घी के दीपक से आरती कर धूपबत्ती दिखायें। तदोपरान्त यन्त्र को पूजा स्थल पर रखें।

९	२२	११
२०	१५	१०
१४	१७	६

श्री दुर्गा सप्तशती के कुछ सिद्ध सम्पुट मंत्र

सामूहिक कल्याण के लिए

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या,
निश्शेषदेवगणशक्ति समूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षि पूज्यां,
भक्तया नताः स्मविदधातु शुभानि सा नः॥

विश्व कल्याणार्थ व भय विनाशार्थ

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो,
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परि पालनाय,
नाशच चाशुभभयस्त मति करोतु॥

विश्व रक्षार्थ

या श्री स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

विश्व अभ्युदयार्थ

विश्वेश्वरी त्वं परिपासि विश्वं,
विश्वात्मिका दारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति,
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनमाः ॥

विश्वव्यापी विपत्ति विनाशनार्थ

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोअखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥

विश्व के पाप-ताप निवारणार्थ

देवी प्रसीद परिपालय नोअरिभीते,
नित्यं यथासुरवधदधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु,
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्॥

विपत्तिनाश हेतु

शरणागत् दीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणी नमोऽस्तुते॥

विपत्तिनाश व शुभ प्राप्ति जन्य

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥

काली यन्त्र, श्री मंगला काली यन्त्र, महालक्ष्मी यन्त्र आदि

ऐसे अनेक यन्त्र हैं। जिस प्रकार मन्त्रों की संख्या अनेक है। उसी प्रकार यन्त्रों की संख्या भी अनेक है।

यन्त्र में दिव्य एवं अलौकिक शक्तियों का निवास होता है, यन्त्रों में चौदह प्रकार की शक्तियाँ स्थित हैं। ये शक्तियाँ निम्न हैं—

१. सर्व संक्षोभिणी
२. सर्व विद्राविणी
३. सर्वाकर्षणी
४. सर्वाहलादकारिणी
५. सर्व सम्मोहनी
६. सर्वस्तम्भनकारिणी
७. सर्व जम्भणी
८. सर्वशंकरी
९. सर्वार्थसाधिनी
१०. सर्वोन्मादकारिणी
११. सर्वार्थसाधिनी
१२. सर्वसम्यत्पूरिणी
१३. सर्वमंत्रमयी
१४. सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी

इन्हीं शक्तियों की चौदह संख्या के आधार पर यन्त्रों की रेखाओं और कोष्ठों का निर्माण होता है। यन्त्र की प्रत्येक रेखा एक समान माप की होनी चाहिए तथा रेखाओं द्वारा निर्मित कोष्ठों का आयतन भी समान ही होना चाहिए। इन कोष्ठों के मध्य में संख्याबीज, वर्णबीज व बिन्दु आदि लिखे जाने चाहिए। इस प्रकार सावधानी पूर्वक निर्मित यन्त्र अशुभफलप्रद व प्रभावशाली तथा शक्तिशाली होता है।

राशियों के मांत्रिक प्रयोग

प्रत्येक जातक को अपनी-अपनी राशि के अनुसार अपने राशि के इष्टदेव के सामने अपने राशि के मन्त्र का सवा लाख जप करने से सभी प्रकार के सुख-समृद्धि और शान्ति की प्राप्ति होती है। मन्त्र इस प्रकार है—

१. मेष राशि का मंत्र : ओं ह्रीं श्रींलक्ष्मीनारायण नमः।
या
ओं ऐं क्लीम् सौः।

२. वृष राशि का मंत्र : ओं गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।
या
ओं ऐं क्लीम् श्रीं।

३. मिथुन राशि का मंत्र : ओं क्लीं कृष्णाय नमः
या
ओं क्लीं ऐं सौः।

४. कर्क राशि का मंत्र : ओं हिरण्यगर्भाय अव्यक्त रूपिणे नमः।
या
ओं ह्रीं क्लीं श्रीं।

५. सिंह राशि का मंत्र : ओं क्लीं ब्रह्मणे जगधाराय नमः।
या
ओं ह्रीं श्रीं सौः।

६. कन्या राशि का मंत्र : ओं नमो प्रीं पीताम्बराय नमः।
या
ओं क्लीम् ऐं सौः।

७. तुला राशि का मंत्र : ओं तत्वनिरंजनाय तारकरामाय नमः।
या
ओं ऐं क्लीम् श्रीं।

८. वृश्चिक राशि का मंत्र : ओं नारायण सुरसिंहाय नमः।
या
ओं ऐं क्लीम् सौः।

९. धनु राशि का मंत्र : ओं श्रीं देवकृष्णाय उर्ध्वषंताय नमः।
या
ओं ऐं क्लीं सौः।

१०. मकर राशि का मंत्र : ओं श्रीं वत्सलाय नमः।
या
ओं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः।

११. कुम्भ राशि का मंत्र : ओं श्री उपेन्द्राय अच्युताय नमः।
या
ओं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं।

१२. मीन राशि का मंत्र : ओं क्लीं उद्‌धृताय उद्धारिणी नमः।
या
ओं ह्रीं क्लीम् सौः।

पुत्र प्राप्ति मन्त्र व तन्त्र

जिस दम्पति की कोई सन्तान न हो। उसे रविवार के दिन

सपाक्षी फूल पत्तों से युक्त डाली लाकर सफेद वर्ण की गाय के दूध में कुमारी कन्या के हाथ से पिसवाकर रख लें। फिर ऋतुमति होने पर चौथे से छठें दिन प्रतिदिन एक-एक तोला की मात्रा में इसका सेवन करें। इसके सेवन से पूर्व स्त्री को निम्न मंत्र को १०८ बार जाप करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है—

ओं नमो भगवते देवाय।

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गताः॥

तत्पश्चात् इस मन्त्र के साथ ही भोजपत्र पर अष्टगन्ध श्वेत चन्दन, लाल चन्दन, केशर कस्तूरी, गोरोचन, कपूर अम्बर और अगर से अष्टगन्ध द्रव्य है इससे यह यन्त्र लिखकर ताबीज में भरकर बाहें, गला या कमर में बाँधने से बांझ स्त्री को बच्चा पैदा होता है।

पुत्र रक्षाक यन्त्र

जिस स्त्री को पुत्र पैदा तो होता हो, लेकिन बार-बार मर जाता हो, जिन्दा न रहता हो उन स्त्रियों को यह मन्त्र अनार की कलम से गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर तथा गूगल का धुआँ ताप कर ताबीज में भरकर उस स्त्री के गले में बाँधने से उसका बच्चा कभी नहीं मरता है।

१६५६१८	१६५६२१	१६५६२५	१६५६११
१६५६२४	१६५६१२	१६५६१७	१६५६२२
१६५६१३	१६५६२७	१६५६१९	१६५६१६
१६५६२०	१६५६१५	१६५६१४	१६५६२६

मुख स्तम्भन यन्त्र (१)

गोरोचन, हरताल, हरिद्रा, मैनसिल और कुंकुम से पत्थर पर लिखकर पीले फूलों से व धूप-दीप नैवेद्य पूजन करके इस यन्त्र लिखित पत्थर पर एक पत्थर और रखकर भूमि में गाड़ दें।

८	१२	१५	१
१४	२	७	१३
३	१७	१०	६
११	५	४	१६

मुख स्तम्भन यन्त्र (२)

यह यन्त्र गोरोचन से अखण्डित भोजपत्र पर लिखा जाता है। लाल फूलों से और रक्त चन्दन से इसकी विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। ब्राह्मण को ताँबे की मुद्रा दक्षिणा में देनी चाहिए। अमुक की जगह अभीष्ट व्यक्ति का नाम लिख दिया जाये फिर इस यन्त्र को श्मशान में गहरा गड्ढा खोदकर गाढ़ देना चाहिए।

मोतील	वतल
वतल	मोतील
अमुक	

दुर्भाग्यवर्जक यन्त्र

यह यन्त्र अखण्डित भोजपत्र पर गोरोचन और कामिया सिन्दूर से लिखना चाहिए। नदी के दोनों किनारों की मिट्टी लेकर गणेश

की मूर्ति बनाये और उस यन्त्र को मूर्ति के पेट में रख दे। गणेशः प्रियताम् का मन्त्र जप करते रहें। उस यन्त्र को गाय के दूध से स्नान करा कर लड्डुओं का प्रसाद चढ़ायें और पूजन करें। इसके बाद मूर्ति को शराब में रखकर अधोरेति अमोघेति जपता रहे। फिर इसको गड्ढा खोदकर रख दें और गड्ढे को बन्द कर दे। यन्त्र में अमुक शब्द दो बार लिखा गया है इसलिए आवश्यक है कि यहाँ दोनों स्त्री पुरुषों का—नाम लिखा जाना चाहिए।

४	९	२
३	अमुक	७
८	१	६

भूत प्रेत नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखें, भूत प्रेत का डर न रहेगा।

इस यन्त्र को चाँदी की तश्तरी पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत प्रेत के सताए रोगी के सिर पर दो मिनट रखकर तालाब में फेंक आयें तो भूत स्वयं ही भाग जाएगा।

अ
अ ब ज द ह
अ ब ज द ह व
अ ब ज द ह व ज
अ ब ज द ह व ज ह
अ ब ज द ह व ज ह त

मोहिनी यन्त्र

८	४	३
६	२	७
१	९	५

इस यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर नारी के ताजे दूध से लिखकर बाँह पर बाँधे, तो नारी आकर्षित हो।

इस यन्त्र को लाल रंग के कागज पर चन्दन से लिखें तथा इस इत्र में भिगोकर जिस नारी को वश में करें, उसकी साड़ी में लगा दें, तो मनोरथ सफल होगा। शनिवार के दिन विशेष लाभ होगा। रविवार को यह प्रयोग न करें।

शीतला का यन्त्र

इस यन्त्र को कागज पर लिखकर जिस बालक के शीतला निकले, उसके गले में बाँध देने से शीतला शांत हो जाती है।

८	३	१
९	७	५
४	११	६

कान दर्द का यन्त्र

इस यन्त्र को तुलसी के पत्ते पर लिखें, तत्पश्चात् इसका रस निकाल लें तथा हल्का गर्म कर कान में डालें तो भी कान का कष्ट दूर होता है।

१२१	१२६	१२९	१२४
१२८	११७	१५२	१२७
११८	१३१	११६	१३०
१२२	१२०	११९	१२३

घरेलू झगड़े नाशक यन्त्र

घर में प्रायः क्लेश रहने पर लगातार अशान्ति का वातावरण रहता हो तो इस टोटके को अपनायें। लाभ होगा। टोटका इस प्रकार है—

घर में गेहूँ का आटा केवल सोमवार या शनिवार को ही पिसवायें। पिसवाने से पहले उसमें १०० ग्राम चने डाल दें। इस प्रकार करने से शनैः-शनैः क्लेश समाप्त हो जाएगा और प्यार उत्पन्न होगा। इस यन्त्र को बनाकर सदैव अपने पास रखें।

६	९	८
२	१०	३
७	१	४

आकाशचारी परियों के कारनामें

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में विद्याधरों, परियों, अप्सराओं और गन्धर्वों के आकाश में उड़ने का विवरण मिलता है, वह आकाश मार्ग में ही विचरण करते थे। यह सब कैसे सम्भव था? इसका उल्लेख सही नहीं मिलता पर मनुष्य की अतीन्द्रिय शक्तियों ने ऐसे काम कर दिखलाये हैं, जिन्हें मानव नहीं कर सकता है। शून्य में से वस्तुओं का मँगाना, स्थायी वस्तुओं का स्थानांतरण दूर स्थित कार्य को जान लेना इत्यादि ऐसे कार्यों में सिद्धहस्त रहे हैं। हमारे ग्रन्थों में खेचरी विद्या द्वारा सिद्ध तांत्रिकों के अन्तरिक्ष-भ्रमण के अनेक वृतान्त हैं। मन्त्रबल पर वे किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे, उनके केवल संकेत से ही दूर स्थित वस्तु उनके पास होती थी। बड़े से बड़े पहाड़ तक यह लोग स्थानांतरित कर सकते थे, प्राणों को भी एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रतिष्ठित कर सकते थे।

विद्याधरों की तीन प्रमुख साधनायें मानी गयी हैं—जैन साधना, वैष्णव साधना और मुस्लिम साधना। विद्याधर मुख्यतः हनुमान, भैरव और यक्षों को वश में रखकर उनसे इच्छित काम लेते थे।

१०वीं सदी का भैरवानन्द इस क्रिया का अच्छा ज्ञाता था। उसने कहा है—कहो तो सूर्य के रथ को रोक दें, अप्सराओं, परियों को धरती पर बुला लायें—असम्भव कुछ भी नहीं हैं।

अगिया बेताल सम्राट् चन्द्रगुप्त के वश में थे जिनके माध्यम

से वह आकाश गमन कर सकता था। ऐसा उल्लेख कई प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। मुस्लिम साधना में पीर और औलियों के सहयोग से यह क्रिया होती थी।

यह क्रिया विशेषकर रात में ही होती थी, जहाँ कहीं सूर्योदय हो जाता यह उड़कर जाती हुई वस्तुएँ स्वयं नीचे आ जाती थीं। पुनः उड़ नहीं सकती थीं। उड़ने की क्रियाएँ भारत में ही नहीं, बल्कि पाश्चात्य देशों में भी हुई है, ईसा से लगभग ३०० वर्ष पूर्व एक चीनी कीमती पत्थरों से सुसज्जित रथ पर सवार होकर आकाश-यात्रा करता था।

तिब्बत के लामाओं के लिए कहा जाता है कि वे खुद भी उड़ते थे और वस्तुओं को उड़ाकर स्थानान्तरित कर देते थे। कई साधकों ने लामाओं को उड़ते हुए देखा है। इस क्रिया पर अनुसंधानकर्त्ताओं ने कहा है कि इन क्रियाओं की सफलता उन की साधनाओं में छिपी थी। विद्याधरों की पहचान मन्दिर उड़ाने वालों के रूप में रही है। चित्तौड़ गढ़ के गाँव चाकुड़ा में जो शिव मन्दिर है वे उड़ाकर लाए गये हैं।

चित्तौड़गढ़ के धमाणा गाँव में लक्ष्मीनाथ का मन्दिर है। उसके बारे में कहा जाता है कि यह मन्दिर उड़ाकर लाया गया है। भुंगलावास, निकुंभ, देवलखेड़ी, हाजाखेड़ी, सनवाड़ा में भी ऐसे मन्दिर आ गये हैं। लोगों का विश्वास है यह सब मन्दिर उड़ाकर लाये गए हैं। विद्याधरों ने इनकी स्थापना की है।

मन्दिरों के अलावा राजस्थान में अनेक ऐसे अनेक समाधि-स्थल हैं, जो विद्याधरों द्वारा उड़ाकर लाए गए हैं। यह अनाज के ढेर भी इधर-उधर कर देते थे। चित्तौड़गढ़ जिले के ही बस्सी गाँव में

एक छतरी है जो उड़ाकर लाई गई है। निस्संदेह वे विद्याधरों द्वारा उड़ाकर लाई गयी हैं। उनकी नीवें नहीं हैं, ऐसी कई अधर-शिलाएँ हैं, जिनको साधकों ने अपनी साधना के प्रभाव से यथास्थिति में बना रखा है। कहते हैं जब तक अदृश्य विद्याधर सूक्ष्म शरीर में साधनारत रहेंगे, ये शिलाएँ अधर में झूलती रहेंगी। आकोला में जगन हजारी था, जगन हजारी एक मूर्तिविहीन मन्दिर उड़ा लाया, जिसमें शूरशाह ने ऋषभदेव की मूर्ति की प्रतिष्ठा की इस घटना के ऐतिहासिक प्रमाण आज भी मिलते हैं।

विद्याधरों के इन रोमांचक किस्सों के साथ मुझे कुछ ऐसे साधकों के विषय में भी जानने को मिला, जिन्हें विद्याधरों द्वारा उड़ा कर ले जाया गया वस्तुओं का अनुभव हो जाता था। वह उस वस्तु को बीच में ही उतार सकते थे।

परियों ने बदला लेने और विवाद में नीचा दिखाने के लिए भी अपने चमत्कार दिखलाए हैं। एक शाम की बात है साधक के बीच अनाज के बँटवारे को लेकर विवाद छिड़ गया। वह साधक अप्सरा सिद्धि की प्रक्रिया को जानता था उसने रातोंरात खलिहान में पड़ा गेहूँ का ढेर अपने आश्रम में भेज दिया।

इसी प्रकार एक साधक रहता था वह एक नवयौवना पर आसक्त हो गया। उसने युवती को उड़ाने के लिये जिन्न परी साधना शुरू की एक दिन उस युवती ने केश सँवारने के लिए अपनी छोटी बहन को बाजार भेजकर तेल मँगवाया। जब वह तेल लेकर अप्सरा के सामने से गुजरी तो उसने उसे उड़ाकर साधक के समक्ष उपस्थित कर दिया। अप्सराओं, परियों के कोप अथवा श्राप से गाँव के गाँव नष्ट हो गये हैं। यह तो सुविदित है।

आज न विद्याधर हैं और न परियाँ। यह बातें आज आश्चर्य और अनुसंधान का विषय है, परियों, विद्याधर, प्रेत और भूत की बातें। क्या वह वस्तु को गुरुत्वाकर्षण से मुक्त कर देते थे? क्या वह मन्दिरों के पंख लगा देते थे?

प्राय: ऐसा माना जाता है कि इनके वश में ऐसे शक्तिशाली यक्ष, भूत-प्रेत और बेताल होते थे जो विशेष धावक होते थे और आकाश मार्ग से किसी भी वस्तु को ले जाने की सामर्थ्य रखते थे जो भी हो, इनकी शक्ति द्वारा पिण्डों को स्थानान्तरित करने का सिद्धान्त खोजा था। उनकी खोज शक्ति प्रबल थी। गुरुत्वाकर्षण शक्ति पर विजय पाकर इस प्रकार के कार्य सम्भव हैं। लेकिन यह सब कठोर साधना के द्वारा ही हो सकता है, यह सत्य है।

तन्त्र मन्त्र की दुर्लभ अचूक साधनायें

प्राचीन शास्त्रों और पुराणों में जो वर्णन प्राप्त होता है उनको पढ़ने से ऐसा अनुभव होता है कि प्रत्येक देवता और ऋषि ने अनेक साधनाओं को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रत्येक साधक को प्रयत्न करके साधना करनी ही चाहिए और तब तक प्रयत्न करता रहे, जब तक कि वह पूर्णरूपेण सिद्ध न हो जाए। अगर प्रयत्न करने के बाद सिद्धि हो गयी तो उसकी जन्म-जन्म की अभिलाषा समाप्त हो जायेगी और जीवन में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं रहेगी।

साधक अगर चाहे तो गोपनीय तन्त्र साधना को सम्पन्न कर जीवन में सम्पूर्ण भोग और यश, पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकता है। साधना सम्पन्न करने के बाद साधक गर्व का अनुभव न करें। वृथा बकवाद अथवा आडम्बर भी न करें। साधना में मन्त्र का विशेष स्थान है। मन्त्र साधक को सभी प्रकार के भयों से मुक्ति दिलाता है। मन व एकाग्रता प्रदान कर के जप द्वारा समस्त भयों का नाश करके पूर्ण रक्षा करने वाले शब्दों को मन्त्र कहा जाता है। मन को एकाग्र करना और रक्षा करना जिसका धर्म है और जो अभीष्ट फल प्रदान करे, वे मंत्र कहे जाते हैं। मन्त्र जीवन को मोड़ता है। मन्त्र जप करने से साधक का जिसमें हित होता है उसे मन्त्र का अधिष्ठाता देवता स्वयं संपादित करता है। मन्त्र जप, उत्तम साधन

है। मंत्र-जप द्वारा साधक की कुण्डली में आये निर्बल ग्रह को सबल ग्रह बना कर शुभ बनाया जा सकता है और साधक को उनके अशुभ प्रभाव से बचाया जा सकता है तथा भविष्य में उनसे लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है।

प्रिय साधको! यह तो बात मन्त्र की, जप की और साधक के शुभ और सफलता की, अब आपके लिए तन्त्र की कुछ अचूक दुर्लभ साधनायें प्रस्तुत हैं।

माँ काली साधना

साधक किसी भी मार्ग से अथवा किसी भी सम्प्रदाय से हो, वह शिशु के समान ही होता है। अब यह बात दूसरी है कि कोई इस शिशुत्व को सहज स्वीकार कर लेता है और किसी को आगे चलकर स्वीकार करना पड़ता है। जिसे हम अपनी कठोर साधना की शक्ति कहते हैं वह वास्तव में क्या मातृस्वरूपा जगदम्बा द्वारा दी गई भाषा-ज्ञान के समान नहीं है? समस्त साधना और तप उसी माता से निकल कर प्रकाश की तरह साधक तक आ रहा है। जीवन के मध्य यह बात हम जितनी जल्दी स्वीकार कर लें, उतना ही अच्छा होगा। यह युग कलियुग जाना जाता है, और जो जैसी मानसिकता के बीच जीवन जिया है उससे कोई भी अपरिचित नहीं। वास्तविक अर्थों में यह तन्त्र का एक मात्र ही नहीं सम्पूर्ण रूप से तन्त्र का युग है। मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है। सिद्धि निरन्तर साधना या तोते की तरह दोहराये जा रहे प्रवचनों में नहीं अपितु गुप्त साधनाओं में छुपी है, और वह भी तंत्रोक्त साधनाओं में। 'कलि' पर केवल 'काली' ही विजय प्राप्त करने में सक्षम है और काली का अर्थ ही तंत्रोक्त

साधना है।

महाकाली की साधना के विधान तो प्रारम्भ से अन्त तक केवल तंत्रोक्त ही हैं, कोई भी ग्रन्थ उठाकर देखा जा सकता है। काली के तेजस्वी व सौन्दर्यमय स्वरूप का दूसरा नाम 'ललिता' है। माँ ललिता सम्पूर्ण तन्त्रशास्त्र की मूल देवी मानी गई है, और यह विद्या इतनी गोपनीय और दुर्लभ मानी गई है कि इसको किसी को भी बतलाना निषेध कर दिया गया। इसी से यह साधना लुप्त एवं अप्रचलित हो गई। यही जगदम्बा का स्वरूप है, वे ही अलग-अलग रूपों से हमारे जीवन का कल्याण करने वाली हमें साधना में सफल करने वाली वे ही प्रतिक्षण हमारे दुःख से कातर होने वाली भी हैं।

जिस प्रकार माँ का ध्यान केवल शिशु में लगा रहता है ठीक उसी प्रकार काली का ध्यान भी जब तक साधना में है उसका ध्यान लगा रहता है। हालाँकि मूल प्रयोग तो केवल २१ दिन का ही है फिर भी साधक को चाहिए आगे भी नित्य करता रहे। साधक केवल रात्रि में ही साधना सम्पन्न करें। वस्त्र लाल होने चाहिएँ। लाल वस्त्र पहन कर साधक दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठे।

इस साधना में काली यन्त्र का पूजन देवी की शक्ति का स्मरण करते हुए और उसे अपने भीतर समाहित करने की प्रबल भावना रखते हुए कामिया सिन्दूर की इक्कीस बिन्दियों द्वारा ही करना है, काली यन्त्र ही अपने आप में चैतन्य और सिद्धिप्रद है। साधक को चाहिए कि वह रुद्राक्ष की माला के द्वारा मन्त्र जप करे। वह मन्त्र इस प्रकार है—

ओं कागा कालिका नमः।

अनंग रती साधना

भारतीय संस्कृति और ज्योतिष के विद्वानों के यह कहते ही कि तारा उदय हो गया के साथ ही शुरू हो जाती है किसी सर्वगुण सम्पन्न जीवन साथी की तलाश···हृदय की सारी उमंगों के साथ-साथ···कामदेव द्वारा काम बाण का संधान होते ही इसी बसन्त ऋतु में ऐसी उमंगें उमड़ आएँ कि जीवन साथी की आवश्यकता अत्यन्त अनुभव होने लगे और मन कसमसा के जाग उठे अपनी समस्त कोमल भावनाओं और इच्छाओं के साथ।

विवाह मानव जीवन का एक अत्यन्त आवश्यक और नाजुक मोड़ है इसके विषय में हल्के ढंग से निर्णय नहीं लिया जा सकता और ऐसी स्थितियों में जहाँ कोई लड़का अथवा लड़की दोष से ग्रस्त हो वहाँ तो बेहद सावधानी पूर्वक विचार कर निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। विवाह के बारे में कई प्रयोग अनेक पुस्तकों में दिए गए हैं, अपनी पिछली पुस्तकों में मैंने भी ऐसे प्रयोग प्रकाशित किए जहाँ कोई मन चाहा वर अथवा वधु पाने की बात हो और साधक सरल प्रयासों से ही अपनी इच्छा की पूर्ति कर सके, लेकिन यही सबकुछ अभिशाप बन जाता है।

जब किसी युवक युवती के लिए उसकी विवाह योग्य आयु हो गई हो किन्तु उचित मेल न मिल पाया हो···कारण, शारीरिक असुन्दरता हो ग्रहों का सही मेल न हो पाना, सर्वांग गुण सम्पन्न होते हुए भी मनोनुकूल जीवन साथी न मिल पाना इस कारण मन पर बोझिलता व उदासी की पर्तें [illegible] हो जाती हैं, जो नवयुवक या नवयुवती को असमय ही हताश और रूखा बना देती हैं। ऐसे में सारी सतर्कता, सारी योजनाएँ, सारे प्रयोग सारे मेल-मिलाप एक

ओर पड़े रह जाते हैं, और व्यक्ति अपने मनोवांछित को पाने में सफल नहीं हो पाता।

लेकिन सभी प्रयोगों, ऐसी साधनाओं का सिद्धि का मुहूर्त होता है यह मुहूर्त आप स्वयं देख लें और इस अचूक को प्रयोग करें। यह प्रयोग अवश्य ही सफल होता है और साधक या साधिका अपने मनोनुकूल जीवन साथी प्राप्त करने में निश्चय ही सफल होता हैं।

किसी भी शुक्ल पक्ष में गुरुवार के दिन प्रातः स्नान कर जितना शीघ्र हो सके सूर्योदय के तुरन्त बाद साधना में बैठ जाए। शुद्ध चमकदार पीले वस्त्र धारण करे और सामने पीले पुष्पों पर गुरु यन्त्र स्थापित कर अपने विवाह जैसी भी बाधा आ रही हो, उसका मन ही मन निराकरण करने की प्रार्थना करे, जिस विशेष वर या वधू की इच्छा हो उसके नाम का संकल्प करके जाप शुरू करे। यह जाप केवल आठ दिन करें। निम्न मन्त्र की कम से कम आठ माला प्रतिदिन करनी हैं। मंत्र इस प्रकार है—

ओं ह्रीं ऐं अनंग रत्यै फट्

मन्त्र जप के बाद यन्त्र को एक पीले वस्त्र में बाँधकर अपने पास रख लें तथा माला किसी केले के पेड़ के नीचे चढ़ा दें। वास्तव में यह तन्त्र का तीव्र प्रयोग है इसलिए इसका कम से कम प्रचार करें तथा अपनी मनोकामना पूर्ण हो जाने पर वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने के बाद भी मन्त्र को यथा सम्भव अवश्य जपें। इस प्रयोग के कारण सम्पूर्ण वैवाहिक जीवन में सदैव अनुकूलता बनी रहती है।

★ ★ ★

छाया पुरुष साधना

इस संसार का न केवल सामान्य संसारी वरन् तांत्रिक भी भूत, भविष्य और वर्तमान जानने का इच्छुक होता है। तन्त्र विज्ञान में वर्तमान को सँवारने की कोई सटीक विद्या नहीं है क्योंकि वर्तमान तो संक्रमण का एक पल मात्र है और इसी से तन्त्र विज्ञान में भूत भविष्य की साधनाओं को ही प्रमुखता दी गई। जहाँ भूतकाल में झाँककर अपने आचरण को समझने की चेष्टा करता है वहीं भविष्य के क्षणों को पकड़कर अपना जीवन सँवारने का कार्य करता है।

तांत्रिकों के अनुसार जीवन का अन्त वह नहीं है जिसे मृत्यु के अर्थ में बतलाया जाता है। वरन् जीवन का अन्त तो वह है जब शरीर अशक्त हो जाए, मन में उत्साह और आशा शेष न रह जाए और बस जीवन व्यतीत करने की इच्छा शेष रह जाए। जीवन में ऐसी स्थिति आने से पूर्व साधना के द्वारा इसे सँभाल लेने में ही बुद्धिमत्ता है। अगर साधक के पास ऐसी साधना नहीं है, तो उस साधक और धरा पर पड़े जड़ पत्थर में कोई अन्तर ही नहीं, जो ठोकरों के माध्यम से इधर से उधर लुढ़कता रहता है।

छाया पुरुष साधना एक ऐसी साधना है इसमें सिद्धि प्राप्त कर साधक ऐसी क्षमता प्राप्त कर लेता है कि उसे न केवल अपने भविष्य का वरन् किसी के भी भविष्य का ज्ञान हो जाता है। होली का पर्व तो तांत्रोक्त साधनाओं के लिए ही होता है। तन्त्र मार्ग में कुछ ऐसी गोपनीय साधनायें हैं जो केवल होली की रात्रि में ही सम्पन्न की जा सकती हैं।

छाया पुरुष साधना कर्ण पिशाचिनी साधना के समान है भी और नहीं भी है। कर्ण पिशाचिनी तामसिक साधना है वहीं यह उत्तम

साधना है, अमावस्या की मध्य रात्रि को साधक लगभग स्नान कर काली धोती, काली बनियान पहनकर, काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठे और अपने सामने काले तिलों की ढेरी स्थापित कर दें, फिर कामिया सिन्दूर का तिलक करे और कड़वे तेल का दीपक जलाने के बाद उसका तेल अपने तलवों में लगाकर अभिमन्त्रित काले हकीक की माला से निम्न मन्त्र की ३१ माला का जप करें। सिर पर काला रूमाल और कांधे पर काला वस्त्र अवश्य होना चाहिए। अगले दिन प्रातः सूर्योदय के पूर्व ही साधक काले तिल की ढेरी को लाल वस्त्र में बाँधकर जहाँ चार रास्ते मिलते हों, वहाँ रख दे। यह साधना १२ दिन नियम से करनी है। समय एक ही रहना चाहिए।

मन्त्र इस प्रकार है—

ओं ग्लौं हौं भविष्य छाया पुरुषाय सिद्धये कथय दर्शय हौं ग्लौं फट्।

अंत में...

मेरी प्रस्तुत पुस्तक "तन्त्र के अचूक प्रयोग" सम्पूर्ण हो गई। मैंने इस पुस्तक में यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विज्ञान के वह अचूक प्रयोग प्रस्तुत किये हैं जो एक बार नहीं अनेक बार प्रयोग में आ चुके हैं और वह सफल सिद्ध हुए हैं। मुझे यह कहते हुए कोई संकोच अथवा लज्जा नहीं है कि प्रस्तुत पुस्तक में जो भी गुणनिधि है वह सब तांत्रिकों, कौलाचार्यों, गुरुओं की देन है और जो अवगुण और त्रुटियाँ हैं वह सब मेरी हैं। आशा है अनुज समझकर क्षमा कर देंगे।

तन्त्र वह शक्ति है जिससे सम्बन्ध स्थापित करके साधक अपने जीवन व विकासं के मार्ग में सहायता प्राप्त कर सकता है। माँ पराम्बा की अनेक शक्तियाँ हैं, जिनके कार्य और गुण पृथक-पृथक हैं। उन शक्तियों में तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र शक्ति का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह साधक को सद्बुद्धि की प्रेरणा देती है।

तन्त्र मार्ग से सम्बन्ध जोड़ने वाले साधक में निरन्तर एक ऐसी सूक्ष्म और चैतन्य विद्युत धारा संचार करने लगती है जो मुख्यतः मन, बुद्धि, चित्त और अन्तःकरण पर अपना अच्छा प्रभाव डालती है। बौद्धिक क्षेत्र के अनेकों कुविचारों, असत् संकल्पों, पतनोन्मुख दुर्गुणों का अन्धकार तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र विज्ञान के प्रकाश के उदय होने से हटने लगता है। यह प्रकाश जितना तीव्र होने लगता है, अन्धकार का अन्त उसी प्रकार से निरंतर होता जाता है।

तन्त्र साधना के द्वारा साधकों को बड़े-बड़े लाभ प्राप्त होते हैं। मेरे परामर्श तथा पथ-प्रदर्शन में जब तक अनेकों साधकों ने तन्त्र-मन्त्र साधना सम्पन्न की है उन्हें सांसारिक और आत्मिक जो आश्चर्यजनक लाभ होते हैं वह उन्होंने अपनी आँखों से देखे हैं। इसका कारण यही है कि तन्त्र-मन्त्र साधना के रूप में उन्हें सद्बुद्धि प्राप्त होती है और उसके प्रकाश में उन सब दुर्बलताओं, उलझनों, कठिनाइयों का हल निकल आता है, जो साधक को दीन-हीन, दुःखी, दरिद्री, चिन्तातुर एवं कुमार्गगामी बनाता है।

जिन साधकों की मनोभूमि सुव्यवस्थित, स्वस्थ, सतोगुणी एवं सन्तुलित है उन्हें तन्त्र साधना का चमत्कारी लाभ मिलता है और यह भी स्पष्ट ही है कि जिनकी मनोभूमि जितने अंशों में सुविकसित है, वह उसी अनुपात में सुखी रहेगा, क्योंकि विचारों से कार्य होते हैं और कार्यों के परिणाम सुख-दुःख, यश-अपयश के रूप में सामने आते हैं। जिनके विचार उत्तम हैं वह उत्तम कार्य करेगा, जिसके कार्य उत्तम होंगे उसके चरणों तले सुख, शान्ति, समृद्धि बराबर लोटती रहेगी।

तन्त्र-मन्त्र अथवा यन्त्र साधना के समय साधक को निद्रा, आलस्य का त्याग कर देना चाहिए। एक बार भगवान बुद्ध एक प्रवचन कर रहे थे। श्रोताओं में बैठा एक साधक बार-बार नींद के झोंके ले रहा था। बुद्ध ने उस साधक से पूछा—"वत्स सोते हो।"
"नहीं भगवन्" हड़बड़ा कर ऊँघते हुए साधक ने कहा।

प्रवचन पुनः शुरू हो गया। साधक फिर ऊँघने लगा। तथागत ने दो तीन बार उसे जगाया, लेकिन वह हर बार "नहीं भगवन्!" कहकर फिर सो जाता। अन्तिम बार तथागत ने पूछा—"वत्स जीवित

हो।'' साधक ने आदतवश उत्तर दिया—''नहीं, भगवन्।''

श्रोताओं में हँसी की लहर दौड़ गयी। भगवान् बुद्ध ने गम्भीर होकर कहा—वत्स निद्रा में तुमसे सही उत्तर स्वयं निकल गया। जो निद्रा में है वह मृतक समान है। जब तक हम विवेक और प्रज्ञा में नहीं जागते, तब तक हम मृतक के ही समान हैं। साधक को साधना हेतु जागना ही होगा।

मुझे एक बात और याद आ रही है। यह बात उस समय की है जब मैं गुरु आश्रम में था। गुरु जी ने सुनाया कि एक बार यूनान के अत्याचारी अधिकारियों ने आत्माभिमानी राजा डायोजिनी को पकड़कर बिक्री के लिए गुलामों के बाजार में बैठा दिया। बेचने वालों ने उससे पूछा—तुम कौन-सा काम अच्छी तरह कर सकते हो बता दो, जिससे तुम्हारी विशेषताओं के अनुरूप उपयुक्त ग्राहक खोजा जाये।

डायोजिनी ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ घोषणा करनेवालों से कहा—मैं अच्छा शासन कर सकता हूँ, घोषित करो कि किसी को स्वामी की आवश्यकता हो तो मुझे ले जा सकता है। बस यही बात आप समझ लें। आप जन्मजात साधक हैं। साधना का और आपका साथ जन्म-जन्म से है। अब इस संसार में जिसको भी सच्चे साधक की आवश्यकता हो वह आपको ले जा सकता है। इससे कम में आप फैसला नहीं कर सकते हैं।

इस ब्रह्माण्ड में मुख्य ग्रह केवल सात हैं और उनके सात रंग हैं तथा पृथ्वी पर सात ही प्रकार की किरणें पड़ती हैं। इसी कारण इन ग्रहों से सम्बन्धित ग्रह को अनुकूल करने के लिये रत्न धारण किया जाता है। शनि की किरणों में नीला, बृहस्पति में पीला, शुक्र में सफ़ेद, बुध में हरा, मंगल में लाल, चन्द्रमा में हल्का पीलापन लिये

सफेद और सूर्य स्वर्ण रंग का दिखता है। उदर को चलाने का कार्य शनि, राहु तथा केतु तीन ग्रह करते हैं।

यह सत्य है कि कर्मों का भुगतान जीव को करना पड़ता है। ग्रहों का कोई अधिक दोष नहीं होता है। सत्य तो यह है हम बुरे काम करने से हिचकिचाते नहीं और ग्रह हमें मारने से रुकते नहीं हैं।

पुण्यापुण्य, उपयुक्त, अनुपयुक्त कर्मों के फल प्रारब्ध के साथ-साथ इस जन्म में किये हुए कर्म का भी संचय होता रहता है। शास्त्र का मत है कि साधक की साधना जब तक बनी रहती है, ग्रहों के फल निर्धारित मात्रा में होते रहते हैं। इस लिए जो साधक सांसारिक चक्र में फँसे सांसारिक वासनाओं के बीच उलझे रहते हैं उन पर ग्रहों का प्रभाव सर्वाधिक होता है।

जो साधक इससे ऊपर उठ चुके हैं उन पर ग्रहों नक्षत्रों का प्रभाव, बहुत कम होता है। प्रत्येक साधक साधना करने में स्वतन्त्र है पर सिद्धि में ठीक परतन्त्र है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में कहा है, ''करम प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करइ सो तस फल चाखा।'' अच्छे और बुरे कर्मों का भुगतान कराने के लिए प्रभु ने ग्रहों को कार्य सौंप दिया। ये अच्छे और बुरे कर्मों का फल देते हैं।

इस जगत के संचालन हेतु परमात्मा ने अपने आपको अनन्त गुप्त शक्तियों के रूप में विभाजित कियां हुआ है। यह ग्रह और मन्त्र भी उसकी शक्तियाँ हैं, जो प्राणी-मात्र का उसके कर्मानुसार भाग्य निर्माण कर, उसे भोग करवा कर शुद्ध करने का कार्य करते हैं। मानव कर्म करने में स्वतन्त्र है इसलिए हर कार्य को वह मोहवश कर उसके फल का भागी स्वतः बन जाता है और अच्छे-बुरे परिणाम का जिम्मा ले लेता है। बस यहीं से हर संसारी प्राणी का ग्रहों से

सम्बन्ध बन जाता है और उनका प्रभाव उस पर पड़ने लगता है। इसलिए इन ग्रहों की चाल और बुरे फलों से बचने के लिए साधना का विधान हमारे तांत्रिकों ने किया है।

आज के वैज्ञानिक युग में धुआँधार प्रचार के कारण मनुष्य भटक गया है। आज का विज्ञान प्रकृति के कुछ तत्वों को खोज कर, नियन्त्रित कर अपना चमत्कार दिखा रहा है। वह समुद्र की गहराइयों में उतर चुका है, आकाश की ओर छोर नाप चुका है। अणु परमाणुओं का एकीकरण और विकिरण कर प्रकृति को अपने अधीन समझ रहा है, वह कितना मूर्ख है? क्योंकि इस विज्ञान की चकाचौंध वाली विचार-तरंगों में अध्यात्म का अभाव है इसलिए उस प्रभु की सर्वज्ञता मानने से इन्कार करता है।

विज्ञान की शक्ति सिर्फ विश्व तक सीमित है। वह केवल क्या है? इतना ही बतला सकता है। क्या होना चाहिए? और क्यों नहीं होना चाहिए? इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर वह आज तक नहीं दे पाया है।

सारे साधक कर्मानुसार अपनी-अपनी साधना का फल पाते हैं, क्योंकि जो भी शुभ अथवा अशुभ कर्म होता है उसका कभी भी नाश नहीं होता है। जीव कर्मानुसार जन्म लेता है। कर्म से ही वह मनुष्य अथवा पशु योनियों में उत्पन्न होता है। कर्म से वह नरक में जाता है और कर्म से ही उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

संसार में प्रत्येक वस्तु का एक अधिष्ठाता देवता होता है। देवताओं की निरन्तर साधना से लौकिक तथा पारलौकिक उन्नति बड़ी सरलता से प्राप्त हो जाती है।

कुरुक्षेत्र युद्ध के उपरान्त श्रीकृष्ण ने द्वारका में निवास किया।

एक दिन पांडव द्वारका पहुँचे। उन्होंने देखा द्वारकावासी एक ब्राह्मण के आठ शिशुओं का एक-एक करके देहांत हो गया। नवें बच्चे का शव लिये वह कृष्ण के द्वार पहुँच कर विलाप करते हुए खरी-खोटी सुनाता रहा। यह सुनकर भी कृष्ण मौन रहे, पर अभिमानी अर्जुन ने उसके आगामी शिशु की रक्षा का वचन दिया और शपथ ली कि ब्राह्मण के शिशु की मृत्यु से रक्षा न कर पाने पर वह खुद आग में कूद कर प्राण त्याग देगा। बच्चा पैदा हुआ तो उसका शव भी दिखाई नहीं पड़ा। क्रंदन करते हुए ब्राह्मण ने अर्जुन को बहुत कोसा।

अर्जुन आग में कूदने की तैयारी कर ही रहे थे कि कृष्ण ने उन्हें रोक लिया। कृष्ण और अर्जुन बच्चों को ढूँढ़ते हुए बैकुंठ पहुँचे। सभी बच्चों को विष्णु ने इसी उद्देश्य से अपने पास बुला लिया था कि कृष्ण और अर्जुन का उन्हें एक साथ दर्शन प्राप्त हो जाये। कहने का उद्देश्य यह है कि हर सुख और दुःख के पीछे प्रकृति का एक निश्चित उद्देश्य होता है, जिसे वह अपने गणित से पूरा करती है। इस गणित को पलटने वाला विज्ञान ही 'तन्त्र' है। इसको जानने वाला तांत्रिक होता है।

'यन्त्र' वस्तुतः मन्त्र विद्या का उपजीव्य है, वैसे मन्त्र विद्या की तीनों शाखाएँ मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र—स्वयं में पृथक विषय माने जाते हैं। इन्हें मन्त्र विद्या, यन्त्र विद्या और तन्त्र विद्या की संज्ञा से विवेचित किया गया है। इनकी साधना पद्धति सम्बन्धी ग्रंथ विपुल परिमाण में उपलब्ध होते हैं। उद्देश्य भले ही एक हो, किन्तु साधना और साधना की पद्धति की दृष्टि से इन तीनों में भिन्नता है। जहाँ मन्त्र साधना मानसिक होती है, वहाँ यन्त्र साधना में आकृति को माध्यम बनाया जाता है।

यन्त्र में मन्त्र की मानसिकता और यन्त्र की रूपात्मकता के साथ-साथ कुछ विशिष्ट भौतिक उत्पादनों को भी शामिल किया जाता है। मन्त्र साधना ध्वनिप्रधान होती है, यन्त्र-साधना आकृति प्रधान होती है और तन्त्र साधना क्रिया प्रधान होती है। तीनों की शक्ति अद्‌भुत है, किन्तु सफलता के लिए साधना विधि का निर्दोष होना परम आवश्यक है। मन्त्र सिद्धि के कारण यन्त्र अपना चमत्कारी प्रभाव डालता है।

बिजली का कोई तार, जिसमें विद्युत प्रवाह हो, सामान्य वस्तु प्रतीत होने पर भी असीम शक्ति से सम्पन्न होता है। उसका स्पर्श भारी से भारी मशीनों को भी गतिमान कर देता है, विशाल भवनों को धराशायी कर सकता है और महाकाय जीव को आधे मिनट में मौत के घाट उतार सकता है। ऐसी ही अलौकिक शक्ति यन्त्रों में निहित रहती है। भौतिक यन्त्रों की अपेक्षा यन्त्र सैकड़ों गुना अधिक शक्तिशाली होते हैं। उनके प्रभाव को देखकर आज का उन्नत विज्ञान भी दिग्भ्रमित हो जाता है।

यन्त्र-मन्त्र विज्ञान के अचूक, अनछुए रहस्यों को उजागर करती मेरी यह कृति "तन्त्र के अचूक प्रयोग" हैं, मैं यह स्वीकार करता हूँ, कि आप मेरी कृति को चाव से पढ़ते हैं और नई पुस्तकों की आतुरता से प्रतीक्षा करते हैं। मुझे आपके सुझावों, मार्ग दर्शन की आतुरता से प्रतीक्षा रहेगी। आप स्मरण रखें आपका एक साधारण सा पत्र मुझे नई दिशा और उत्साह देता है।

तांत्रिक बहल
"तन्त्र सबके लिये मिशन"
डी-४, राधापुरी, कृष्णानगर, देहली-११००५१

पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें?

लेखक : तान्त्रिक बहल

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र विज्ञान अलौकिक शक्तियों का स्वामी है। तन्त्र विज्ञान में वह शक्तियाँ छिपी हैं, जिन से आप हजारों मील की घटनाओं को स्पष्ट देख सकते हैं, किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं, धरती के भीतर दबे हुए धन का पता लगा सकते हैं, उसे साधना द्वारा प्राप्त कर सकते हैं, आत्माओं को बुलाकर उनसे बातचीत कर सकते हैं? तन्त्र द्वारा आप अपने परिजन की आत्मा को बुलाकर उनसे दबाए हुए धन के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उपरोक्त सभी बातों का वैज्ञानिक विवेचन इस पुस्तक में किया गया है और यह भी बतलाया गया है कि थोड़ी-सी साधना से आप किस प्रकार इच्छित वस्तु प्राप्त कर सकते हैं? इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में ऐसी अलौकिक, गोपनीय और अद्भुत साधनाओं का वर्णन है, जिन्हें पढ़कर आप चकित रह जायेंगे।

तन्त्र-मन्त्र द्वारा रोग निवारण

लेखक : तान्त्रिक बहल

जिस प्रकार एलोपेथिक, यूनानी, प्राकृतिक होम्योपेथिक इत्यादि पद्धतियाँ हैं उसी प्रकार मंत्रोच्चारण, स्वरविज्ञान और कुछ विशिष्ट आकृतियों के आधार पर भी रोग निवारण की व्यवस्था है। इस विधि के भी अपने सिद्धान्त हैं जिनका उचित प्रयोग करके विभिन्न रोगों से पीड़ित व्यक्ति इस विद्या से लाभ उठा सकता है।

सुप्रसिद्ध तांत्रिक बहल ने इस प्रकार के साहित्य का अध्ययन करके और तरह-तरह के मनस्वियों से भेंट करके जो सामग्री कड़ी मेहनत से एकत्र की वह उन्होंने 'तन्त्र सबके लिए' लक्ष्य के अन्तर्गत बड़े पावन हृदय से प्रस्तुत की है।

मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ

लेखक : तान्त्रिक बहल

तन्त्र क्षेत्र में की जा रही व्यापक खोजों से हम आश्चर्यचकित अवश्य हो जाते हैं लेकिन वह अभूतपूर्व नहीं हैं। ज्योतिषीय और विज्ञान के ज्ञान से आकाश को नापा जाता है तो पदार्थ व तत्त्व की सूक्ष्म अवस्था और प्रकृति के अध्यात्म ने, तन्त्र ने अन्तश्चेतना को जगाकर, साधनाएँ करके अनेकों उपलब्धियाँ पाईं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में लुप्त हो चुकी कुछ ऐसी ही शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाली साधनाएँ खोजकर लाये हैं जाने-माने 'तान्त्रिक बहल'।

आप इस पुस्तक में एकत्रित सामग्री को और लेखक के अनुभव को पढ़कर समझ सकेंगे कि उन्होंने इस विषय में कितने गहरे पैठकर यह सब कुछ पाया है और कितनी लगन से संजोकर आपके लिए प्रस्तुत किया है।

चमत्कारी मन्त्र साधना

लेखक : तान्त्रिक बहल

मन्त्रों का अपना एक अलग विज्ञान है, जिसके सम्पूर्ण रहस्यों को समझ पाना सरल नहीं है। तान्त्रिक बहल ने अपने एक विशेष अनुभव कि मन्त्र न केवल ध्वनि विज्ञान है वरन् उच्चारण के समय होने वाली शारीरिक क्रियाओं से जो लघु व्यायाम होता है, वह भी एक अलौकिक क्रिया है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस पुस्तक की रचना की है। इसके अतिरिक्त अन्य कई चमत्कारी साधनायें भी इस पुस्तक में दी गई हैं। कौआ तन्त्र, मन्त्र तथा उलूक तन्त्र-मन्त्र इस संस्करण की एक विशेष उपलब्धि है।

नाग और नागमणि

लेखक : तान्त्रिक बहल

भारतीय धर्म के अनुसार यह पृथ्वी शेषनाग (सर्प की एक विशेष जाति) पर ही टिकी है। सृष्टि के पालक भगवान् विष्णु सर्प शैय्या पर क्षीर सागर में सोते हैं। सर्प को भगवान् शिव का प्रिय आभूषण माना गया है। सर्प एक देवता के रूप में हमारे धर्म में स्थापित है। नाग पंचमी के रूप में सर्प पूजा का एक उत्सव भी मनाया जाता है। संसार के लगभग सभी धर्मों में सर्प का उल्लेख है। भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक भगवान् महाकालेश्वर का मन्दिर भी है। इस ज्योतिर्लिंग के शीर्ष पर नाग चन्द्रेश्वर का मन्दिर भी है, जो वर्ष में केवल एक दिन खुलता है।

सर्पों की दुनिया चमत्कार से पूर्ण है। तन्त्र में भी इनका एक विशिष्ट स्थान है। सर्पों की रहस्यमय दुनिया पर आज के जाने माने व्यावहारिक तांत्रिक एवं सिद्ध हस्त लेखक तांत्रिक बहल की एक सारगर्भित रचना जो आप सबके लिये है।

वनस्पति तन्त्र

लेखक : तान्त्रिक बहल

वनस्पतियाँ जीवनदायिनी हैं, यदि वनस्पतियाँ न हों तो जीवन भी न होगा। अब यह प्रमाणित है कि वन, पहाड़, नदियाँ, जड़ी-बूटियाँ सब पर्यावरण में समानान्तर सन्तुलन बनाए रखती हैं। प्राणों को सतत सुख प्रदान करने वाली इन वनस्पतियों में कुछ चमत्कारी विचित्र शक्तियाँ भी हैं। **वनस्पति तन्त्र** में इनकी ऊर्जा, उपयोगिता और अद्‌भुत शक्तियों का प्रयोग करके लाभ उठाने के उपाय बतलाए गए हैं।

विचारों को उन्नत बनाने वाली पुस्तकें

- ★ कर्मफल और पुनर्जन्म
- ★ आत्मज्ञान की साधना
- ★ योग साधना और उसके लाभ
- ★ प्रार्थना और उसका प्रभाव
- ★ साधना, ध्यान और जप
- ★ मनन चिन्तन
- ★ भोग से योग की ओर
- ★ वेदों के उपदेश
- ★ उपनिषदों के उपदेश
- ★ रामायण, महाभारत के उपदेश
- ★ पुराणों के उपदेश
- ★ वेदाध्ययन कैसे करें
- ★ संचित धन
- ★ विचार शक्ति
- ★ राजा निर्मोह की कथा
- ★ नदी नाव संजोग (प्रवचन)
- ★ चढ़ती कला (प्रवचन)
- ★ ऋग्वेद सार
- ★ यजुर्वेद सार
- ★ सामवेद सार
- ★ अथर्ववेद सार
- ★ प्रेरक प्रसंग
- ★ दृष्टांत प्रकाश
- ★ दृष्टांत दीपक
- ★ बिखरे मोती
- ★ ११०० रस बिन्दु
- ★ ज्ञान गंगा (सूक्ति संग्रह)
- ★ मृत्यु और परलोक यात्रा
- ★ ज्ञान मार्ग के सोना चांदी
- ★ मन की अद्‌भुत शक्तियाँ
- ★ ध्यान साधना
- ★ सुख की ओर
- ★ कण कण में भगवान
- ★ अध्यात्म, विज्ञान और धर्म
- ★ धर्म का मर्म
- ★ सचित्र पंचतंत्र
- ★ सचित्र हितोपदेश
- ★ विवेकानन्द चरित्र और उपदेश
- ★ जीवन स्वामी रामतीर्थ
- ★ कुण्डलिनी सिद्धि
- ★ अनमोल भजन
- ★ भजन माधुरी

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार